Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

स्मारिका

पश्चिम बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद्

अष्टम वार्षिक सम्मेलन

शनिवार दिनांक : २३-१-९३

स्थान : बिन्नानी भवन कलकत्ता

सम्पादक :

कृष्ण गोपाल सिन्हा

☎ ३०-६२६३
३०-६३६२
७३-०१२६

पश्चिम बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद्

१६३, बलराम दे स्ट्रीट,

कलकत्ता-७०० ००६

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS
CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

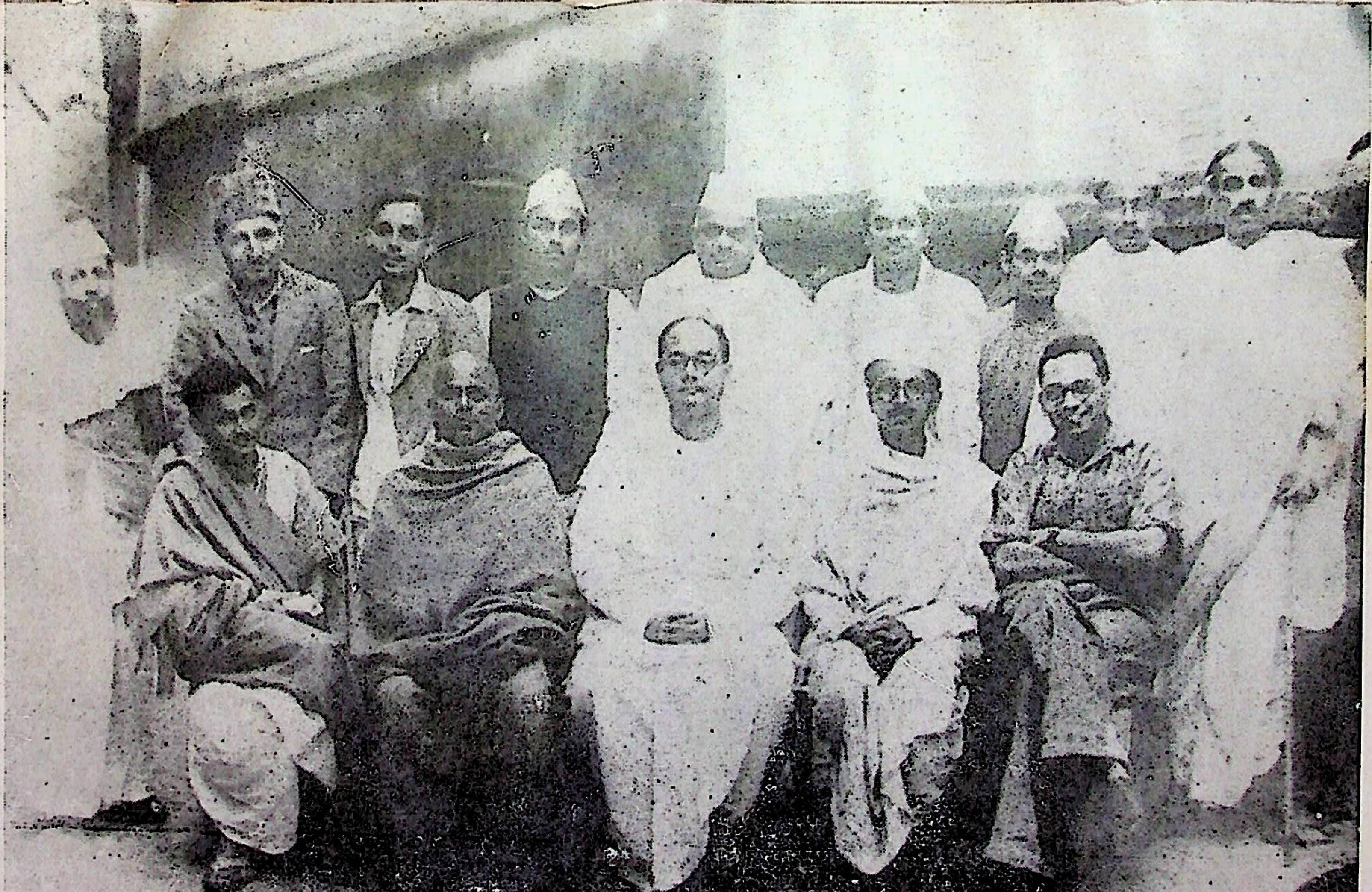

अ० भा० समझौता विरोधी सम्मेलन, रामगढ़ (हजारीबाग), बिहार, २० मार्च, १९४० ई०

बैठे : बायें से दायें (१) किशोरी प्रसन्न सिंह, (२) स्वामी सहजानन्द सरस्वती, (३) देश गौरव सुभाष चन्द्र बोस, (४) प्रोफेसर एन० जी० रंगा, (५) सोफी बाटली वाला।

खड़े : दायें से बायें - (१) हरि विष्णु कामथ, (२) पंडित पद्माकान्त मालवीय, (३) शीलभद्र याज्ञी, (४) श्री अन्न पुनैया, (५) लालाशंकर लाल (६) रामकृष्ण खत्री, (७) सोमनाथ लाहिड़ी, (८) मियां अकबर शाह, (९) अशरफुद्दीन चौधरी।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

RAGHURAJ SINGH & CO. (CONTRACTORS) PVT. LTD.

16, Coal Berth, Calcutta-700 043

TELEPHONE : Office : 49-5741, 49-6091, 49-6092
Resi. : 78-1165, 78-7587

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Garden Fresh

Assambrook CTC Tea

The first thing in the morning, you need
a refreshing cup of tea. Tea that has both
strength and flavour. Assambrook Tea.

Assambrook's Special Garden Packs gives you just that
Finest Assam Tea freshly packed
Straight from our gardens to your
breakfast table.

Strong Fresh CTC Leaf Tea. From Assambrook
There isn't a better way to start your day.

ASSAMBROOK LIMITED

Finest Assam Tea from our Tinkharia & Dhullie Estates

1, SHAKESPEARE SARANI

CALCUTTA-700 071

Phone : (33) 22-7615/16/17 Telex : (021) 4262 'ABL IN'

Fax : (9133) 22-2750 Cable : BROOKSAM

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

with BEST COMPLIMENTS from

A
WELL
WISHER

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शोक-सभा

कलकत्ता में प० बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद की कार्यकारिणी की बैठक ४-४-९२ को श्री हेमन्त कुमार शाही विधायक पुत्र श्री एल. पी. शाही पूर्व केन्द्रीय मंत्री के जघन्य हत्याकांड पर विचार करने व उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु हुई। बैठक में जो प्रस्ताव पारित किया गया उसका संक्षेप वर्णन निम्न प्रकार है—

परिषद यद्यपि कोई राजनैतिक संस्था नहीं है और नहीं किसी राजनैतिक संस्था से सम्बद्ध है तथापि क्योंकि इसके अधिकतर सदस्य बिहार व अन्य पूर्वी भारत के जिलों से आकर बंगाल में जीविका अर्जन कर रहे हैं, उनमें से अधिकांश के परिवार व सम्पत्ति बिहार में है क्योंकि वे अपने परिवार को साथ रखने में किसी न किसी कारणवश असमर्थ है, अतः उन परिवारों व उनकी सम्पत्ति की सुरक्षा का दायित्व सरकार का है। किन्तु जब से श्री लालू प्रसाद यादव की सरकार सत्ता में आई है, उच्च जाति के लोगों को अनेक प्रकार की ज्यादतियों, भेद-भाव व यहाँ तक कि मृत्यु का सामना करना पड़ रहा है और सरकार निष्क्रिय है। जहाँ विधायक की हत्या उसके ही चुनाव क्षेत्र में दिनदहाड़े गोली मारकर कर दी जाय, जहाँ बारा ग्राम जैसा नृशंस हत्याकाण्ड हो जाय व सरकार कुछ न कर सके, जो अपनी प्रजा की जान व माल की रक्षा न कर सके, ऐसी सरकार का अस्तित्व में रहना बेकार है तथा उसे केन्द्र सरकार को बर्खास्त कर देना चाहिये।

प्रस्ताव में यह भी कहा गया है कि बिहार के मुख्यमंत्री व उनके खास-खास लोग I.A.S., I.P.S. & P.C.S. अधिकारियों के तबादले इस प्रकार से कर रहे हैं अथवा करवा रहे हैं जिससे उच्च जाति के लोग सचिवालय में रहें तथा अन्य जिला मुख्यालयों में तथा सब-डिविजनों में रहें ताकि उच्च जाति पर हो रहे अत्याचारों का विरोध रोका जा सके। मुख्यमंत्री ने लोकसेवा आयोग (बिहार) का अध्यक्ष भी अपनी ही जाति का बना दिया ताकि राजपत्रित नियुक्तियाँ उनके मनमाफिक हो सकें।

प्रस्ताव में याद दिलाया गया है कि परिषद ने इससे पहले भी श्री लालूप्रसाद यादव की सरकार के विरुद्ध आवाज उठाई थी जब बारा ग्राम में १२-१-९२ को भूमिहार ब्राह्मणों के सामूहिक हत्याकाण्ड की निन्दा की थी तथा एक ज्ञापन माननीय प्रधानमंत्री को १८-२-९२ को प्रेषित किया गया था।

प्रस्ताव में बिहार की पूर्व गरिमा को याद दिलाते हुये कहा गया है कि यह वह प्रदेश है, जहां महात्मा बुद्ध, भगवान महावीर, आचार्य चाणक्य, सम्राट अशोक व चन्द्रगुप्त जैसे महान, प्रतापी, शान्तिप्रिय व समृद्ध लोग हुये हैं तथा यह प्रदेश सुखी समृद्ध, खुशहाल, न्यायप्रिय माना जाता रहा है। आज श्री लालू प्रसाद यादव के शासन में यह अन्धकारमय हो गया है जहाँ कोई भी अपने को सुरक्षित नहीं समझ रहा है। केवल नाहीं यहाँ कोई व्यवस्था जिसके लिये मुख्यतः सरकार की आवश्यकता होती है।

अतः इस प्रस्ताव द्वारा केन्द्र सरकार से अनुरोध किया गया है कि लालू प्रसाद यादव की सरकार को उसी प्रकार बर्खास्त कर देना चाहिये जिस प्रकार— पंजाब, असम, नागालैंड इत्यादि सरकारों को केन्द्र ने बर्खास्त किया था। जहाँ के हालात भी या तो बिहार जैसे ही थे या उससे कुछ कम खराब थे। ऐसी ही परिस्थितियों से निपटने के लिये विद्वानों ने संविधान में धारा ३५६ का प्राविधान किया है।

—रामनारायण ठाकुर, अध्यक्ष

पश्चिम बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद, कलकत्ता

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शोक-सभा

अखिल भारतीय त्यागी ब्राह्मण सभा, एवं अखिल भारतीय ब्रह्मर्षि महासभा के महामंत्री श्रद्धेय **रघुराज सिंह त्यागी** जी का दिनांक १७-६-६२ को सहसा हृदय गति रुक जाने के कारण स्वर्गवास हो गया। उनके असामयिक देहावसान से समाज को अपूर्णीय क्षति हुई है।

ब्रह्मर्षि परिषद् ने शोक-सभा दिनांक ११-१०-६२ को आयोजित किया जिसमें शोक-प्रस्ताव रखा गया तथा दिवंगत आत्मा की शान्ति एवं समस्त परिवार को इस हृदय विदारक दुःख को सहन करने की भगवान् से शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई और दो मिनट का मौन रखा गया।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

ADDYASHAKTI TRANSPORT ORGANISATION

Head Office :

36, MAHARSHI DEBENDRA ROAD

2nd Floor CALCUTTA-700 006

Phone : 38-5001/30-0242

Branch Office :

"GIRIRAJ BHAWAN" 6, GAZDAR STREET

CHINA BAZAR, BOMBAY-400 002

Phone : 252806

BRANCHES :

ERODE, BHIWANDI, KOMARA, PALAYAM, KARUR, TIRPUR, MADURAI, PALLI, PALAYAM, CHINNI, MALAI, SALEM, ICHALKARANJI

340

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliment of :

BHANDARI SALES CORPORATION

Authorises Dealers For

TATA Diesel Vehicles

Kharagpur Office :

BHANDARI BUILDING

JHAPATAPUR, KHARAGPUR-721 301

Phones : Sales 2523
2561
2392
Service 2306
Spare Parts 2747

Gram : BHANDARI
Fax : 247 7150
Telex : 021 4283

Calcutta Office :

308 VARDAAN

25A, CAMAC STREET, CALCUTTA-700016

Phones : 247 0127/247 2814
Fax : 247 7150 Gram : BRANSALES

DEDICATED TO CUSTOMER SERVICE

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

ADDYASHAKTI TRANSPORT ORGANISATION

Head Office :

36, MAHARSHI DEBENDRA ROAD

2nd Floor CALCUTTA-700 006

Phone : 38-5001/30-0242

Branch Office :

"GIRIRAJ BHAWAN" 6, GAZDAR STREET

CHINA BAZAR, BOMBAY-400 002

Phone : 252806

BRANCHES :

ERODE, BHIWANDI, KOMARA, PALAYAM, KARUR, TIRPUR, MADURAI, PALLI, PALAYAM, CHINNI, MALAI, SALEM, ICHALKARANJI

340

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliment of :

BHANDARI SALES CORPORATION

Authorises Dealers For

TATA Diesel Vehicles

Kharagpur Office :

BHANDARI BUILDING

JHAPATAPUR, KHARAGPUR-721 301

Phones : Sales 2523
2561
2392
Service 2306
Spare Parts 2747

Gram : BHANDARI

Fax : 247 7150

Telex : 021 4283

Calcutta Office :

308 VARDAAN

25A, CAMAC STREET, CALCUTTA-700016

Phones : 247 0127/247 2814

Fax : 247 7150 Gram : BRANSALES

DEDICATED TO CUSTOMER SERVICE

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

दूरभाष : का० : 7562
नि० : 6164 43866

जिला कांग्रेस कमिटी (इ)

तिलक मैदान, मुजफ्फरपुर-842001

रघुनाथ पाण्डेय
स०वि०स०
अध्यक्ष

पत्रांक.................................

दिनांक.................................

प्रिय श्री ठाकुर जी,

पश्चिम बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद् का वार्षिक अधिवेशन दिनांक 20-12-92 को कलकत्ता में आयोजित किया गया है। जैसाकि गिरि जी के द्वारा आपको दूरभाष पर सूचना दी गई कि मैं उक्त अधिवेशन में भाग लेने हेतु कलकत्ता आ रहा हूँ। किन्तु खेद के साथ सूचित करना पड़ रहा है कि बिहार विधान सभा का सत्र प्रारम्भ होने के पूर्व पार्टी कार्यक्रम में अत्यन्त व्यस्त रहने के कारण मैं अधिवेशन में भाग नहीं ले सकूँगा।

परिषद् के इस अधिवेशन में दहेज जैसी ज्वलन्त समस्याओं पर विशेष रूप से विचार-विमर्श किया जायेगा वास्तव में वड़ा ही उत्साहवर्द्धक एवं समयोचित वात होगी। सचमुच आज हमारा समाज इस विकृति से बूरी तरह आक्रान्त है और इसका खामियाज हमारी ललनाओं को भुगतना पड़ रहा है। सामूहिक विवाह को समाज में प्रश्रय मिले तथा इसके उत्तरोत्तर विकास में सभी सम्मिलित हों तो यह वड़ा ही सराहनीय प्रयास होगा।

मेरी मंगल कामना है कि परिषद् अपने इस पुनीत उद्देश्य में सफल हो तथा सारे ब्रह्मर्षि समाज में एक नई चेतना की लहर उठे।

शुभ कामनाओं के साथ।

भवदीय,
रघुनाथ पाण्डेय

सेवा में,
श्री आर० एन० ठाकुर,
अध्यक्ष, पश्चिम बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद्,
कलकत्ता।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

with BEST COMPLIMENTS from

THE GOUREPORE CO. LTD.

MANUFACTURER OF EXPORT QUALITY JUTE PRODUCT

Regd. Office :

4, FAIRLIE PLACE

CALCUTTA-700 001

Phone : 20 9965/66

Factory Office :

P.O. Gorifa

Dist. North 24 Parganas

Phone : Bhat. 2647/2219/2343

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कार्यक्रम की झाँकी

प्रथम-सत्र

समय : ९ बजे प्रातः

अतिथिगण द्वारा स्थान ग्रहण
गायत्री मंत्र का पाठ
मंगलाचरण
अतिथियों को माल्यदान
विशिष्ट ब्रह्मर्षियों के निधन पर शोक प्रकाश
स्वागताध्यक्ष का प्रतिवेदन
स्वागत मंत्री का प्रतिवेदन
अध्यक्ष का प्रतिवेदन
महामंत्री का प्रतिबेदन
युवा मंच के अध्यक्ष एवं महामंत्री का प्रतिवेदन
विशिष्ट वक्ताओं के विचार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best Compliments of

Shyam Industries

11, ROYED STREET

CALCUTTA-700 016

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि

समापति : श्री ललितेश्वर प्रसाद शाही, भू० पू० केन्द्रीय मंत्री

उद्घाटन कर्त्ता : स्वामी बिमलानन्द सरस्वती

प्रधान अतिथि : श्रीमती कृष्णा शाही, राज्य मंत्री, उद्योग, भारत सरकार

मुख्य अतिथि : प्रो० नलनी रंजन सिंह, मंत्री, बिहार सरकार

प्रधान वक्ता : श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा, भूतपूर्व अर्थ राज्य मंत्री, भारत सरकार

स्मारिका विमोचन : श्री कृष्ण कान्त सिंह, भूतपूर्व मन्त्री बिहार सरकार

विशिष्ट अतिथिगण: श्री रामाश्रय प्रसाद सिंह, एम०एल०ए० भूतपूर्व मंत्री बिहार सरकार
श्री सूर्य प्रताप शाही, भूतपूर्व स्वास्थ्य मंत्री उत्तर प्रदेश
श्री बालेश्वर त्यागी, भूतपूर्व गृहमंत्री उत्तर प्रदेश
श्री सुरेश प्रताप सिंह, भूतपूर्व डायरेक्टर जेनरल इनकम टैक्स

विशिष्ट वक्तागण :

श्री चौधरी राजनारायण शर्मा, श्री सुधीर राय, भू० पू० एम० एल० ए०, श्री अनय गोपाल सिन्हा, श्री मनोज सिन्हा, श्री सच्चिदानन्द राय, डा० विजयी सिंह ब्रह्मर्षि परिषद्,पटना, श्री गिरिजा शंकर राय।

धन्यवाद ज्ञापन : श्री राजेन्द्र प्रसाद राय संयुक्त मंत्री

सांस्कृतिक कार्यक्रम :

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

PACKERS & MOVERS

2, Col Biswas Road, Calcutta-700 019

PACKING, REMOVAL SHIPPING STORAGE

Phone : 247-9897/247-2942/40-0274

388

With best compliments from :

Sujai Tea Industries Ltd.

Owner of :

SAROJINI TEA ESTATE

20B, British Indian Street

Calcutta-700 069

We produce for good flavourie CTC

Orthodox and Green Tea

371

With best compliments from :

Phone : 27-2541

KUR & COMPANY

Readymade Garments &

General Order Suppliers

3, Chandney Chawk Market (1st Gate)

Lenin Sarani, Calcutta-700 072

Office Uniform, Hotel Uniform, Security

Guard Uniform Maker

328

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Speech of Chairman Reception Committee

Hon'ble Srimati Krishna Sahi, Union State Minister of Industries, Hon'ble Sri L. P. Sahi, Ex. Minister, Mrs Tarakeshwari Sinha, Mr. Krishna Kant Singh, Sri Ramashrao Pd. Singh, M.L.A., Prof. Nalini Ranjan Singh, Minister, Bihar, Swami Bimala Anand Saraswati.

Ladies, Gentlemen & Children.

As a Chairman of the Committee, it is my proud privilege to welcome you all on the auspicious occasion of the 8th Anniversary of West Bengal Brahmarshi Parishad. This Parishad has been functionining in the State of West Bengal from 1983 and this organisation has been consistently working for the development of the comunity and in this conference we want to deliberate on certain burning problems of the evil of dowry Which has gripped the community and the cases of bride burning. This conference will provide opportunities of like minded people to think of the problems facing by the community, State and the nation and suggest its solution. As you are aware, Bhumihar Brahmin could not be confined within the boundry of caste. The "Bhumihar Brahmin" is a name of culture, civilization and fragnance. This is also my privilege to welcome Tyagi families, who are participating in the Annual conference of Brahmarshi Parishad. In a bid to identify Itself with the Brahmarshis of All India level, the Parishad is trying to coordinate with Tyagis, Mohyals, Galab, Chitpawan and Saraswat.

On behalf of the W.B. Brahmarshi Parishad comittee, I once again extend my heartiest welcome to you all andexpress my strong confidence that you will dedicate yourself for the good of the community and country with greater zeal and enthusiasm.

Thanking you,

—Justice S. K. Hazari
High Court

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments from

"SAUNDRAYA"

EXCLUSIVE SAREES

(NEAR RAM MANDIR)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments from

Ram Lal Chowdhury
&
Shyam Lal Chowdhury

(DEVELOPERS & CONTRACTORS)

75/1, SANATAN MISTRY LANE

SALKIA, HOWRAH-711 106

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वामी विमलानन्द सरस्वती के विचार

उपस्थित सज्जनो,

आप यहाँ ब्राह्मण समाज द्वारा आयोजित एक विशेष समारोह में उपस्थित हुए हैं। ब्राह्मण और ब्राह्मण समाज के सम्बन्ध में आज बहुत भ्रम एवं शंका-सूचक प्रश्न उपस्थित किये जाते हैं, इसके लिए इतिहास के पन्नों को उलटना होगा, अपने अतीत को समझना होगा, अपने पूर्व पुरुषो की गाथा, उनकी रीति-नीति, कर्त्तव्याकर्त्तव्य की जानकारी प्राप्त करनी होगी, तभी हम किसी निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं।

मनुष्य इस धरती का शृंगार है, वह विवेकी और चिन्तनशील है। 'मनसा सिव्ययति' इति मनुष्यः, जो अपनी प्रज्ञा से समाज को जोड़ता है उसे अभ्युदय के मार्ग पर आगे बढ़ाता है वही मनुष्य है।

यह भारत देश कर्मभूमि है। यहाँ द्विज शरीर प्राप्त करके मनीषी और कर्त्तव्यपरायण होना सौभाग्य की बात है। अध्यात्म-रामायण में कहा गया है—

"देहं लब्ध्वा विवेकाढ्यं द्विजत्वं च विशेषतः।
तत्रापि भारतेवर्षे कर्मभूमौ सुदुर्लभम्॥"

विष्णु-पुराण में भी भारतवर्ष में द्विज शरीर धारण करने का भारी महत्व दिया गया है।

"गायन्ति देवाः किल गीत गानि,
धन्यास्तु जे भारतभूमि भागे,
स्वर्गापवर्गास्पद मार्गभूते,
भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वाद्॥"

ऋक्वेद के अन्तिम भाग में ब्राह्मण शब्द पुरोहितों के वंशज के रूप में मिलता है। अथर्ववेद एवं परवर्तीकाल में यह शब्द पुरोहितों के लिए रूढ़ हो गया। ऋक्वेद के पुरुषसूक्त में चतुर्वर्णों के वर्णन में समाजरूपी शरीर को मूर्तिमान करने में इसे शीर्षस्थानीय उत्तम स्वरूप प्रदान किया गया है।

पौराणिक काल में यह चारों वर्णों में श्रेष्ठ वर्ण और विराट पुरुष के मुख से उत्पन्न माना गया है। कर्म, तप, वेदाध्ययन तथा योग में रत रहना इनका धर्म है।

आर्य अपने अति प्राचीन जीवन में यायावर थे, जीविका और उपयुक्त निवास स्थान की खोज में अथवा विषम प्राकृतिक परिस्थिति उत्पन्न होने पर एक स्थान से दूसरे स्थान की ओर चलते रहते थे। उत्तर-पश्चिम मध्य एशिया का येलम प्रदेश और कश्यप सागर (कैस्पियन सागर) का क्षेत्र आर्यों का निवास स्थान था। कालान्तर में भयंकर जलप्लावन की आपदा उपस्थित होने पर उन्हें पूर्व की ओर बढ़ना पड़ा। सहस्त्राब्दियों में वे विभिन्न मार्गों से अपना कदम बढ़ाकर अन्ततः यहाँ आकर भारत में स्थित हो गये। महाभारत काल से पूर्व और उस युग में भारत की सीमा अरब सागर से सुदूर पूर्व में

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कम्बोडिया तक थी। उन्होंने अपनी नयी सभ्यता, नवीन समन्वयात्मक संस्कृति और कर्त्तव्य तथा आचार संहिता का निर्माण किया। यह जीवन संघर्ष था, उनके सम्मुख अस्तित्व रक्षा का विकट प्रश्न उपस्थित था। इसलिए उन्होंने गुण और कर्म की दृष्टि से समाज में वर्गों की सृष्टि की, वर्ण व्यवस्था बनायी, यह जाति व्यवस्था नहीं थी। वर्ण चार ही माने गये हैं। १—ब्राह्मण, २—क्षत्रिय, ३—वैश्य, ४—शूद्र। कौटिल्य ने चारों वर्णों को आर्य माना है। जातिभेद वर्णों का अवान्तर भेद है। जातियां दो प्रकार से बनीं, जन्मना जाति तथा कर्मणा। पूर्व काल में कर्म से ही जाति का बोध होता था कालान्तर में किसी विशेष कार्य करने वालों ने जब अपना वर्ग या समूह बना लिया तब वही जाति की संज्ञा हो गयी। पहली शताब्दी तक जाति का विकृत रूप नहीं था। जातियां विकसित हो रही थीं।

अपने पूर्व जीवन में आर्यों की देव संज्ञा थीं। आर्यों ने समाज के अभ्युदय के लिए जो वर्ग विभाजन किया उससे उनकी दूरदर्शिता का परिचय मिलता है। आत्म-चिन्तन और ज्ञान-विज्ञान के अनुसंधान में लगे सर्वश्रेष्ठ वर्ग को ब्राह्मण संज्ञा दी गयी। दुख और संकट से समाज की रक्षा करने वाला वर्ग क्षत्रिय कहा गया। कृषि और वाणिज्य-व्यवसाय से समाज का पोषण करने वाला वर्ग वैश्य हुआ। चौथा वर्ग रथ-वाहन, अस्त्र-शस्त्रों आदि का निर्माण तथा अपनी विभिन्न क्षमताओं से समाज की सेवा करने वाला शूद्रों का हुआ।

ब्राह्मण समाज के मस्तिष्क थे। शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा देना उनका मुख्य कर्त्तव्य था। विशिष्ट बौद्धिक क्षमता के चिन्तनशील ब्राह्मण आश्रमों की स्थापना करके शिक्षा-दीक्षा का कार्य सम्पन्न करते थे, उनके इस जीवन को लक्ष्य करके ही यह कहा गया कि—

'अग्रतः चतुरो वेदा पृष्ठतः सशरं धनुः
उभयोरपि साफल्यं शास्त्रादपि शरादपि।"

महर्षि वशिष्ठ और संदीपन ऐसे ही आश्रम संचालक मनीषी थे जिनके गुरुकुलों में लोग शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा ग्रहण करते थे। प्रारम्भ में अक्सिनी नदी के तट पर वशिष्ठ ऋषि एक आदर्श आश्रम था। उस आश्रम को गाधि पुत्र विश्वरथ के जलाये जाने पर महर्षि वशिष्ठ ने सतद्रु के तट पर अपने सुन्दर या दिव्य आश्रम की स्थापना की थी। जहां शस्त्र और शास्त्र की शिक्षा दी जाती थी तथा कृषि और अस्त्र शस्त्रादि के निर्माण का प्रशिक्षण का कार्य होता था। उज्जैन में महर्षि संदीपन के ऐसे ही आश्रम में युग पुरुष योगेश्वर श्रीकृष्ण ने भी शिक्षा प्राप्त की थी। आश्रमों के संचालक ब्राह्मण ऋषि राजसत्ताधारी क्षत्रियों के मंत्री परामर्शदाता और सेनापति होते थे। उन्हें न्यायमूर्ति का भी स्थान प्राप्त था। महर्षि मनु के निम्न श्लोक से यह बात सिद्ध होती है—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

"सेनापत्यं च राज्यं च दण्ड नेतृत्व मेव च।
सर्व लोकापधित्य च वेदशास्त्र विदर्हति ॥

महाभारत के युद्ध में हम तीन ब्राह्मण महारथियों द्रोणाचार्य, अश्वत्थामा और कृपाचार्य को युद्धरत देखते हैं। इस समय तक ब्राह्मणों में दो वर्ग हो चुका था। एक वर्ग स्वतन्त्रचेता, स्वाभिमानी और सत्ताधारियों से निरपेक्ष रहने वाला था, दूसरा वर्ग सत्ताधारियों का सर्वात्मना समर्थक और उनकी कृपा पर आश्रित रहने वाला था। महाभारत के शान्तिपर्व के एक सौ निनानवें (१९९वें) अध्याय में राजा इक्ष्वांकु इस वस्तुस्थिति का सुन्दर चित्र मिलता है। किसी तेजस्वी ब्राह्मण तरुण को सभा में उपस्थित देखकर राजा ने उसे बुलाकर कुछ पुरस्कार देना चाहा। ब्राह्मण ने उनकी अनुग्रह की वस्तु लेना स्वीकार नहीं किया, उसने स्पष्ट कहा—

"ब्राह्मणा द्विविधा राजन धर्मश्च द्विविधः स्मृतः।
प्रवृताश्च निवृताश्च निवृतोऽहं प्रतिग्रहात् ॥
तेभ्य प्रयच्छ दानामि ये प्रवृत्तानराधिप
अहं न प्रतिगृहणामि किमिष्टम् किम् ददामिते।
वाल्ये यादि ज्ञानान्मया हस्तः प्रसारितः,
निवृत्तिम् लक्षणम् धर्मसुपासे संधितामजपम्।
निवृत्तम् माम् चिराद्राजन विप्रलोभ यशे कथम्
स्वेन कार्यम् करिष्यामि त्वत्तो नेच्छेफलम् नृप
तपः स्वाध्याय शीलोऽहं निवृत्तश्च प्रति ग्रहात् ॥

अर्थात् हे राजन्! प्रतिग्रहादि लेने में प्रवृत्ति और उससे निवृत्ति, ये दो प्रकार के धर्म ब्राह्मणों के हैं, इसलिए ब्राह्मण भी तदनुसार ही दो प्रकार के होते हैं। एक प्रतिग्रहादि में प्रवृत्त और दूसरे उनसे निवृत्त, उनमें से मुझे प्रतिग्रहादि से निवृत्त जानिये। इसलिए दान उन ब्राह्मणों को दीजिये जो प्रतिग्रहादि में प्रवृत्त हैं। मैं प्रतिग्रह नहीं ले सकता। आपको क्या चाहिये जो दूँ। यदि मैंने सम्भवतः वाल्यकाल में भूलकर हाथ पसार दिये हो (दान लिया हो) तो पसार दिये परन्तु अब वेदों की संहिताओं का पाठ करता हूँ अतः मुझे क्या लालच दिखाते हो?

मैं अपने ही समर्थ से उपार्जित अन्नादि द्वारा शरीर यात्रा करने वाला हूँ, आपसे कुछ नहीं चाहता। मैं तो केवल तपस्या करने और वेदादि पढ़ाने वाला हूँ और प्रतिग्रहादि से निवृत्त हूँ।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि देशकाल और परिस्थिति के अनुसार ब्राह्मण समाज के स्वरूप और कर्तव्य में समय-समय से परिवर्तन होता रहा। कालान्तर में सत्ता, सम्पत्ति और मर्यादा के प्रश्न को लेकर पारस्परिक मतभेद और ईर्ष्या-द्वेष का होना अवश्यम्भावी था। जनश्रुतियाँ इस बात की गवाही देती हैं—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

'ब्राह्मणों ब्राह्मणं दृष्ट्वा श्वानवत् गुर्गुरायते'

'बाभन-कुक्कुर नाऊ। जाति देख गुरनाऊ ।।

ब्राह्मण शब्द की मर्यादा, उसकी तपस्या, उसके संयमित आचरण और मानवतावादी सद्गुणों के लिये है। त्याग, सेवा, करूणा, क्षमा, साहस और धैर्य ये सात्विक ब्राह्मण के गुण हैं। महात्माबुद्ध ने धम्मपद में कहा है –

"यस्य कायेन, वाचा, मनसा नास्ति दुष्कृतम् ।
संवृतम् त्रिभिः स्थानैः तमऽहं ब्रह्ममि ब्राह्मणं ।।

वृहदारण्यकोपनिषद में महर्षि याज्ञवल्क्य ने विदुषी गार्गी से कहा है—

"ओ वा गार्गी एतदुऽक्षरं अविदित्वा,
अस्मात् लोकात् प्रैति स कृपणः।
यो वा गार्गी एतदुऽक्षरं विदिता,
अस्मात् लोकात् प्रैति स ब्राह्मणः।।"

पौराणिक काल से अद्यतन् वर्तमान तक का इतिहास इस बात का साक्षी है कि स्वाभिमानी ब्राह्मणों ने आत्मबल एवं पुरुषार्थ के सहारे प्रत्येक युग में राष्ट्रनिर्माण का रचनात्मक कार्य किया है। पौराणिक काल में महर्षि परशुराम, द्रोणाचार्य, भरद्वाज, वशिष्ठ आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। बुद्ध युग में हिन्सा, शोषण और अनाचार-उत्पीड़न से समाज को मुक्त बनाने वाले तथा विकासोन्मुख बौद्ध संस्कृति के प्रणेता मगध के चिन्तनशील स्वाभिमानी ब्राह्मण ही थे। सारिपुत्र महामौद्गल्यायन और महाकाश्यय बुद्ध के प्रधान शिष्य थे पहले दो तथागत के धर्मसेनापति और महाकाश्यप संघ के अध्यक्ष थे। विलासी मौर्य राजा वृहद्रथ की राष्ट्रविरोधी गतिविधि को देखकर उसके प्रधान सेनापति पुष्यमित्रशुंग ने उसकी हत्या कर राज्यसत्ता अपनी हाथों में ले ली और देश में भीतर घुसने आने वाले विदेशी आक्रामक कुषाण आदि विदेशियों को देश की उत्तरी सीमा गान्धार से बाहर कर दिया। इस प्रसन्नता के उपलक्ष्य में उसने दो बार अश्वमेध यज्ञ किया। फलतः वैदिक धर्म की पताका लहराने लगी और 'यज्ञोवै विष्णु' की उक्ति चरितार्थ और व्यापक हो गयी। पुष्यमित्र और उसके वंशजों ने १४५ वर्ष तक पाटलिपुत्र को राजधानी बनाकर सुदूर दक्षिण प्रदेश आन्ध्र प्रदेश तक तथा उत्तर में मध्य एशिया से ताशकन्द, बुखारा तक शासन किया। पुष्यमित्र के बाद कण्व वंश के ब्राह्मण राजाओं ने ४५ वर्ष तक शासन सत्ता अपने हाथों में रखकर देश में अमन चैन (सुख-शान्ति) कायम रखा। पाटलिपुत्र से अनति दूर स्वर्णभद्र के निकटवर्ती क्षेत्र में चौथी पाँचवीं शताब्दी में सरस्वती के वरदपुत्र महाकवि वाणभट्ट का आविर्भाव हुआ जो संस्कृत के विख्यात मनीषी एवं मगध के स्वाभिमानी ब्राह्मण थे। जिनकी किर्ति से आप सभी परिचित हैं। वाणभट्ट की ही परम्परा में ही उनके वंशज ब्रह्म दत्त एवं कुमारिलभट्ट ने अवतार लिया। ब्रह्मदत्त स्वर्णभद्र क्षेत्र के रहने वाले थे। उनकी बहुत बड़ी जमींदारी थी जो बाणभट्ट की परम्परा से प्राप्त थी। पं० ब्रह्मदत्त के दो सन्तानें थीं एक पुत्र और दूसरी कन्या, पुत्र विश्वविख्यात कुमारिल भट्ट और कन्या भारती देवी थी जिसका विवाह माहिष्मती नगरी के महापंडित मंडन मिश्र से हुआ था।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कुमारिल भट्ट ने पिता के आग्रह करने पर भी विवाह करना स्वीकार नहीं किया और आजीवन ब्रह्मचारी रहकर धर्मकार्य करने का संकल्प ले लिया। वे बहुत बड़े मिमांसक थे। फलत. उनके पिता ने अपनी सारी सम्पत्ति दान कर प्रतिष्ठानपुरम् (प्रयाग) में वैदिक धर्म की शिक्षा के लिए एक बृहद् विश्वविद्यालय की स्थापना की। समय पाकर कुमारिलभट्ट उसके कुलपति हुए। भगवान आदिशंकराचार्य से शास्त्रार्थ में मंडन मिश्र के पराजित हो जाने पर जब उन्होंने संन्यास ले लिया तो उनकी पत्नी भारती इस विश्वविद्यालय में बालिका महाविद्यालय की विदुषी प्राचार्या बनीं। इस महिला विद्या मन्दिर में पालवंश के राजा महिपाल और चालुक्य, राष्ट्रकूट तथा गुर्जर राजाओं की राजकुमारियां भी उच्च शिक्षा प्राप्त करती थीं।

पुनः पश्चिम भारत की ओर ध्यान देने पर आप शाही ब्राह्मण राजाओं के वीरतापूर्ण कार्यों से परिचित होंगे। यूनानी राजा सिकन्दर से लोहा लेनेवाला स्वाभिमानी और वीर ब्राह्मण नरेश पुरुषदत्त महिपाल ब्राह्मण था। मोहयाल सारस्वत ब्राह्मणों की शाखा हैं।

शाही वंश के राजाओं में राजा जयपाल और आनन्दपाल तथा त्रिलोचन पाल तीन पीढ़ी तक इस्लामी आक्रामकों से लड़कर देश की रक्षा करते रहे। पंजाब के मोहयालों का इतिहास अत्यन्त उज्ज्वल है। सातवीं शताब्दी में सिन्ध पर आक्रमण करने वाले मुहम्मद बिन कासिम से लोहा लेनेवाले चच के पुत्र राजा दाहिर स्वाभिमानी महियाल वीर थे। भाई मतिदास बाबा परागा के वंशज थे, वे सिक्खों के नवें गुरु गुरुतेगबहादुर के दीवान थे। बलिदानी वीर भाई मतिदास को पाकर हमारा सिर ऊँचा है जो धर्म की रक्षा के लिए चांदनी चौक दिल्ली में औरंगजेब द्वारा सिर पर आरा रख कर आधे-आध चिरे गये थे। पंजाब के भगत सिंह आदि क्रांतिकारियों के क्रान्ति के उपदेष्टा गुरुभाई परमानंद भाई मतिदास के ही प्रपौत्र थे जिनके बड़े पुत्र भाई बालमुकुन्द को हार्डिंज बमकेश में फांसी की सजा हुई थी।

जब हम दक्षिण पश्चिम महाराष्ट्र की ओर मुड़ते हैं तो वहाँ चितपावन ब्राह्मणों का उज्ज्वल इतिहास हमारे सामने दिखाई पड़ता है। १८७२ ई० में पूना के चापेकर बन्धु-बालकृष्ण चापेकर, दामोदर चापेकर, रामा चापेकर के बलिदान से वर्तमान युग के स्वतंत्रता संग्राम का श्रीगणेश होता हैं। इन लोगों को १८७२ में पूना में बम्बई के गवर्नर की हत्या के षडयन्त्र वाले मुकदमें में फांसी की सजा हुई थी। चितपावन कुलभूषण और हिन्दू सभा के भूतपूर्व अध्यक्ष वीर सावरकर के त्याग-बलिदान और पांडित्य से आज का कौन भारतीय परिचित नहीं होगा। स्वराज्य शब्द के प्रणेता और भाष्यकार लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के पांडित्य और देश सेवा से सभी लोग परिचित हैं। गोपाल कृष्ण गोखले जिन्हें महात्मा गांधी ने अपना राजनीतिक गुरु स्वीकार किया है चितपावन कुल के ही अनूठे रत्न थे। इस युग के महान् संत महर्षिवर आचार्य विनोबा भावे चितपावन कुल के अमर पुत्र हो गये हैं जिन्होंने संकट काल में देश सेवकों को एक नयी दिशा दी, एक नया दर्शन दिया।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

आपके निकटवर्ती बिहार राज्य के उन्नायक महामान्य लंगट सिंह जिन्होंने समाज के अभ्युदय का अभूतपूर्व कार्य किया उन्हें कौन नहीं जानता। बिहार केशरी डा० श्रीकृष्ण सिंह माननीय रामदयालू सिंह आदि महापुरुष ब्रह्मर्षि वंश के ही सपूत थे। पूर्वी उत्तर प्रदेश के महान देश सेवक एवं स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं में अलगूराय शास्त्री और डा० रघुनाथ सिंह के नाम चिरस्मरणीय रहेंगे जिनकी निस्पृह सेवा एवं त्याग बलिदान से आज के युवकों को भावी प्रेरणा मिलेगी।

वर्तमान में महर्षि प्रवर जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती इन सभी रत्नों में विशिष्ट कौश्तुभ मणि की तरह थे। वे महान् स्वातंत्र योद्धा और वैदिक साहित्य के अलौकिक महापंडित थे।

ऊपर अतीत और वर्तमान इतिहास का एक सामान्य चित्र आपके सम्मुख उपस्थित किया गया, अब आज के कुछ ज्वलन्त प्रश्नों पर अपना विचार व्यक्त करते हुए मैं अपने कथन को विश्राम दूँगा।

देश के विभिन्न भागों में अप्रतिग्रही ब्राह्मणों की विभिन्न संस्थायें विभिन्न क्षेत्रों में एक लम्बी अवधि से कार्य करती आ रही हैं। काल के प्रभाव से आज उनका स्वरूप बहुत स्थानों में धूमिल और प्रपंच पूर्ण हो गया है। भूमिहार-ब्राह्मण सभा बिहार और उत्तर-प्रदेश में बहुत पहले से कार्यरत थी। उत्तर-प्रदेश के पश्चिमी क्षेत्र में त्यागी महासभा समाज कल्याण के कार्यों में लगी रही। पंजाब में मोहयाल-ब्राह्मण अपने पौरुष और वीरतापूर्ण कार्यों से सदा समाज को आगे बढ़ाते रहे। किन्तु इधर राजनीतिक प्रभाव से अनुप्राणित इन सामाजिक संस्थाओं का कुछ ऐसा स्वरूप हो गया है जो समाज-सेवा के अपने गुरुतर कार्य को भली-भाँति सम्पादित न करके सत्ता और अर्थलोभ की होड़ में अपने कर्त्तव्य पथ से विमुख हो रही हैं। हम विशुद्ध ब्राह्मण हैं। देश के विभिन्न क्षेत्रों में हमारे गौरवपूर्ण योगदान का एक इतिहास है।

अतः दिक्भ्रमित होकर भटकना उचित नहीं है। आज से २६ वर्ष पूर्व अयोध्या में आनन्द भवन मठ के एक मामले को लेकर ब्राह्मण और ब्राह्मण का जटिल प्रश्न उठ खड़ा हुआ था। उस समय जब यह प्रश्न मेरे सामने आया तो मैंने उस आपात स्थिति में ४ सितम्बर १९६६ को समाज के लोगों का राजगुरु मठ वाराणसी में विशेष आह्वान किया और वहाँ तात्कालिक आवश्यकता के लिए ब्रह्मर्षि-परिषद् नामक एक काम चलाऊँ संस्था का गठन किया गया। बारह वर्ष वह मुकदमा चलता रहा और अन्त में महन्थ महावीर शरणदास जो मठ के महन्त थे और पूर्वाश्रय में मुंगेर के भूमिहार ब्राह्मण थे, न्यायालय द्वारा ब्राह्मण माने गये और विजयी हुए। मैथिल, कान्यकुब्ज, सरयूपारी, गौड़ ये सभी ब्राह्मण वैवाहिक सम्बन्ध आदि से भी भूमिहार-ब्राह्मणों से जुड़े हुए हैं। इस सन्दर्भ में मुझे स्पष्ट कहना है कि "ब्रह्मर्षि" और 'भूमेश्वर' शब्द प्रतिष्ठा या मर्यादा सूचक हैं। इनसे किसी जाति विशेष का

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

बोध नहीं होता। ब्राह्मणों में जो ऋषि हैं वो ही ब्रह्मर्षि कहलाने के अधिकारी है। सभी ब्राह्मण ब्रह्मर्षि नहीं हो सकते। उसी प्रकार भूमेश्वर शब्द भी है। भूमेश्वर शब्द का अर्थ भू-स्वामी या जमींदार है। इसलिए सामाजिक कार्य करने वाले मनस्वी और विचारशील लोगों को उचित है कि संस्था का नाम ब्राह्मणोचित रखें। संस्था ब्राह्मण परिषद्, ब्राह्मण-सभा, ब्राह्मण-समाज के नाम से गठित की जा सकती है।

यह समाज देश में सर्वव्यापक है। इसके सदस्य विभिन्न राजनीतिक दलों में भाग लेते और कार्य करते हैं। अतः किसी राजनीतिक उद्देश्य से प्रेरित इसके सदस्य अपने मुख्य पथ से विचलित न हों। राजनीतिक लाभ के लिए नेता लोग जाति-पाँति का सहारा लेते हैं लेकिन जाति पर सामाजिक और सांस्कृतिक संकट आने पर वे अपना पैंतरा बदलने लगते हैं। अपने अनुभव के अनुसार मेरा अनुरोध है कि आप समाज के अभ्युदय के लिए रचनात्मक कार्य करें। पत्र-पत्रिका, पुस्तकों का प्रकाशन और शिक्षा-दीक्षा के लिए उचित प्रोत्साहन देकर छात्रों को आगे बढ़ाने का कार्य करें। इससे समाज की सच्ची सेवा होगी और यही विराट समाज भगवान की पूजा अराधना है।

—दण्डी स्वामी विमलानन्द सरस्वती

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

प्रचारमन्त्री का निवेदन

मैं प० बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद के प्रचार मन्त्री होने के नाते चाहता हूँ कि इस संस्था के द्वारा सारे भारतवर्ष के भूमिहार ब्राह्मण एक सूत्र में बांध जायें। और हमें समाज में फैली हुयी दहेज कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करें। इस संस्था को इस देश में नहीं बल्कि विश्वस्तर पर फैला दें। अतः हमारे समाज के सभी लोगों से अनुरोध है कि आपलोग सामुहिक रूप में इसके विकास के कार्य में लग जायें। हम एक-दूसरे के सहायक हो जायें।

इस समाज का एक भवन होना भी जरूरी है। इसके न होने से संस्था का पूरी तरह से विकास नहीं हो सकता। मैं यह भी चाहता हूँ कि हमारे समाज के धनी वर्ग लोग अपने से समाज के कमजोर लोगों की सहायता करें। मैं यह भी चाहता हूँ अधिक से अधिक साधारण सदस्य और आजीवन सदस्य बनें। तभी इस संस्था का विकास संभव है।

आपका :

—कामता प्रसाद सिंह

प्रचारमन्त्री

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परिषद् के अध्यक्ष का प्रतिवेदन

आदरणीय महानुभाव एवं सभा में उपस्थित भाइयो एवं बहनो,

सर्वप्रथम मैं परिषद् की ओर से मंच पर उपस्थित आदरणीय अतिथियों एवं सभा में उपस्थित भाई-बहनों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। इसी बिनानी भवन के इस सभागार में हमने अपना सप्तम वार्षिकोत्सव २२ दिसम्बर १९९१ में मनाया था, पुनः हम एक अन्तराल के बाद वार्षिकोत्सव मनाने के लिए समवेत हुए हैं।

आपकी उपस्थिति हमें इतना उत्साहित करती है कि हम अति उत्साह में आपके सामने कुछ अधिक वादे कर देते हैं, पर उसे पूरा न कर पाने के कारण आपके सामने कुछ कहने में संकोच का अनुभव करते हैं। फिर भी हमलोगों ने अपने उद्देश्यों रूपी महल में कुछ ईंटे अवश्य जोड़ी हैं, आशा है निकट भविष्य में हमारा सपना साकार होगा। वैसे जो कुछ भी हम कर पाये हैं—उसका आकलन आप ही कर सकते हैं।

विगत वर्ष की स्मारिक मात्र एक विज्ञापन पुस्तिका नहीं थी, उसमें भूमिहार ब्राह्मण तथा त्यागी परिवार की ऐतिहासिक विभूतियों का पूर्ण विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया था—इस कार्य में आप सभी का सहयोग भी हमें मिला। गत वर्ष हमने निर्देशिका की एक रूप रेखा प्रस्तुत की थी, उसका संशोधित रूप इस वर्ष प्रकाशित कर आपके हाथों में देने का हमारा विचार था, पर समयाभाव के कारण हम अपने इस प्रयास में इस वर्ष सफल नहीं हुए, पर आनेवाले वर्ष में हम निर्देशिका का प्रकाशन करेंगे और इस सम्बन्ध में आपसे अपेक्षित सहयोग चाहेंगे।

परिषद् की कार्यकारिणी ने एक सपना संजोया था अपने एक भवन या फ्लैट का पर १९९२ का वर्ष हमारे लिए अच्छा नहीं कहा जायगा क्योंकि बारा में आपके ३४ भाइयों की नृशंस हत्या १२-१-९२ की रात्रि को कर दी गई। यह हत्या इतनी क्रूरता पूर्वक थी कि इसकी मिशाल इतिहास में कम जगहों पर मिलेगी। परिषद् की ओर से प्रेस कान्फ्रेंस का आयोजन किया गया एवं नर संहार से प्रभावित परिवारों के लिए परिषद् परिवार के सदस्यों से सहायता की मांग की गयी। परिषद् की तरफ से एक शिष्ट मण्डल बारा गांव में श्री रामाश्रय प्रसाद सिंह के साथ २१-१-९२ को गया। परिषद के इस शिष्ट मंडल में मेरे अतिरिक्त श्री रमाकान्त राय श्री शैलनाथ राय गये। हम लोगों ने वहाँ के लोगों के प्रति सवेदना प्रकट किया एवं ३४ विधवाओं के नाम से ४-४ हजार रुपया बारा के बैंक में जमा कर दिया। नर हत्या-काण्ड के दोषी लोगों के विरुद्ध कार्यवायी के लिए राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री को परिषद की तरफ से पत्र लिखा गया तथा ब्रह्मर्षि वंश से सम्बंधित देश भर की अन्य संस्थाओं से आग्रह किया गया कि वे सभी केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों को प्रतिवेदन भेजें।

हमारे मर्माहत मन को दूसरा धक्का लगा श्री हेमन्त कुमार शाही की हत्या से। परिषद् ने अपनी आपात बैठक में इस जघन्य काण्ड का प्रतिवाद किया और राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री तथा राज्यपाल एवं केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के सदस्यों को ज्ञापन दिया।

ऊपर की दो दुर्घटनाओं ने हमें मर्माहत किया है फिर भी हम अपने लक्ष्य से अलग नहीं हुए हैं और आप को यह आशा दिलाते हैं कि ब्रह्मर्षि परिवार के उत्थान के लिए, विकास के लिए प्रयास करते रहेंगे और इसी प्रकार भविष्य में आप से आशीष पाते रहेंगे।

धन्यवाद—

रामनारायण ठाकुर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best Compliments of

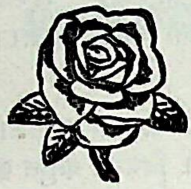

Always aiming higher-dedicated as we are to excellence. For us Quality is a way of life...............and trust.................a tradition

To have

Rot Proofing Agent For Jute

Jute preservatives & Textile Auxiliaries

CONTACT :

RUBY ORGANICS

Exporters, Importers, Indentors, Manufacturers, Consultants

Registered Office :

53/D, HARISH MUKHERJEE ROAD

(Ground floor)

CALCUTTA-700 025

Phone : 48-4427

Administrative Office :

35, DENT MISSION ROAD

CALCUTTA-700 023

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परिषद् के अध्यक्ष श्री राम नारायण ठाकुर अपना प्रतिवेदन दे रहे हैं।

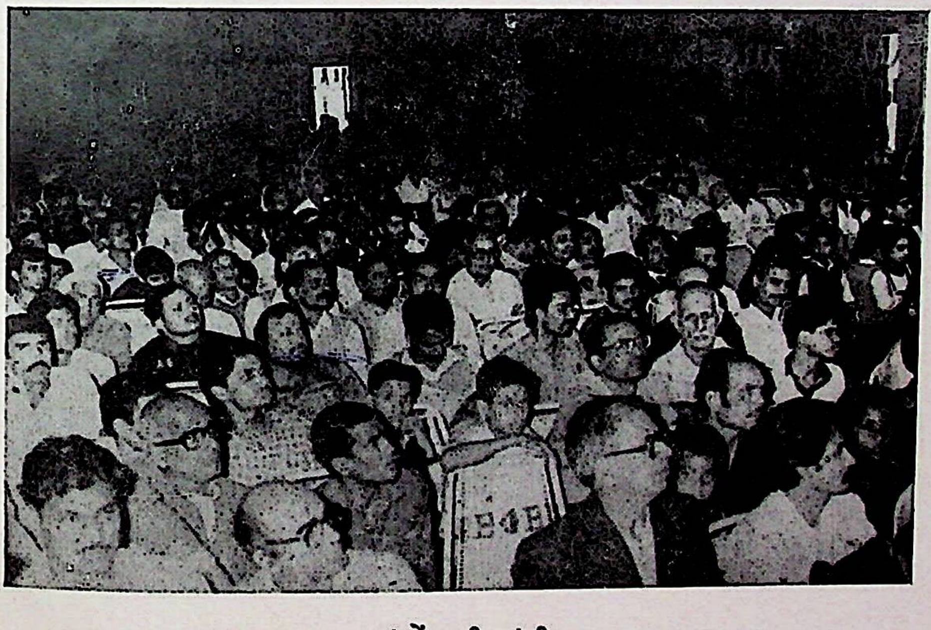

कांफ्रेंस की झांकी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अधिवेशन के समय मंच की झांकी

मंच पर उपस्थित अतिथियों का दृश्य

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परिषद् के महामंत्री का प्रतिवेदन

आदरणीय मेरे भाइयो एवं बहनो,

मैं परिषद् की तरफ से आप उपस्थित महानुभावों का स्वागत करता हूँ और पुनः आपने जो अपना अमूल्य समय निकाल कर अपने परिवार के इस जलसे में चार चाँद लगाया है, हमें उत्साहित किया है, हमें कुछ करने का सम्बल दिया है, हमारी गलतियों और कमियों को भुलाकर आप उपस्थित हुए हैं, इसके लिए कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ। विगत कुछ वर्षों से हम अपने परिवार का वार्षिकोत्सव मनाते आए हैं, आपको इसमें निमन्त्रित करते हैं आपके सम्मुख कुछ करने का वादा करते हैं, उसमें कुछ पर अमल कर पाते हैं, लेकिन कुछ पर आपके सामने बोलने में कुछ संकोच का अनुभव करते हैं।

१९९२ का वर्ष हमारे लिए बड़े ही कष्ट का, दुःख का वर्ष रहा है। इस वर्ष कुछ मानवीय, कुछ ईश्वरीय आपदाओं ने हमें इतना अधिक मर्माहत किया है, पीड़ित किया है जिसका बयान नहीं किया जा सकता। १२-१-९२ की रात्रि में हजारों लोगों की क्रूर भीड़ ने हमारे अपने परिवार के ३४ लोगों को गला रेत कर मार डाला। इस जघन्य काण्ड को देखकर नृशंसता भी लज्जित है। यह हमारी हत्या थी, हमारे भाइयों की हत्या थी, यहाँ जो जन समूह है उनके परिवार की हत्या थी। भूगोल की दृष्टि से तो हम उस हत्या काण्ड से बहुत दूर हैं, पर हमारा और उनका खून एक है अतः हम लोगों से इस दुःख की वेला में जो कुछ भी हो सका, हमने किया। परिषद् के सदस्यों ने आर्थिक सहयोग दिया और परिषद् अध्यक्ष के साथ कुछ लोग बारा गये एवं पत्र-पुष्प जो भी हमारे पास था, हमलोगों ने उससे उनके आंसू पोंछने का प्रयास किया।

अभी हम एक दर्द से हलके भी नहीं हुए थे कि हमारे ऊपर दूसरा बज्रपात हुआ। हमारे भाई हेमन्त कुमार शाही, जो एक उभरते हुए प्रकाश पुंज थे, ब्रह्मर्षि समाज को उनके ऊपर गर्व है, और हम बिहार की राजनीति में उनकी उपस्थिति से गौरवान्वित होने की सोचते थे, की एकाएक उनकी हत्या कर दी गयी। हमारे ऊपर यह दूसरा असहनीय आघात था। हमारी परिषद् राजनीतिक संस्थाओं से सम्बन्धित नहीं है, फिर भी यह हमारे समाज के ऊपर, जाति के ऊपर आक्रमण था अत. पुनः परिषद् की ओर से कुछ लोग मुज्जफर पुर गये और हमने अपनी बहन बीना शाही को सम्बल दिया, उनके आंसुओं को पोंछा। भगवान उन्हें हिम्मत दें।

नलिनी बाबू भी मंच पर उपस्थित हैं, इसे ईश्वर की कृपा ही मानिए। पेरिस में हुई कार दुर्घटना का समाचार पढ़कर हम मर्माहत हो गये। नलिनी बाबू ने कार दुर्घटना में हुई क्षति को कैसे झेला है, यह इन जैसे साहसी पुरुष के ही बस की बात है। भगवान इन्हें साहस दें।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

Chowgule Brothers

STEAMSHIP AGENTS BROKERS

75C, PARK STREET (2nd Floor)

CALCUTTA-700 016

Cable : CHOWSHIP Telex : 021-5705/5706 CHBR IN

Phone : 29-9218/29-3986

363

With best compliments from :

SUSHIL KUMAR KANKANI

141, COTTON STREET

CALCUTTA-700 007

281

With best compliments of :

THE INDUSTRIAL GASES LIMITED

15, GANESH CHANDRA AVENUE

P. B. No. 8874

CALCUTTA-700 013

BRANCHES & AGENTS

ALL OVER COUNTRY

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भाइयो इतिहास उनको क्षमा नहीं करता जो अपने इतिहास को भूल जाते हैं। दुख है कि आप यह भूलते जा रहे हैं कि आप उस महान पुरु के वंशज हैं जिसने सिकन्दर का प्रतिरोध किया था, आप उस हेमू की संतान हैं जिसने अकबर का विरोध किया था, आप उन चापेकर एवं सावरकर बन्धुओं के खून के हैं, आप अपने त्याग के कारण त्यागी कहलाये, पर दुःख का विषय है, विचारणीय विषय है कि आप अपनी गौरवशाली परम्परा से दूर हट कर दहेज, अशिक्षा, फूट, चाटुकारिता के दलदल में फँसते जा रहे हैं। आपको इनसे छुटकारा पाना होगा और अपने गौरवमय इतिहास के पन्नों में अपना स्थान बनाना होगा।

क्यों न हम आज इस बंगभूमि की पावन धरती से, जिस धरती से बंगाल के महापुरुषों—ईश्वरचन्द्र विद्यासागर एवं राममोहन राय ने सती प्रथा एवं विधवा-विवाह से राष्ट्र को छुटकारा दिलाने का प्रया किया, यह संकल्प लें कि हम दहेज रूपी तथा ऐसा ही तमाम घृणास्पद बुराइयों से अपने समाज एवं राष्ट्र को मुक्त करें।

अंत में पुनः मैं आपके सहयोग के लिए आपको धन्यवाद देता हूँ और आपके आशीषों की कामना करता हूँ।

कृष्ण गोपाल सिन्हा
महामंत्री
प० बंग ब्रह्मर्षि परिषद्

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

JAMECO AGENCIES (P) LTD.

8, Church Lane, Calcutta-700 001

364

With best compliments of :

M/s. FLOOR 'N' FURNISHING

5/1, RUSSEL STREET

CALCUTTA-700 071

Phone : 22-3786

324

With best compliments from :

Jadubansh Rai Kashi Prasad

12, Noormal Lohia Lane

Calcutta-700 007

Branch :

U. P. Khadi Bhandar

552, G. T. Road (S) Howrah

Phone : 67-3316

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

परिषद् के महामंत्री श्री कृष्ण गोपाल सिन्हा अपना प्रतिवेदन दे रहे हैं।

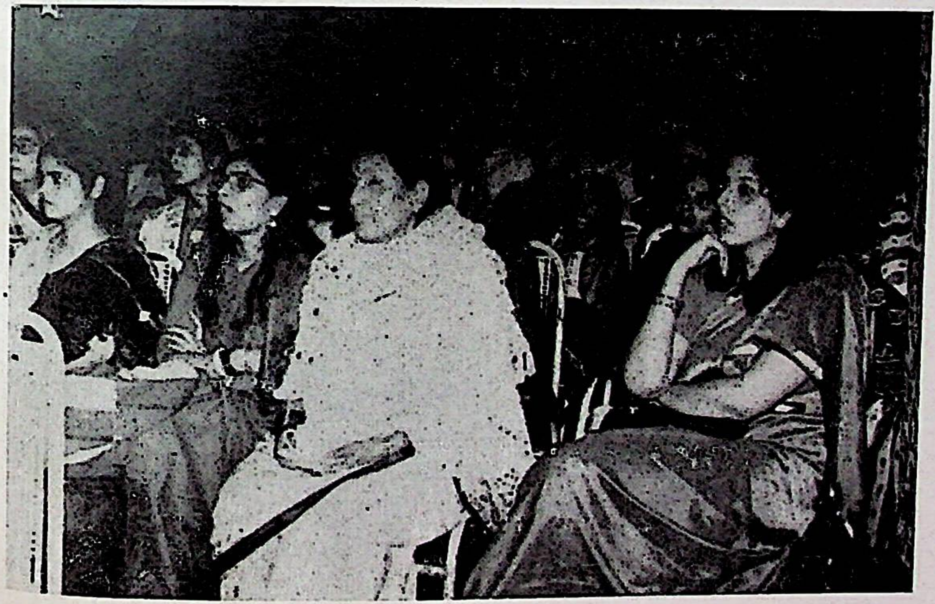

कांफ्रेंस में महिलाएँ

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

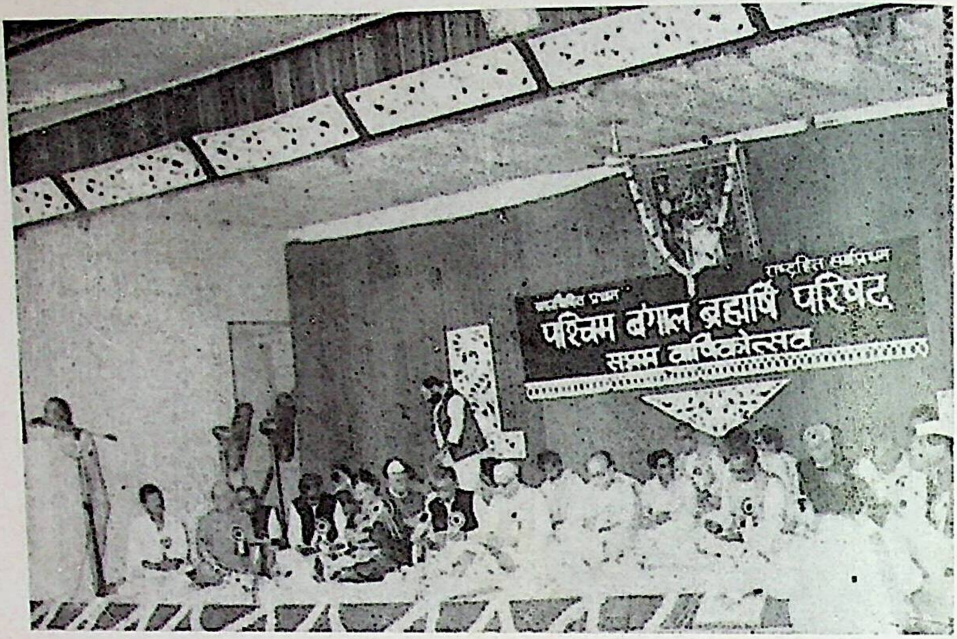

मंच की झांकी

बाँये से श्री राम नारायण ठाकुर, जनकदेव शर्मा, रामाश्रय प्र० सिंह, एम०एल०ए० श्रीमती गिरीजा देवी, सांसद सर्वश्री भुवनेश्वर चौधरी, प्रो० नलनी रंजन सिंह, मंत्री विहार सरकार, अनय गोपाल सिन्हा, एल० पी० शाही, जस्टिस एफ० के० हजारी— पीछे खड़े श्री राजेन्द्र राय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

with BEST COMPLIMENTS from

AJANTA HOUSING PROJECT LTD.

545, G. T. ROAD (S)

HOWRAH

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best Compliments of

SUBHASH CHANDRA BALASARIA

51, Dobson Road

Howrah-711101

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सम्पादकीय

पश्चिम बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद् का वार्षिकोत्सव परंपरागत ढ़ंग से विगत कई वर्षों से आयोजित किया जा रहा है। यह अष्टम वार्षिक सम्मेलन उसी परंपरा की एक कड़ी है। इस अवसर पर प्रकाशित स्मारिका एक महत्वपूर्ण दस्तावेज होती है। इसमें संकलित निबंधों से ब्रह्मर्षि बंशज के गौरवमय इतिहास की स्पष्ट झलक तो मिलती ही है, इस बंश के उन महानपुरूषों के विचार, कार्य तथा लोक-कल्याण की भावना भी मूर्तवत स्मृतिपटल पर अंकित हो जाती है, जिन्होंने अपने समाज के साथ-साथ सम्पूर्ण राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। इस सन्दर्भ में यह अप्रासंगिक नहीं होगा कि आज भी उनके विचार यदि सुनियोजित ढ़ंग से प्रसारित एवं प्रचारित किए जायँ तो वे वर्तमान तथा भावी पीढ़ी की समुन्नति के लिए सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

इसके अतिरिक्त इस अवसर पर आमन्त्रित विशिष्ट व्यक्तियों द्वारा समाज की विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु रखे गये विचार भी अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं।

जहाँ तक परंपराओं के पालन का प्रश्न है, तो इस सम्बन्ध में निःसन्देह कहा जा सकता है, कि उनका अनुपालन सदैव श्लाघनीय नहीं होता है। जब कोई परंपरा या रीति किसी कारणवश निन्दा का विषय बन जाती है तो वह कुरीति कहलाने लगती है और उससे मुक्त होने का मार्ग ढूँढ़ना अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होने लगता है। आज हमारे समाज में कतिपय ऐसी कुरीतियाँ विद्यमान हैं जिनका उन्मूलन आवश्यक है। इनमें नशाखोरी, व्यक्तिगत अहम् भावना की अतिशयता और दहेज विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। समाज का हर व्यक्ति इन कुरीतियों से भलिभाँति अवगत है। नशाखोरी की प्रवृत्ति इस तरह बढ़ रही है कि यदि इस पर अंकुश न लगाया गया तो कालांतर में इसका परिणाम बड़ा ही भयंकर साबित होगा। युवा पीढ़ी का इस प्रवृत्ति के शिकार होने का प्रश्न तो अति विचारणीय है। इसके अनेक कारणों में बेकारी निश्चित ही एक महत्वपूर्ण कारण हो सकती है। इस सम्बन्ध में यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि बेकारी वह अभिशाप है जो अनेक दुर्व्यसनों तथा विविध अपराध मूलक क्रियाओं को जन्म देती है। इसलिए आवश्यक है कि इससे निपटने के उपायों पर विचार करके इन्हें क्रियान्वित किया जाय।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments of

RAJESH SHIPPING & CLEARING AGENCY

With best compliments from :

STEEL UNION

40 Strand Road

Calcutta-700 001

With best compliments of :

KWALITY UMBRELLA MANUFACTURING CO.

167, MAHATMA GANDHI ROAD

CALCUTTA-700 009

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अतीत काल में दहेज से जहाँ व्यक्ति की उसके वर्ग में प्रतिष्ठा का मानदण्ड निर्धारित किया जाता था, वही आज कलंक बन चुका है। यद्यपि हर वर्ग इससे पीड़ित है, फिर भी इसके उन्मूलन या किसी सर्वमान्य मापदण्ड के निर्धारण का प्रयास नहीं किया जा रहा है। यह एक विचारणीय प्रश्न है।

सच है कि स्वाभिमान की रक्षा करना हर प्राणी का कर्त्तव्य एवं धर्म है। पर, यहाँ ध्यान देने योग्य बात यह है कि स्वाभिमान कभी भी अहम् भावना का रूप लेकर आपसी संबंधों में न तो कड़वाहट पैदा करे और न ही किसी की पराजय या असफलता का कारण बने।

ब्रह्मर्षिवंशज अपने समाज के उत्थान के लिए कोई ठोस योजना बनावें और उसके क्रियान्वन के लिए कालबद्ध कार्यक्रम निर्धारित करें। योजनाएँ ऐसी हों जिनमें हर वर्ग · छात्र, बेरोजगार युवक, व्यवसायी, नौकरी पेशावाले, साधनहीन असाध्य रोगी अभावग्रस्त व्यक्ति की समस्याओं के समाधान के लिए कुछ न कुछ प्रावधान हो।

ब्रह्मर्षिवंशज के समक्ष ये महत्वपूर्ण समस्याएँ हैं। इन समस्याओं पर यहाँ उपस्थित सामान्यतः हर सदस्य तथा विशेषतः आमन्त्रित विशिष्ट अतिथियों को विचार करना है।

अंत में, यह कहना आवश्यक है कि हमें केवल ब्रह्मर्षियों के भारतीय राजनीति तथा सामाजिक उत्थान में दिए गए योगदान को ही स्मरण नहीं करना है, वल्कि इस पर भी विचार करना है कि वर्तमान में इस समाज के लोग इन क्षेत्रों में किस प्रकार महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर अपने महिमा मण्डित इतिहास को अक्षुण्ण रख सकते हैं।

—कैलाशनाथ राय

हावड़ा शिक्षा निकेतन
हावड़ा-७११९०१
दिनांक १८-१-१९९३

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

Phone : 60-1945/60-2821/60-2822

RAY CARRYING CORPORATION

FLEET OWNER & TRANSPORT CONTRACTORS

10/4, B. P. LANE, SHIBPUR

SHALIMAR, HOWRAH-2

394

With best compliments from :

Phone : 39-3197

SUPRASIDH PANDEJI DUDHWALLEY

Office : 45B, BANARASHI GHOSH STREET

CALCUTTA-700 007

BRANCH :

JORASANKO MILK MARKET
370, UPPER CHITPUR ROAD
CALCUTTA-700 007

55, BURTOLLA STREET
CALCUTTA-700 007

345

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

WITH BEST COMPLIMENTS OF

A. R. SHIPPING CO.

15, PADDOPUKUR EAST LANE

KHIDDERPORE, CALCUTTA-700 023

304

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments from

KESARIA TEA CO.

2, Lal Bazar Street

Calcutta-700 001

342

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

युवा मंच के अध्यक्ष का प्रतिवेदन

सर्व प्रथम मैं आभारी हूँ ब्रह्मर्षि परिषद् के अध्यक्ष, महामंत्री एवं परिषद के अन्य सदस्यों का जिन्होंने मुझे ब्रह्मर्षि परिषद् के आठवें वार्षिक सम्मेलन का युवा मंच के अध्यक्ष का सम्मानित व पवित्र एवं अत्यन्त ही उत्तरदायित्व पूर्ण पद सौंपकर मेरे प्रति अपना स्नेह व आदर प्रकट किया है। साथ ही यहाँ उपस्थित सभी ब्रह्मर्षियों तथा अतिथि वृन्दों का युवामंच की तरफ से हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

आज देश की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुये मैं सभी ब्रह्मर्षियों से कहना चाहूँगा कि ब्रह्मर्षि कभी बलशाली नहीं बन सकेगा, दूसरों को पराजित करने वाला कभी नहीं बन सकेगा और हम कभी भी राजनीतिक शक्ति नहीं बन सकेगें यदि हमारे नौजवान ब्रह्मर्षि आगे नहीं आते हैं? इसलिये मैं कहना चाहूंगा कि—

"हे ब्रह्मर्षि
उठो जागो
और तबतक
रूको नहीं जबतक
लक्ष्य प्राप्त न हो जाय।"

इसे कहने की आवश्यकता नहीं कि जब-२ देश का नौजवान जागा है तब-२ इतिहास ने करवट बदली है। अत: मैं फिर अपनी कविता के माध्यम से ब्रह्मर्षि युवकों को आगे आकर अपने लक्ष्य की प्राप्ति में लग जाने को कह रहा हूँ :—

आंधी क्या है, तुफान मिले, चाहे जितने व्यवधान मिले,
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ना ही अपना काम है॥
वह देखो पास खड़ी मंजिल, इंगित से हमें बुलाती है,
साहस से बढ़ने वालों के, माथे पर तिलक लगाती है,
साधना न व्यर्थ कभी जाती, चलकर ही मंजिल मिल पाती
फिर क्या बदली क्या घाम है, बढ़ना ही अपना काम है।

ब्रह्मर्षि युवामंच के अध्यक्ष का उत्तरदायित्व लेते हुये आपको विश्वास दिलाना चाहूँगा, यदि समय के साथ बुजुर्गों के मार्ग-दर्शन होते रहे और नौजवानों का सहयोग मिलता रहा तो निश्चित रूप से मैं भूत और भविष्यत को एक करने की कोशिश करूँगा।

अंत में मैं युवा मंच की तरफ से आप सभी ब्रह्मर्षियों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए आपसे भविष्य में सहयोग की कामना करता हूँ।

आपका

सुनील कुमार

अध्यक्ष—युवामंच

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

SECURITY CONSULTANTS & DEVELOPMENT SERVICE

18, Heysham Road, Calcutta-700 020

PHONE : 75-1524/8868/8886

CABLE : SPOTLIGHT

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

युवा-मंच महामंत्री का प्रतिवेदन

आदरणीय अध्यक्ष महोदय एवं समवेत सज्जनो –

महर्षियों की इस पावन भाव भूमि पर मैं युवा मंच की तरफ से आप सभी ब्रह्मर्षियों का हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ। यह उत्सव जहाँ एक ओर आपसी मेल-जोल की प्रेरणा देता है, वहाँ दूसरी ओर समाज हित में कार्य करने की भावना को जागृत करता है। अकर्मण्यता और असफलता रूपी अन्धकार को चीरते हुए प्रकाशपुंज के उस घेरे में हम सब पहुँच जाते हैं, जहाँ हम एक दूसरे को पहचान सकें, आत्मसात् कर सकें। किसी यूनानी दार्शनिक ने ठीक ही कहा है—"know the self" अपने आप को पहचानो"। इतिहास गवाह है, समय साक्षी रहा है कि पश्चिम बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद् ने वह स्तुत्य कार्य किया है, जिसके तहत् हिन्दुस्तान के कोने-कोने से आये हुए ब्रह्मर्षि प्रवासी आज एक दूसरे को जान रहे हैं। वास्तव में यह अपने आप में एक अनूठी मिशाल है। किसी अवसर पर मदर टेरेसा ने ठीक ही कहा था, "अन्धेरे को मत कोसो हो सके तो एक नन्हा सा दीपक जला लो अन्धेरा अपने आप दूर हो जायेगा" उस दीपक को जलाने का कार्य इस संस्था ने बखूबी से किया है।

मैं युवा-मंच के लोगों को एक खुश-खबरी देना चाहता हूँ कि आगामी मार्च माह में गीत-संगीत का एक भव्य आयोजन युवा-मंच की तरफ से किया जायगा। मैं युवा मंच की तरफ से धन्यवाद देता हूँ—आदरणीय आर० एन० ठाकुर अध्यक्ष एवं श्री कृष्ण गोपाल सिन्हा महामन्त्री को जिनके अथक परिश्रम के कारण ही यह वृहद उत्सव पूर्ण गरिमा के साथ सफलता के सोपान तक आगे बढ़ सका।

इसी के साथ मैं आपलोगों से सहयोग की कामना करता हूँ।

ब्रह्मर्षियों करो प्रयाण अभय, भावी इतिहास तुम्हारा है,
ये नखतअमा के बुझते हैं,
सारा आकाश तुम्हारा है।

जय ब्रह्मर्षि

आपका अपना
रमेश कुमार ठाकुर
महामन्त्री
युवा-मंच

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

Phone : 26-9177, 26-1421, 76-2019

SINHA ELECTRICAL STORES

18, EZRA STREET, CALCUTTA-700 001

With best compliments from :

Phone : 40-3696

BIDHAN AUTOMOBILES

Mechanical & Electrical Engineers

Tin Smith, Gas Welding & Spray Painting Etc

(SPECIALIST IN FOREIGN CAR)

13/1, TILJALA PLACE, CALCUTTA-700 017

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पश्चिम बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद् के पदाधिकारी

अध्यक्ष	:	श्री राम नारायण ठाकुर
उपाध्यक्ष	:	श्री प्रह्लाद राय
"	:	श्री अवध कुमार पाण्डेय
महामंत्री	:	श्री कृष्ण गोपाल सिन्हा
संयुक्त-मंत्री	:	श्री राजेन्द्र प्रसाद राय
"	:	श्री सीताराम राय
प्रचार मंत्री	:	श्री कामता प्रसाद सिंह
कोषाध्यक्ष	:	श्री किरण शंकर राय
उप-कोषाध्यक्ष	:	श्री नमो नारायण राय

कार्यकारिणी के सदस्य

श्री जगदेव पाण्डेय (भू०पू०अध्यक्ष)
श्री राज मंगल सिंह
श्री वृन्दावन राय
श्री शिव शंकर तिवारी
श्री जितेन्द्र कुमार सिंह
श्री राम नाथ शर्मा
श्री जनक देव तिवारी
श्री शैल नाथ राय
श्री आश नारायण राय
श्री हीरा सिंह
श्री राजेन्द्र शाही
श्री चन्द्रमा शर्मा 'रसेश'
श्री शिव नाथ सिंह
श्री आर० एन० राय
श्री जनक देव शर्मा
श्री राम नाथ राय (बराकर)

श्री मिथिलेश शर्मा
श्री इन्द्र जीत राय
श्री सिया राम सिंह
श्री राजेश कुमार राय
श्री बृजविहारी राय
श्री एस० एन० पाण्डेय
श्री शिव जन्म पाण्डेय
श्री विश्व नाथ पाण्डेय
श्री दीना नाथ पाण्डेय
श्री पारस नाथ ठाकुर
श्री कैलाश नाथ राय
श्री भगवती शरण राय
श्री एम० एल० राय
श्री राम कृपाल मिश्र
श्री शेष नाथ राय
श्री संकठा प्रसाद राय

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliment of :

Special Springs

3D, FEEDER ROAD
CALCUTTA-700 056
Phone : 53-1802

Specialists in : Springs & Sheet-metal Pressings

Space donated by :

A WELL WISHER

SRI OMPRAKASH TEWARI

BAGMORE, P.O. KANCHRAPARA
DIST. 24 PARGANAS (N)
Phone : Kly. (O) 98-109
(R) 98-730

With best compliments of :

HOWRAH MOTOR ACCESSORIES AGENCY (PRIVATE) LTD.

3/1, MANGOE LANE
Post Box 343
CALCUTTA-700 001
Phone : 28-1891/92-93

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best Compliments of

RAJESH SHIPPING AND CLEARING AGENCY

HANDLING AND CLEARING AGENT FOR EXPORT IMPORT & TRANSPORT

23/2, DARPNARAYAN TAGORE STREET

CALCUTTA-700 007

PHONE : Office 33-2081, Customs 20-0838, Resi. 49-4076

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments from

SHREE VARSHA

95, PARK STREET

CALCUTTA

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi.

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सम्पादकीय समिति

१ प्रो० अवधेश कुमार राय (संयोजक)
२ श्री कैलाशनाथ राय
३ श्री नमोनारायण राय
४ श्री सच्चिदानंद द्विवेदी
५ प्रो० मधुसूदन प्रसाद सिन्हा
६ श्री राम नारायण राय
७ श्री कामेश्वर शर्मा
८ श्री ब्रजबिहारी राय

सांस्कृतिक कार्य उप-समिति

१ श्री ओमप्रकाश राय   २ श्री अम्बिका राय

स्वागत समिति

१ माननीय न्यायमूर्ति श्री एस० के० हजारी — स्वागताध्यक्ष
२ श्री बलराम शर्मा — स्वागत मन्त्री

—: सदस्य :—

१ श्री अनय गोपाल सिन्हा
२ ,, जनकदेव तिवारी
३ ,, जितेन्द्र कुमार सिंह
४ ,, कैलाशनाथ राय
५ श्रीमती डा० लाल मुनी राय
६ ,, सुशीला राय
७ श्री हीरा सिंह
८ ,, पी० एन० ठाकुर
९ ,, जितेन्द्र तिवारी
१० ,, सीताराम राय
११ ,, कल्पनाथ राय
१२ ,, सियाराम सिंह
१३ ,, इन्द्रजीत राय
१४ ,, रामजी शर्मा
१५ ,, पंचदेव तिवारी
१६ ,, वृजराज राय
१७ ,, शेषनाथ राय
१८ ,, एस० एन० ठाकुर
१९ श्री भैरव प्रसाद सिंह
२० ,, ईश्वर दयाल शर्मा
२१ ,, ब्रजबिहारी राय
२२ ,, महेश प्रसाद शर्मा
२३ ,, चन्द्रिका सिंह (खड़गपुर)
२४ ,, अनरूद्ध प्रसाद शर्मा (,,)
२५ ,, कामता प्रसाद सिंह
२६ ,, द्वारिका नाथ ठाकुर
२७ ,, राजेन्द्र प्रसाद राय
२८ ,, कैलाश पाण्डेय
२९ ,, देवनाथ सिंह
३० ,, अवधेश कुमार राय
३१ ,, जय प्रकाश राय
३२ ,, संकठा प्रसाद राय
३३ ,, राजेन्द्र प्रसाद शाही (शालीमार)
३४ ,, राम किशोर सिन्हा
३५ ,, राम सागर सिन्हा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

ब्रह्मर्षि युवा मंच कार्यकारिणी के सदस्य

अध्यक्ष : श्री सुनील कुमार सिंह
उप-अध्यक्ष : श्री मंगलेश्वर राय
: ओम प्रकाश राय
महामंत्री : श्री रमेश कुमार ठाकुर
संयुक्त मंत्री : श्री अवधेश कुमार राय
: श्री कृष्ण कुमार राय
: श्री त्रिवेणी शरण राय
कोषाध्यक्ष : श्री अखिलेश शर्मा
: श्री राजेश कुमार राय (पप्पू)
सांस्कृतिक सचिव : श्री सत्येन्द्र सिन्हा
: श्री दिग्विज नारायण राय
प्रचार सचिव : गणेश प्रसाद राय

श्री दिनेश प्रसाद सिंह
,, विनोद सिंह
,, हरि राम सिंह
,, बृज भूषण सिन्हा
,, मनोज कुमार सिंह
,, राजेश कुमार सिन्हा
,, रत्नेश कुमार ठाकुर
,, वेद प्रकाश राय
,, भृगुनाथ ठाकुर
,, सत्य प्रकाश राय
,, अभय कुमार सिंह
,, सुशील कुमार राय शर्मा
,, राम विहारी सिंह
,, लक्ष्मी नारायण

श्री नरेन्द्र प्रसाद सिंह
श्री राजेश्वर राय
,, राम प्रवेश राय
,, राम विलास राय
,, अनिल कुमार राय
,, मधु सूदन शर्मा
,, त्रिवेणी शरण राय
,, सर्वेश कुमार राय
,, सुरेश राय
,, सुनील कुमार राय
,, मिथिलेश राय
,, प्रभा शंकर राय
,, अजय राय
,, अजय कुमार सिंह

श्री राम प्रवेश राय
,, मनोज कुमार राय 'शेरपुरी'
,, राम बचन राय
,, अनिल पाण्डेय
,, योगेश चन्द्र राय
,, शिव जी राय
,, उमेश पाण्डेय
,, अरविन्द कुमार राय
,, मानस राय
,, सुनील राय
,, अम्बुज शर्मा
,, नवल किशोर शर्मा
,, प्रमोद कुमार सिंह
,, विजय शर्मा
,, सुजय शर्मा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

CORPORATE COURIERS

A DIVN. OF PREMIER CORPORATE SERVICES PVT. LTD.
113, PARK STREET, CALCUTTA-700 016
Tlx. : 4832 PREM IN Phone : 29-5405

CORPORATE COURIERS

7, Waterloo Street
Calcutta-69 Phone : 28-9888

23, N. S. Road
Calcutta-1

113, Park Street, Calcutta-16
Phone : 29-5405/29-4049 Tlx : 4832 PREM IN

329

With best compliments from :

M/s. MOHAMEDALI GOOLAMALI & CO.

14, BENTINCK STREET

CALCUTTA-700 001

314

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

WISHING YOUR CONFERENCE A GRAND SUCCESS 300

MAHESH BHATT

48, Indian Mirror Street

Calcutta-700 013

With best compliments from : 325

METALO ENGINEERING WORKS

Non-Ferrous Metal Merchants
Rly's & Govt Contractor

1, Bonfield Lane (2nd floor)
Calcutta-700 001
Dial : 25-0298/25-0058
A HOUSE OF QUALITY NON-FERROUS METALS

With best compliments from : 199

M/s. S. K. ENTERPRISE

Bhatpara, 24 Parganas (N)

Leading Civil Contractor & Building
Materials Suppliers

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अन्यान्य विभाग

—: अर्थ समिति :—

१ श्री दीनानाथ पाण्डेय, अध्यक्ष
२ „ शैलनाथ राय, उप-अध्यक्ष
३ „ रमाकान्त शर्मा, संयोजक
४ „ राजमंगल सिंह
५ „ बलराम शर्मा
६ „ एन० के० शुक्ला
७ „ रामगोपाल सिंह
८ „ आर० के० राय
९ „ आर० के० सिंह
१० „ आई० आर० शर्मा
११ „ कल्पनाथ राय
१२ „ प्रह्लाद राय
१३ „ जगदेव पाण्डेय, भू पू अध्यक्ष
१४ „ कपिलदेव चौधरी
१५ „ शिवनाथ सिंह
१६ „ शिवजी पाण्डेय
१७ „ राम नारायण राय
१८ „ विश्वनाथ सिन्हा
१९ „ काशीनाथ राय
२० „ यमुना राय
२१ „ एल० एन० मिश्रा
२२ श्री गिरिजा शंकर राय
२३ „ भोलानाथ राय
२४ „ वीरेन्द्रनाथ राय
२५ „ शिवशंकर तिवारी
२६ „ भगवती शरण राय
२७ „ मिथिलेश सिंह
२८ „ जनकदेव तिवारी
२९ „ शारदा राय
३० डा० उपेन्द्रनाथ राय
३१ श्री विनोद कुमार
३२ „ नीरज कुमार
३३ „ आर० डी० शर्मा
३४ „ अवध कुमार पाण्डेय
३५ „ दीनानाथ पाण्डेय
३६ „ शिव प्रसाद राय
३७ „ तेज बहादुर राय
३८ „ चन्द्रमा शर्मा 'रशेस'
३९ „ शिव प्रसाद राय
४० „ अजय आनन्द सिंह
४१ „ शिव जनम राय

भवन निर्माण समिति

अध्यक्ष : श्री शिवजी पाण्डेय, संयोजक : श्री अनय गोपाल सिन्हा,

श्री शिवजी पाण्डेय एवं श्री अनय गोपाल सिन्हा को कार्यकारिणी द्वारा अधिकृत किया गया है कि वे भवन निर्माण समिति का गठन स्वयं कर लें।

मुद्रण समिति

१ श्री वृन्दावन राय (संयोजक) २ श्री तारकेश्वर राय ३ डा० हरिकुँवर राय (संयोजक)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

RAHUL
VEST BRIEF & PANTIES
A PRODUCT OF :
DIAL : 39-2875
J. P. HOSIERY
276, RABINDRA SARANI
CALCUTTA-700 007

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वागत मंत्री का प्रतिवेदन

उपस्थित भाइयों एवं बहनो,

सर्वप्रथम मैं प० बं० ब्रह्मर्षि परिषद् का आभारी हूँ जिसने मुझे आप उपस्थित भाइयों का स्वागत करने का गुरुतर भार दिया है। सौभाग्य की बात यह है कि आज ही राष्ट्रपुरुष नेताजी सुभाष चन्द्र बोस का जन्म दिन भी है। आज उनकी कर्मभूमि पर आप सभी आगन्तुकों का स्वागत करते हुए गर्व का अनुभव करता हूँ। हमारे अतिथि जो बाहर से आये हैं, विशेष रूप से वे धन्यवाद के पात्र हैं क्योंकि उन्होंने अपने व्यस्ततम् समय से अपना कुछ समय हमारे लिए दिया, उससे भी अधिक धन्यवाद के पात्र आप कलकत्ता वासी हैं, जो आपने अपनी उपस्थिति से इस सम्मेलन को सफल बनाया है।

स्वागत मंत्री के इस मंच से मैं आपका स्वागत कर ही अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ लूँ, उचित नहीं। हम एक परिवार के सदस्य हैं, पर अधिकतर यह देखा जा रहा है कि परिवार के साथ-साथ हमारा समाज भी चरमरा रहा है। हम 'पर' को छोड़ 'स्व' के दायरे में सीमित होते जा रहे हैं, और वह भी इस संकुचित सीमा तक कि विवाह जैसे पवित्र कार्य में भी खरीद-बिक्री करने लगते हैं। आप समाज के विशिष्ट व्यक्ति समवेत हुए हैं। मैं आपके सामने एक प्रश्न छोड़ रहा हूँ—दहेज का—इसका क्या किया जाय—क्या इसी में पिसते हुए हम मरते रहें या इस रोग का कोई उपचार भी है? मैं यहां पर विशेष रूप से उपस्थित वक्ताओं से अनुरोध करता हूँ कि इस पर हमारा मार्ग दर्शन करें ताकि हम लड़की के विवाह को एक समस्या के रूप में न ले-इसे एक आनन्द का अवसर समझें।

धन्यवाद

बलराम शर्मा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments from

TRCHANCO PVT. LTD.

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

सहजानन्द-प्रशस्तिः

—कपिल देव चौबे 'मुनि'

यस्यान्तः करणे कदापि नासीत्सौख्ये रतिः शैशवात्,
स्वाध्याये परमेश्वरे च सततं यस्यानुरक्तिः परा।
यस्मिंछान्तिरलक्षिता विलसिता क्रान्तिः समग्रोज्ज्वला,
सहजानन्द सरस्वत्याख्यमनिशं वन्दे तमत्याश्रमम् ॥ १ ॥

मनसा वाचा कर्मणा च नित्यं ध्वस्तुं प्रजाशोषवं,
करुणार्द्रेण मनीषिणा खरतरा चेष्टामरा वाहिता।
दूरीकर्तुञ्चाङ्ग्लजान् स्वदेशात्कारागृहं सेवितं,
ध्याये तमहं दण्डिनं प्रगल्भं परतन्त्रकाष्ठानलम् ॥ २ ॥

निर्द्वन्दः कृषिकर्मिणामविरलं ह्यान्दोलनं नीतवान्,
भारतवर्षे शौर्यभुग्रमधिकं ज्वालामयं दीप्तवान्।
निद्रायामपि मातृभूमिस्मरणं न यो मनाक् त्यक्तवान्,
आर्याणां कुलभूषणाय तस्मै शिरसा नमः कोटिशः ॥ ३ ॥

भारतभूमौ स्वार्थसाधनरताः वहवो हि मानवजनाः,
सेवात्यागपराक्रमप्रभृतयः सुप्ता विलुप्ताश्च वै।
नेतारः न चलन्ति संस्कृतिपथे राष्ट्रास्मिता दूषिता,
सहजानन्द महोदयस्य दण्डः अधुना अमोघौषधिः ॥ ४ ॥

सत्यं सततं पोषितं सुमनसा मिथ्याऽभवन्नान्तिका,
वन्दे मातरमेव मन्त्रममरं ब्रह्मर्षिणा जापितम्।
तोषणनीतिरनादृता दृढ़तया येनैक्यमेवाङ्क्षितं,
तस्मै मानधनाय वीर्यवपुषे स्वाहा स्वधा वै नमः ॥ ५ ॥

—जयतु भारतवर्षम्—

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

NEMICHAND BAMALWA & SONS

Exporters, Manufacturers Wholesellers & Retailers in Gold Jewellery.

16A, SHAKESPEARE SARANI (3rd Floor)
CALCUTTA-700 071
Phone : 22-3388, 22-5624 361

With best compliments from :

Phone : 27-7900

JAY MANGAL THAKUR

Electrical, Labour Contractor &
General Order Suppliers

47, BIPLABI ANUKUL CHANDRA STREET
CALCUTTA-700 072

Space donated by :

A
WELL
WISHER

294

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

१९९२ को माध्यमिक परीक्षा गौरवपूर्ण स्थान पाने वाले

हमारे युवा

छात्र ब्रह्मर्षि

अंजनी कुमार राय सुपुत्र—श्री राजेन्द्र प्रसाद राय
शेरपुर, गाजीपुर

ललित नारायण ठाकुर सुपुत्र - श्री गणेश ठाकुर
बभनौली, बलिया

सत्य प्रकाश राय सुपुत्र—श्री जितेन्द्र राय
पटखौली, बलिया

प्रशान्त कुमार राय सुपुत्र—श्री ब्रजेन्द्र राय
कोट अंजोरपुर, बलिया

सुशील कुमार राय सुपुत्र—श्री राम बदन राय
बघौना, बलिया

अभिशेक कुमार सिंह सुपुत्र—श्री काशीनाथ सिंह

संजय कुमार सिंह सुपुत्र—

ताड़केश्वर राय सुपुत्र—श्री राम नगीना राय

With best compliments from :

First Flight Couriers Pvt. Ltd.

★ Regional Head Quarter EC-73, Sector 1, Salt Lake City, Calcutta-700 064
Phone : 34-8736

★ 16B, Shakespeare Sarani, B. K. Market. Ground Floor, Calcutta-700 071
Phone : 22-8700 22-6416

★ 6A, S. N. Banerjee Rd, 3, Futnani Chambers, Ground floor, Opp Elite Cinema
Calcutta-13 Phone : 44-9433

★ 4B, Jackson Lane, 1st Floor, Calcutta-1, Phone : 25-7153, 25-8807

★ 15, Dobson Road, Howrah-7·1 101

★ Temple Chambers (Basement), 6, Old Post Office Street, High Court,
Calcutta-700 001 Phone : 28-3868

★ Lake Avenue, Calcutta-700 029, Phone : 76-5767

★ Burtolla Street, Calcutta-700 007, .8-6673

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

PODDAR BROTHERS

We are Making Auditorium Screen Curtain

74, CHOWRINGHEE CENTRE
Opp. NEW EMPIRE CINEMA
CALCUTTA-700 013

With best compliments from :

Zenith Electric Stores

25, EZRA STREET, CALCUTTA-700 001

Authorised Distributor
Bajaj, Khaitan, Sumit, Rex, Orient, Crompton, Cinni & all Electricals

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भारत का स्वतंत्रता संग्राम :— भूमिहार ब्राह्मणों की भूमिका

डॉ० हरि कुँवर राय
सम्पादक—देश और समाज

यह कहा जाता है कि वर्तमान को भलीभांति जानने-समझने के लिए अतीत का ज्ञान आवश्यक है। जो अतीत को नहीं जानते उनका वर्तमान भी अधूरा है। अतीत की इहलौकिक सफलताओं-विफलताओं का वर्णन—संकलन ही इतिहास का महत्वपूर्ण अंक है। अतः मानवीय प्रयासों को गति देने तथा वर्तमान को समझने और समृद्ध बनाने के लिए इतिहास का ज्ञान आवश्यक है। जो जाति अपने इतिहास का स्मरण नहीं करती, उसका पतन सुनिश्चित है। इतिहास बहुमुखी विकास का आधार है। उससे प्रगति की प्रेरणा मिलती है, स्वाभिमान जाग्रत होता है और कार्य-क्षमता बढ़ती है। अपने इतिहास, अपनी संस्कृति और सामाजिक स्थिति का सम्यक ज्ञान हर व्यक्ति को होना चाहिए। 'इतिहास विकास की कुञ्जी है। इतिहास जाति, संस्कृति और राष्ट्र रूपी महावृक्ष की जड़ है, जिसके आधार पर हम खड़े हैं तथा सरसता और पोषण पाते हैं। इतिहास के अध्ययन से जातीय जीवन में स्थिरता आती है और विकास को बल मिलता है। इतिहास का अध्ययन पतन और बिखराव से रक्षा करता है। जो जाति अपने इतिहास को भूल जाती है वह अपने को भूल कर समाप्त हो जाती है किन्तु जो जाति अपने इतिहास की रक्षा करती है और उसका अनुशीलन करती है उसका विनाश नहीं होता। अतः इतिहास की धारा को बलवती बनाने एवं उससे उत्थान की प्रेरणा लेने तथा कार्यशक्ति को गत्वरता प्रदान करने हेतु स्वतंत्रता-संग्राम में भूमिहार ब्राह्मणों की भूमिका का अध्ययन अनिवार्य है।

यद्यपि मुझे ब्रह्मर्षि परिषद् द्वारा प्रदत्त यह विषय बहुत विस्तृत है और सन्दर्भ ग्रन्थों का भी अभाव है तथापि छोटे साधनों के मध्य जो सामग्री उपलब्ध हो पायी है और श्री कुलदीप नारायण झड़प के सौजन्य से जो कुछ तथ्य प्राप्त हो सके हैं उन्हें प्रस्तुत किया जा रहा है। आधुनिक भूमिहार ब्राह्मण स्वतंत्रता संग्रामी वीरों-विद्वानों में विशेष उल्लेखनीय नाम हैं—गोपाल कृष्ण गोखले (१८६६-१९१५) लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, (१८५६-१९२०) विनायक दामोदर सावरकर, गणेश दामोदर सावरकर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

M/s. AUTO MECH

8, CHURCH LANE

CALCUTTA-700 001

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

चापेकर बन्धु, फतेशाही, बासुदेव बलवन्त फड़के, भाई मतिदास, भाई परमानन्द, चौ० भोजदत्त, मूलाभाई, पं अलगू राय शास्त्री (१९००-१९६७) मथुरा प्रसाद राय, शिवराम राय, विश्राम राय, बंशी राय, कुंजबिहारी राय (आजमगढ़) छोटेलाल राय, गौरीशंकर राय (१९२४-१९८१) (बलिया) डॉ० शिवपूजन राय, नारायण राय, बंशनारायण, वशिष्टनारायण राय, सीताराम राय, रामनगीना राय, शेरपुर, श्री विश्वनाथ शर्मा, रामअवतार राय, सुशीला राय (रेवतीपुर), श्री वशिष्ट नारायण शर्मा, (डेढ़गांवा) श्री परशुराम राय (मलसा) (गाजीपुर) राजनारायण सिंह (वाराणासी) राम दयालु सिंह, पदम सिंह शर्मा, बाबू लंगट सिंह (१८५०-१९५२), बैकुण्ठ शुक्ल, राम चरित्र सिंह (१८८४-१९६६), साधु शरण सिंह, नारायण प्रसाद सिंह (१८८९-१९४१) नवल किशोर सिंह (१९०३-१९८२), किशोरी प्रसन्न सिंह, गंगा शरण सिंह (१९०५-१९८८) चन्द्रशेखर सिंह (१९१५-१९७०), रामनन्द मिश्र (१९१५-१९७०) रामवृक्ष बेनीपुरी, रामधारी सिंह दिनकर, डॉ० श्री कृष्ण सिंह, रघुवीर नारायण सिंह, बसावन सिंह, ललितेश्वर प्रसाद शाही (विहार), प्रकाशवीर शास्त्री (मुरादाबाद) श्री महावीर त्यागी, ओमप्रकाश त्यागी, स्वामी अभय देव और स्वामी सहजानन्द सरस्वती (१९८९-१९५०)।

आधुनिक स्वतंत्रता संग्रामियों की पावन यश-गाथा का गान करने से पूर्व महात्मा तुलसीदास तथा मंगल पाण्डेय के स्मरण की इच्छा का संवरण नहीं कर पा रहा हूँ क्योंकि इनके द्वारा स्वतंत्रता का उद्घोष बहुत पहले किया जा चुका था। तुलसीदास ने सत्रहवीं शदी के चतुर्थ दशक में ही पराधीनता को कष्ट कर कहा। इसी प्रकार मंगल पाण्डेय ने अपना अकूत पराक्रम दिखाकर अंग्रेजी सरकार को चकित कर दिया। आधुनिक ब्रह्मर्षियों में समाज-सुधारक तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के संचालक के रूप में गोपाल कृष्ण गोखले (१८६६-१९१५) अग्रगण्य हैं। वे बड़े ही प्रतिभावान, कुशाग्रबुद्धि, दूरदर्शी, सत्यनिष्ठ, ईमानदार तथा देश भक्त व्यक्ति थे। १८८९ में इलाहाबाद के कांग्रेस अधिवेशन के मंच से उनका राजनैतिक जीवन आरम्भ हुआ। सन् १९०२ में वे बम्बई विधान परिषद् के और १९०५ में इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल के सदस्य निर्वाचित हुए। बहुत दिनों तक ये राष्ट्रीय कांग्रेस के संयुक्त सचिव रहे। सन् १९०५ में वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। गोखले उदारवादी नम्र-दल के नेता थे और वैधानिक साधनों द्वारा वे भारत की समस्याओं का समाधान करना चाहते थे। उग्रवादी उन्हें भीरु हृदय का उदारवादी नेता कहते थे। किन्तु गांधीजी ने उन्हें अपना राजनीतिक गुरु माना है।

महाराष्ट्र में सर्व प्रथम क्रान्तिकारी और आतंकवादी आन्दोलन का आरम्भ चित पावन ब्राह्मणों ने किया। वे लोग पेशवाओं के वंशज हैं और उन्हीं के पूर्वजों का साम्राज्य अंग्रेजों ने हस्तगत किया था। महाराष्ट्र में प्रथम सशस्त्र क्रान्ति पूना में हुई। दामोदर तथा बालकृष्ण नाम दो चितपावन ब्राह्मण जिन्हें इतिहास में 'चापेकर बन्धु' के नाम से भी जाना जाता है उसके लिए उत्तरदायी ठहराये गये। उन्हें 'रेण्ड' तथा लेफ्टीनेन्ट एयर्स्ट की हत्या (२२ जून १८९७) के लिए दोषी ठहराया गया और फांसी पर लटका दिया गया।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

Cable : OCEANWAY

Phone : 20-2295/20-2874

RELIANCE CORPORATION PRIVATE LIMITED

CLEARING & FORWARDING AGENTS

6, COMMERCIAL BUILDINGS

CALCUTTA-700 001

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन के उग्रदल के नेताओं में बाल गंगाधर तिलक (१८८५-१९२०) का नाम कनिष्ठिका धिष्ठित हैं। इन्हें भारत का बेताज का बादशाह कहा गया। देश-प्रेम एवं राष्ट्रीयता की भावना इनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। सन् १८८१ में उन्होंने मराठी में 'केसरी' और अंग्रेजी में 'मराठा' नामक पत्र निकले। इन पत्रों में वे देश की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक समस्याओं पर बड़ी निर्भीकता से प्रकाश डालते थे। १८९६ में वे कांग्रेस के समर्थक हो गये और थोड़े ही दिनों में वे अपनी उत्कट राष्ट्रीयता, निर्भीकता, स्पष्टवादिता, कर्मठता तथा त्याग के बल से देश के लोकमान्य नेता बन गये। अंग्रेजी सरकार की दृष्टि उनपर पड़ी। १९०७ ई० में उनपर राजद्रोह का आरोप लगा कर उन्हें ६ वर्षों का कारावास दिया गया। जेल से छूटने के उपरान्त वे फिर स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। उनके आह्वान पर देश के विभिन्न भागों के तरुण क्रान्तिकारी हँसते-हँसते शूली पर लटक कर देश-भक्ति का आदर्श अमर राष्ट्रीय धरोहर के रुप में छोड़ गये। सर्वप्रथम उन्होंने ही कहा था—स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है और हम इसे लेकर ही रहेंगे। उनपर जनता को उत्तेजित करने का आरोप लगाया गया और उन्हें पुनः अठारह महीने का कठोर कारा-दण्ड दिया गया। बहिष्कार की नीति को अपनाने तथा राष्ट्रीय शिक्षा के चलाने का आह्वान तिलक ने ही किया था। इस प्रकार उन्होंने गांधीजी के असहयोग आन्दोलन तथा राष्ट्रीय शिक्षा के आन्दोलन की पृष्ठ-भूमि तैयार कर दी थी। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा हो और देवनागरी उसकी लिपि हो—इसका नारा सर्व-प्रथम तिलक जी ने ही बुलन्द किया था।

तिलक जी की प्रशंसा में किसी कवि ने लिखा है—

तिलक तिलक थे हिन्द भाल के,
भारत माता के थे वे लाल।
नव-युवकों के उत्प्रेरक थे
ब्रिटिश-राज्य के थे वे काल॥

विनायक दामोदर सावरकर तथा उनके छोटे भाई गणेश दामोदर सावरकर का महाराष्ट्र में आतंक फैलाने में विशेष योगदान रहा। विनय दामोदर सावरकर भारत छोड़कर इंग्लैण्ड चले गये और वहीं लन्दन में 'इण्डिया हाउस' की स्थापना कर महाराष्ट्र के आतंकवादियों की सहायता तथा उनका उत्साह वर्द्धन करते रहे। गणेश सावरकर ने नासिक को अपने आन्दोलन का केन्द्र बनाया और 'अभिनव भारत सोसाइटी' तथा उसकी शाखाओं की स्थापना कर आतंकवादी आन्दोलन का संचालन किया। नासिक षड़यंत्र काण्ड, जैक्सन हत्याकाण्ड तथा अहमदाबाद षड़यंत्र काण्ड में इनकी भूमिका सराहनीय रही है। इनके अतिरिक्त बासुदेव फड़के, फतेहशाही, भाई मतिदास, भाई परमानन्द, चौ० भोजदत्त और मूलाभाई के कार्य भारत के स्वतंत्रता संग्रामी इतिहास में चिरस्मरणीय रहेंगे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments from

THE WESTERN ENGINEERING & CONSTRUCTION CO.

13, DEVENDRA GHOSH ROAD

CALCUTTA-700 025

PHONE : 48-1137

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पं० अलगू राय शास्त्री (१६००-१६६७) एक कर्मठ तथा कुशल संगठक क्रान्तिकारी थे। गांधीजी के आह्वान पर उन्होंने विश्वविद्यालय का बहिष्कार किया। उन्होंने सन १६३१ से १६४२ तक राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया और इस बीच कई बार इन्हें कारागार की यंत्रणाएँ सहनी पड़ीं। उत्तर प्रदेश के पूर्वी जनपद विशेष कर आजमगढ़ इनके राष्ट्रीय आन्दोलन का केन्द्र रहा। उनकी वाणी में जादू था। रेलवे लाइन उखाड़ने, तार काटने और ट्रेन गिराने की कई घटनाएँ हुईं। उन्होंने खद्दर तथा राष्ट्रीय शिक्षा को प्रोत्साहन दिया। सरायमीर स्टेशन से १ किलोमीटर पूर्व रेलवे ट्रेन गिराई गयी। उनके स्वजातीय सहयोगियों में मथुरा प्रसाद राय (टीकापुर) शिवराम राय, विश्राम राय (बेनीपुर) तथा बंशी राय, व कुंन्ज विहारी राय (मनरा) थे। शास्त्री जी १६५२ ई० में घोषी क्षेत्र से विधायक चुने गये तथा तत्कालीन मुख्यमंत्री चन्द्रभान गुप्त के मंत्रिमण्डल में उन्होंने उत्तर प्रदेश के वन मंत्री के पद पर काम किया। राष्ट्रीय आन्दोलन में वलिया में छोटे लाल राय (पनदह) तथा सूरज राय (हथउज) की प्रशंसनीय भूमिका रही। छोटे लाल राय का घर अग्नि को अर्पित कर दिया गया। देश के स्वतंत्र होने के पश्चात् उन्होंने कोई सरकारी अनुग्रह राशि नहीं ली। इस क्षेत्र में गौरीशंकर राय (१६२४-१६६१) का नाम भी आदर के साथ लिया जाता है। सन १६४२ के राष्ट्रीय आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भाग लिया।

भारतवासी अब पराधीनता का कलंक सदा-सदा के लिए मिटाने को कटिवद्ध थे। सब में उत्साह था, सभी कातिल के वाजू के जोर को अजमाना चाहते थे। गाज़ीपुर गरज उठा। गाजीपुर में विशेष रुप से शेरपुर का इतिहास शेरों का इतिहास रहा है। गंगातट पर बसे शेरपुर जिसकी आराध्य देवी मां भगवती हैं, ने अपने नाम के अनुरूप शहीदों में अपना नाम सर्वोपरि रखा। मुहम्मदाबाद तहसील पर एक तरफ अंग्रेजी सरकार झंडा न फहराने देने के लिए कृत संकल्प थी, दूसरी तरफ शेरपुर के सेनानी झंडा फहराने के लिए कृत संकल्प थे। गोलियों की बौछार भी उनके जोश को रोक नहीं पायी उन्होंने मृत्यु का वरण किया पर झण्डा फहराने में सफल रहे। आज भी ग्राम प्रधान श्री महेन्द्र प्रसाद राय शेरपुर की शौर्य को बनाये रखने में पूर्ण सफल रहे हैं। ईश्वर इस त्यागी गांव के इस सपूत को सतायु प्रदान करें। जवानों ने तहसील पर लगे ब्रिटिश झण्डे को हटा कर राष्ट्रीय तिरंगा ध्वज फहराने के लिए प्राणों की वाजी लगा दी। संग्रामी ब्रह्मर्षि-वीर अंग्रेजी सरकार के फहरते झण्डे की ओर बढ़े। भीतर से ब्रिटिश राजभक्त मुसलमान तहसीलदार गोलियां बरसाने लगा। एक शहीद हुआ, दूसरा शहीद हुआ किन्तु एक के बाद अन्य दूसरा निरन्तर आगे बढ़ता रहा और भारत मां की गोद में चिर निद्रा वरण कर स्वतंत्रता के इतिहास में सनातन राष्ट्रीय धरोहर को सदैव के लिए छोड़ता गया। आठवां संग्रामी ब्रिटिश कलंक को मिटा कर शहादत के पूर्व ही तहशील पर राष्ट्रीय तिरंगा झण्डा फहरा दिया और स्वतंत्रता की बलिवेदी पर आत्मोत्सर्ग होने से पहले कहा—

आंधियां जहां तूफान नहीं वनाती हैं,
छातियां जहां संगीनों से डरती हैं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With Best Compliments from

SANTOSH TRANSISTORS

TAPE RECORDERS AND FANS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

शोणित बन जहां अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है ॥

अपनी नंगी छातियों पर अंग्रेजी सरकार की गोलियों को आमंत्रित करने वाले वे स्वतंत्रता सेनानी थे—डॉ० शिवपूजन राय, नारायण राय, वंशनारायण राय, वशिष्ठ नारायण राय (प्रथम) वशिष्ठ नारायण राय (द्वितीय) तथा सीताराम राय।

सेना के जवान वीरगति प्राप्त विभूतियों का मृत शव को उठा ले गये और गंगाजल में विसर्जित कर दिये। शायद दाह संस्कार सम्पन्न नहीं हो सका। यहीं एक और बलिदानी वीर का नाम स्मरण करना मैं समीचीन समझता हूं। वे हैं—बिहार के भूमिहार ब्राह्मणों में सर्वप्रथम फांसी के फन्दे को नाम धन्य करने वाले शहीद बैकुण्ठ शुक्ल। लाहौर षड़यन्त्र केस के मुखबीर की हत्या करने के आरोप में इन्हें १४ अप्रैल १९३५ को गया जेल में फांसी दी गयी। वैशाली के इस युवक क्रान्तिकारी ने ९ नवम्बर १९३२ को मुखबिर फणीन्द्र घोष की हत्या विषाक्त खुखुरी से की थी।

बिहार के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भूमिहार ब्राह्मणों की भूमिका सर्वोपरि रही। सत्यनिष्ठ एवं कर्मठ स्वतन्त्रता सेनानो स्वामी सहजानन्द सरस्वती के दस्तावेज ही इस सत्य की पुष्टि करते हैं। उन्होंने लिखा है "यह ठीक है कि असहयोग युग में प्रायः चौहत्तर प्रतिशत जेल जाने वालों में भूमिहार ब्राह्मण ही थे। प्रायः उसी प्रकार लड़कों ने भी स्कूल कालेज छोड़े थे। मुझे तो इसका फक्र था.........उसने मौके पर मेरा साथ दिया और मुल्क का सिर ऊँचा करने में वह आगे रहा (मेरा जीवन संघर्ष—पृ० २८१)। बिहार के स्वतन्त्रता आन्दोलन में राम दयालु सिंह, पद्म सिंह शर्मा बाबू लंगट सिंह (१८५०-१९१२) रामचरित्र सिंह (१८८४-१९६६) साधु शरण सिंह, नारायण प्रसाद सिंह (१८८७-१९४१) नवल किशोर सिंह (१९०३-८२) किशोर प्रसन्न सिंह, गंगा शरण सिंह (१९०५-८८) आदि प्रथम पंक्ति में आते हैं ये सभी स्वतन्त्रता सेनानी पूरी तत्परता और ईमानदारी के साथ भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा निर्देशित दायित्वों को निभाये। रामदयालु सिंह ने १९३० में बड़ी शान्ति के साथ मुजफ्फर पुर में नमक सत्याग्रह का नेतृत्व किया। सन् १९३१-३३ में उन्हें कांग्रेस के प्रमुख कर्मी के रूप में गिरफ्तार किया गया और जेल की यात्राएँ करनी पड़ीं। बाबू लंगट सिंह सन् १९१० ई० में अखिल भारतीय कांग्रेस के २५वें अधिवेशन में मुजफ्फर पुर जिला कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किये। यह अधिवेशन इलाहाबाद में हुआ था। क्या यही विचित्र बात है कि पिता और पुत्र दोनों ही भारत माता की बेड़ियों को टुकड़े-टुकड़े कर देने के लिए बेचैन थे। वे दोनों ब्रह्मर्षि तपस्वी थे—रामचरित्र सिंह और चन्द्रशेखर सिंह। सन् १९४० में पहले चन्द्रशेखर सिंह और बाद में रामचरित्र सिंह पकड़े गये। उन्हें नजरबन्द कर हजारी बाग में सेन्ट्रल जेल भेज दिया गया। अन्य पुण्य नाम स्वतन्त्रता सेनानी थे—रामानन्द मिश्र, डॉ० श्री कृष्ण सिंह, रामवृक्ष बेनीपुरी, स्वामी अभय देव, वसावन सिंह। ललितेश्वर प्रसाद शाही का योगदान उल्लेख-योग्य है। वे सन् १९४२ में तीन बार जेल गये, किन्तु अपने राष्ट्रीय पथ पर आगे बढ़ते रहे।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

with BEST COMPLIMENTS from

Ghosh Engineering Co.

177A, S. P. MUKHERJEE ROAD
CALCUTTA-700 026
PHONE : 760594

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

अन्त में मैं ओंकार से हुंकार तक के पथिक स्वामी सहजानन्द सरस्वती के राष्ट्रीय कार्य-कलापों की चर्चा करूँगा। स्वामी जी सन् १९२० में महात्मा गांधी के सम्पर्क में आये और उनके विचारों तथा आदर्शों से प्रभावित होकर सक्रिय कांग्रेस-कार्य-कर्त्ता हो गये। वे भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रान्तीय तथा केन्द्रीय कमेटी के सदस्य थे। वे नागपुर, अहमदाबाद, त्रिपुरा, गया, लाहौर आदि विभिन्न कांग्रेस अधिवेशनों में सम्मिलित हुए। वे १९२० से १९४२ तक के सभी आन्दोलनों में एक सत्यनिष्ठ कर्मी की भाँति कार्य करते रहे। वे तीन बार जेल गये। पहली बार एक वर्ष, फिर ६ माह और अन्त में ३ वर्षों तक कारगार को पवित्र बनाये। कारागार ही में आचार्य नरेन्द्रदेव, आचार्य कृपलानी व पं० जवाहरलाल आदि से उनका परिचय हुआ। डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, डॉ० श्रीकृष्ण सिंह आदि बिहार के नामी नेतागण तो उनकी बिहार किसान सभा के सदस्य थे और वे स्वयम् उसके अध्यक्ष थे। स्वामी जी खरे थे; नियम-कानून के सख्त पाबन्द। जेल में, जेल से बाहर कांग्रेस-कर्मियों का आदर्शहीन व्यवहार उन्हें बहुत खलता था फिर भी वे २८ वर्षों तक एक पूर्ण समर्पित कार्य-कर्त्ता की भाँति भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के ध्वज के नीचे कार्यरत थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त ६ दिसम्बर १९४८ को कांग्रेस से अलग हो वे दीन-दुखियों की सेवा में आजीवन लगे रहे।

भूमिहार ब्राह्मणों पर स्वामी जी का बड़ा ऋण है। यह जाति उनके ऋण से अपने को मुक्त नहीं कर पा रही है। खेद है कि देवाग्राम की पुण्य-भूमि पर आज तक उनकी प्रतिमा स्थापित न हो सकी। यह सम्पूर्ण भूमिहार ब्राह्मण जाति के लिए लज्जा की बात है। हमें यह कार्य शीघ्रातिशीघ्र सम्पन्न करना चाहिए।

डॉ० हरिकुँवर राय
१३/१/१, हेम बनर्जी लेन
शिवपुर, हावड़ा-७१११०२

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best Compliments of

M/s. Sat Guru Brick Field

AYESHPUR, NARAINPUR, NADIA

PHONE : 98696

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

Gram : "POWERFORCE"

Phone : Office : 27-0542/9582/1851/4306/3961
Resi. : 247-4248/6849
Godown : 71-4064

POWER ELECTRIC CABLES CO.

COMMERCE HOUSE

2, GANESH CHANDRA AVENUE

CALCUTTA-700 013

295

With best compliments from :

Phone : 32-3323

SARASI ENTERPRISE

Manufacturer, Fabricator & Order Supplier

ELECTRICAL ● MECHANICAL

Regd. Office & Workshop :
133-C, Raja Ram Mohan Sarani
Calcutta-700 009

Factory :
620, Diamond Harbour Road
Behala Industrial Estate
Shed No. 8/2, Calcutta-34

Manufacturer of Motor Control Centres. Distribution Panel, Marshalling Kiock, Local Control & Push Button Units, Junction Boxes With, Protection Class-IP-55, IP-65

326

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from : 326/1

M/s. PRAGATI ENGINEERING CO.

50, G. B. COLONY, CALCUTTA-700 035

MANUFACTURERS OF CABLES GLAND

Space donated by : *336*

T. E.

With best compliments of : *272*

M/s. SHIVA MEDICAL STORE

Prop.—*S. K. THAKUR*
HALISHAHAR KONA
P.O. HAZINAGAR
Dist. 24 PARGANAS (N)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from : 326/2

Phone : 38-6677
38-2111

M/s. HANUMAN TRADING COMPANY

8C, M. D. Road, Calcutta-700 007

Iron & Steel Dealers & General Order Suppliers

With best compliments from : 274

M/s. S. N. PAL & CO.

8, SOUTH NAWADAH PARA
ARIADAH
CALCUTTA-700 057

With best wishes from : 198

Phone : 98-403
(STD-03162)

S. S. ROY & CO.

(Govt. Contractors & Engineers)
B-14/286, Kalyani-741 235
Nadia

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

Chemcrown (India) Limited

India's Foremost House of Leather Chemicals, Dyes,
Adhesives & Sodium Nitrite

95, Park Street, 2nd Floor

Calcutta-700 016

Branches : Madras, Kanpur, Mirzapur, Bombay, Calcutta & Delhi.

Factory : Walajapet, Pondicherry, Ambattur (Tamil Nadu)

Gram : CHEMCROWN Phone : 29-5652, 29-1175, 29-1393

Telex No. 21 5837 DYKM IN

309

With best compliment of :

SUMAN JEWELLERY

Manufacturing Jewellers, Wholesale Dealers
in Gold & Silver Ornaments

201, MAHATMA GANDHI ROAD

CALCUTTA-700 007

Phone : Shop 38-5445/38-0268, Resi. 75-2392

Gram : SILVERWARE

280

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्वामी सहजानन्द सरस्वती की पाण्डुलिपियाँ अमेरिका से भारत आयीं

राजेन्द्र प्रसाद राय
संयुक्त मंत्री पश्चिम बंगाल
ब्रह्मर्षि परिषद्

हमारे देश में संतों, ऋषियों एवं मुनियों की एक गौरवपूर्ण श्रृंखला रही है। इस देश ने सदैव आध्यात्मिक मूल्यों को महत्व दिया। सांसारिक वैभव तो मात्र पारलौकिक सुख के सोपान मात्र हैं। फतहपुर सीकरी के बुलन्द दरवाजे पर अंकित पंक्तियाँ—"यह संसार एक पुलिया है, इसके ऊपर से निकल जा, किन्तु इस पर घर बनाने का विचार मन में न ला। जो यहाँ घण्टा भर भी ठहरने का इरादा करेगा वह चिरकाल तक यहाँ ही ठहरने के लिए उत्सुक हो जायेगा।" जब कभी आध्यात्मिक भावना निर्बल हुई है तो सन्तों-सन्यासियों ने इसे पुनर्जीवित किया है।

आधुनिक भारत में तीन संन्यासियों का महत्वपूर्ण स्थान है। वे तीन संन्यासी हैं—स्वामी दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द और स्वामी सहजानन्द। यद्यपि इनका कार्य-क्षेत्र एक नहीं रहा फिर भी इन महापुरुषों में समानता दिखाई पड़ती है। ये तीनों महात्मा दीन-दुखियों के प्रति, समाज के प्रति और देश के प्रति सदैव सचेत रहे। हर प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति अपने सामाजिक वातावरण में झांककर देखता है, उसमें अपनी स्थिति को देखता है। यदि कहीं सम्मान दुर्बल दिखता है तो उसे पीड़ा होती है और वह उस कमजोरी को मिटा देने का प्रयास करता है। १९वीं शताब्दी में भूमिहार ब्राह्मण की उत्पत्ति विकास, परम्परा और इतिहास को लेकर अनेक भ्रमात्मक, दुखद और सत्य से काफी दूर रहने वाली बातें कही गयीं। (विस्तार के लिए देखें दी विहार टाइम्स—२८ जनवरी १८९८, दी विहार हेराल्ड— २० सितम्बर १८९९, दी विहार टाइम्स— २४ मार्च, १८९९) आज भी यह विषय कभी-कभी सामने आ जाता है (देखें २७ सितम्बर, १९९२ का साप्ताहिक हिन्दुस्तान में प्रकाशित 'अथ भूमिहार पुराण' शीर्षक लेख।) गम्भीर सामाजिक व्यथा से अवगत हो स्वामी सहजानन्द सरस्वती महाराज तत्सम्बन्धी अनेक शोध-परक कार्य किये।

उनकी पहली और छोटी पुस्तक 'भूमिहार ब्राह्मण परिचय' सन् १९१६ में काशी के हितचिंतक प्रेस से प्रकाशित हुई। फिर सन् १९२५ में यह पुस्तक और विस्तार के साथ 'ब्रह्मर्षि वंश विस्तार' के नाम से प्रकाशित हुई। यह एक शोध ग्रन्थ है। इस पुस्तक की आलोचन 'सरस्वती' में प्रकाशित

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best Compliments of

M/s. Sundeep Agencies

9, Old Court House Street

Calcutta-700 001

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

हुई थी और इसे आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसे 'अपने में पूर्ण' कह कर सराहा था। इस पुस्तक पर स्वामीजी को पी०एच०डी० की उपाधि मिलनी चाहिए थी, उनके अन्य कार्यों के लिए उन्हें डी० लिट् की मानक उपाधि भी मिलनी चाहिए थी किन्तु सत्यवादी, खरे और स्पष्ट वक्ता होने के कारण वे अपनों में भी उपेक्षित रहे। यदि खुशामद में सिद्धहस्त होते तो बहुत कुछ मिला होता किन्तु मनुष्य के सद्कर्म कभी मिटते नहीं। इतिहास उन्हें नहीं भूल सका है। एक ओर जहाँ घोर मार्क्सवादी अपने समीप स्वामीजी को खड़ा पाते हैं और उनकी जन्मशती के अवसर पर मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी हरकिशन सिंह सुरजीत ने "संगठित किसान आन्दोलन के प्रणेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती" शीर्षक लेख को पुस्तिका के रूप में प्रकाशित कर बँटवाया, वही मध्ययुगीन राष्ट्रवादी विचारधारा का पोषक संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रतिदिन अपनी प्रातः प्रार्थना में इन्हें स्मरण करता है।

आजीवन व्यस्त रहने के बाद भी उन्होंने अध्ययन, लेखन और प्रकाशन का कार्य किया। उनकी मुख्य रचनाओं की तालिका इस प्रकार है :—

१—भूमिहार ब्राह्मण परिचय
२—ब्रह्मर्षि-वंश-विस्तार
३—ब्राह्मण कौन ?
४—कर्म-कलाप
५—ब्राह्मण समाज की स्थिति
६—गीता रहस्य
७—झूठा भय; मिथ्या अभिमान
८—किसान कैसे लड़ते हैं ?
९—जमींदारी का खात्मा कैसे हो ?
१०—जमींदारी क्यों उठा दी जाय ?
११—महारूद्र का महातांडव
१२—झारखण्ड के किसान
१३ भूमि व्यवस्था कैसी हो ?
१४—किसान आन्दोलन क्यों और क्या ?
१५—कांग्रेस तब और अब

स्वामीजी ने 'भूमिहार ब्राह्मण' (काशी) तथा लोक संग्रह (समस्तीपुर, पटना) पत्रों का सम्पादन तथा प्रकाशन किया। इनके लेख जनता (पटना) हुंकार (पटना) कल्याण (गोरखपुर) विशाल-भारत (कलकत्ता) में छपते रहे हैं।

श्री सीताराम आश्रम, बिहटा में उनका अपना एक बड़ा पुस्तकालय था। वहीं स्वामीजी से सम्बन्धित सम्पूर्ण सामग्री सुरक्षित थी। स्वामीजी की मृत्यु के बाद बहुत सामग्री अस्त व्यस्त हो गयी। दो पाण्डुलियाँ अमेरिका चली गई थीं। इसकी चर्चा स्वामी विमलानन्द के एक लेख तथा 'स्वामी सहजानन्द सरस्वती; ओंकार से हुँकार तक' शीषक पुस्तक में हुई है। डा० हरिकुँवर राय जिन्होंने मुझे इस लेख के लिए कुछ सामग्री प्रदान की है, बताया कि वे विद्वान् जो स्वामी जी की पाण्डुलिपियाँ अमेरिका ले गये थे वे उसे लेकर लौटाने के लिए भारत आये हैं और दिल्ली में ठहरे हैं। उन्होंने यह सूचना गाजीपुर भेजी है। यह ज्ञात नहीं है कि अभी कोई उन्हें लेने गया या नहीं।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

with BEST COMPLIMENTS from

SHIV PUJAN RAI INDRASHAN RAI

69, MONOHAR DAS STREET

CALCUTTA-700 007

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best Compliments of

IT IS OUR CONSTANT INNOVATION AND RESEARCH
WHICH HAS KEPT US ON PLUS

RELIANCE RESEARCH LAB

35, PRAGRAJ

80/82, ISSAJI STREET
BOMBAY-400 003

PHONES : 033-38 1254
04252-24 668
0542-44 195
0251-54 2598

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

WITH BEST COMPLIMENTS OF

SHREE VINDHYACHAL

MULTIPURPOSE-RESIDESIM COMPLEX

35, DR. ABNI DUTTA ROAD

HOWRAH-1

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

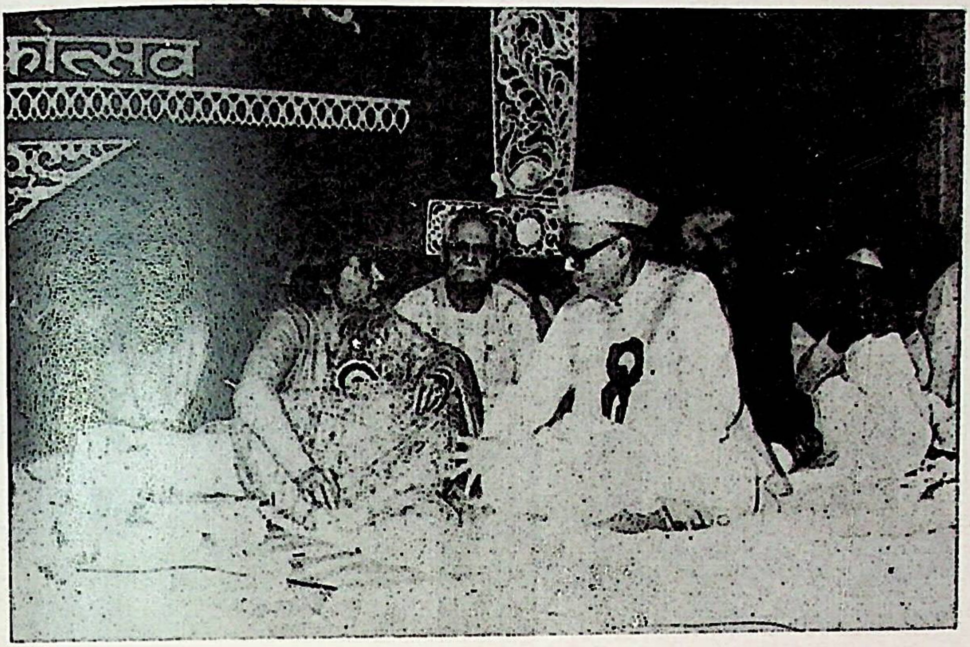

बांये से श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा, श्री कृष्ण कान्त सिंह एवं श्री एल० पी० शाही

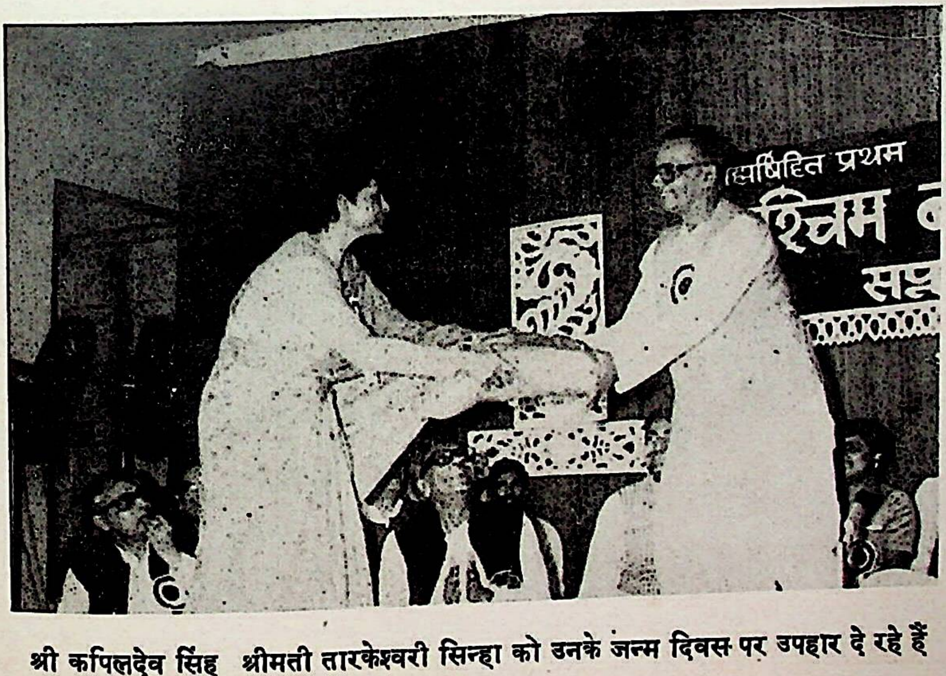

श्री कपिलदेव सिंह श्रीमती तारकेश्वरी सिन्हा को उनके जन्म दिवस पर उपहार दे रहे हैं

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

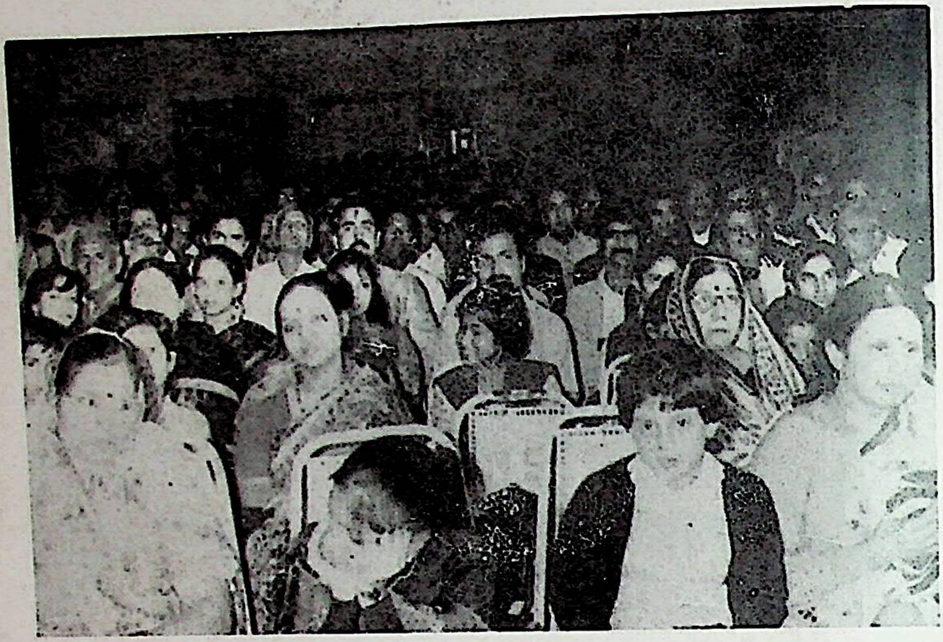

अधिवेशन की झांकी

प्रो० नलनी रंजन सिंह मंत्री विहार सरकार स्मारिका विमोचन करते हुए

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

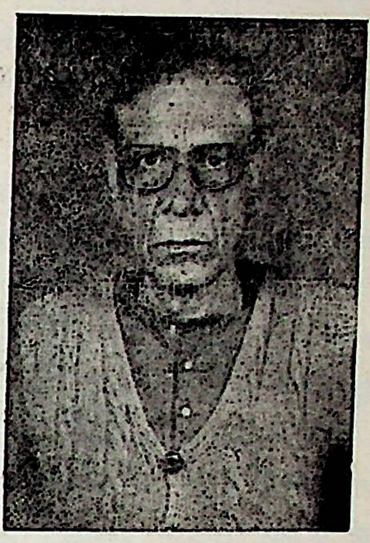

महान क्रान्तिकारी योगेन्द्र शुक्ल

अम्बिका प्रसाद सिंह,
आई० ए० सी० टी० विशारद
उ० प्र० अध्यापक कलकत्ता म्यूनिसिपल कारपोरेशन

किंवदन्ती है कि उनका जन्म १८८६ (अगस्त) मृत्यु १९६४ (कार्तिक) को हुआ था।

अशोक, शेरशाह, महावीर एवं डा० राजेन्द्र प्रसाद की कर्मभूमि बिहार के जलालपुर गाँव, जो वैशाली से दक्षिण १५ कि०मी० दूरी पर स्थित है, महान क्रान्तिकारी योगेन्द्र शुक्ल उन थोड़े लोगों में एक थे जिन्होंने क्रान्तिकारी आन्दोलन को अपने साहसिक कार्यों से गति दी। पूर्व में तो वे गांधीजी के खादी आन्दोलन से अपने को जोड़े रहे। इस बीच उन्हें महात्मा गांधी, जे० पी० कृपलानी तथा राम विनोद सिंह, लक्ष्मीनारायण आदि लोगों के साथ रचनात्मक कार्य करने का अवसर मिला था।

कहा जाता है कि जब वे खादी आन्दोलनसे जुड़े तब वे गांधी आश्रम बनारस में रह रहे थे। उनका सम्पर्क वहीं श्री गोकुल दास तथा चन्द्रशेखर आदि महान क्रान्तिकारियों से हुआ और वहीं इन पर क्रान्ति का केशरिया रंग चढ़ा तो वे खादी कार्य को छोड़कर क्रान्तिकारी आन्दोलन को गति देने लगे। इस कार्य में उन्हें उस जमाने के बीरचन्द पटेल, किशोरी प्रसन्न सिंह, रामपरीक्षण शर्मा, राजेश्वर पटेल, बसावन सिंह तथा सत्यनारायण सिंह एवं जगन्नाथ सिंह आदि ने भरपूर सहयोग दिया और जब योगेन्द्र शुक्ल ने चन्द्रशेखर आजाद तथा सरदार भगत सिंह को बिहार में आने का आमंत्रण दिया तो वे लोग उनकी बात पर बिहार आये। कहा जाता है कि इसी बिहार प्रवास में वे बेतिया के घने जंगलों में भगत सिंह को निशाने बाजी सिखलाते थे। इस दरम्यान योगेन्द्र शुक्ल इन्दौर, ग्वालियर, बम्बई तथा कलकत्ता आदि कई स्थानों में गये, जहां से उन्होंने अगणित रिवाल्वर तथा जीवित कारतूसों का संग्रह किया था।

एक दिन सरदार भगत सिंह को जब उन्होंने अपने हथियारों का जखीरा दिखलाया तो वे बोले—'विप्रदेव के पास इतने हथियार कहाँ से आ गये ?'

सन 1929 में जब लाहौर षड़यंत्र केश चला तो इन्हें भी एक अभियुक्त बनाया गया। वे फरार हो कलकत्ता चले आये। बाद में लाहौर भी। वहीं लाहौर कांग्रेस में गांधीजी तथा कृपलानी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

K. K. PRINTERS

Photo Offset and Letterpress Printers & Designers

12, RADHANATH CHAUDHURY ROAD

CALCUTTA-700 015

Phone : (O) 29-9085/29-7795, (W) 24-5432/24-7840

With best compliments from :

Phone : 22-8136

TIRUPATI TRAVELS & TOURS

Contact for

CARS ON HIRE

50, CHOWRINGHEE ROAD (3rd Floor)

CALCUTTA-700 071

(Near Birla Planatarium)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

से पुनः भेंट हुई। इन लोगों ने पुनः खादी आन्दोलन में वापस चले आने का आमंत्रण दिया, किन्तु धुन के मतवाले कब किसी की बात मानते हैं। जो रंग एक बार चढ़ता है, उतरता कहाँ है ? यहाँ तो बात ही दूसरी थी—'श्याम रंग में रंगी चदरिया कौन दूसरा रंग चढ़ेगा ?' कहा भी गया है—अपना देश वही देखेगा जो अशेष बलिदान करे।

इसी फरारी अवस्था में (सन् 1929) सावन या भादो के महीने में जब वे एक दिन जगत प्रसिद्ध सोनपुर पुल पार कर रहे थे, तो किसी अंग्रेज खैरख्वाह ने पुलिस को इसकी सूचना दे दी। पुलिस ने पुल के दोनों ओर मोर्चेबन्दी कर दी। अब पुलिस पकड़ लेगी यह तय हो गया तो योगेन्द्र शुक्ल सोनपुर पुल पर से बरसात की भरी हुई गंडक नदी में कूद पड़े। जय हे भारत माँ कह नदी के भीतर डुबकी दे विपरीत दिशा की ओर बढ़ने लगे। उस समय उनकी वीरता और अदम्य साहस देखने लायक था। फिर ब्रिटिश पुलिस में इतनी हिम्मत कहाँ जो उनका पीछा करती। वे नदी की तीव्र धारा में तैरते हुये पटना सिटी के मारूफगंज के पूर्व के घाट पर पहुँच गये और उधर पुलिस हाथ मलती रह गयी। फरारी अवस्था में जब वे सारण के सिताब दियारा गाँव में छिपे हुये थे तो किसी देशद्रोही ने उन्हें गिरफ्तार करवा दिया। इस बीच क्रोधित ब्रिटिश पुलिस ने उन्हें बांस में टांग कर दो मोटरों के बीच रखकर बड़े ही अमानुषिक ढंग से छपरा जेल पहुँचाया। छपरा से इन्हें मोतिहारी जेल ले जाया गया। जहाँ एक स्पेशल कोर्ट लगाकर उन पर मुकदमे का स्वांग रचा गया और उन्हें 22 वर्षों की सजा सुनायी गयी। फिर उन्हें भागलपुर जेल सजा भोगने के लिए भेजा गया।

जब तक उन्हें वहाँ रखा गया डंडा बेड़ी पड़ी रही। फिर हजारीबाग जेल। वहीं सी० आई० डी० वालों ने सरकार को यह गुप्त सूचना दी कि क्रान्तिकारी गतिविधि यहाँ भी जारी है। ये लोग कुछ न कुछ षड्यंत्र रचते रहते हैं। फिर उस जेल में रहे बंगाल के नामी क्रान्तिकारी सतीशचन्द्र प्रकाशी को अंडमान भेजने का आदेश हुआ, तो बाद में दिसम्बर सन् 1932 में योगेन्द्र शुक्ल को भी अंडमान भेज दिया गया। वहीं से सन् 1947 में आजादी मिलने पर छोड़े गये।

इस सम्बन्ध में यह प्रसंग भी उल्लेखनीय है कि बिहार के नामी क्रान्तिकारी बैकुंठ शुक्ल ने मुखबिर बने फणीन्द्र के विषय में पूछा कि वह जिन्दा है या मारा गया। उत्तर मिला—'जिन्दा है।'

इस पर उन्होंने उसकी मृत्यु की ओर इशारा कर कहा—'फिर देखते क्या हो ? बैकुंठ शुक्ल उनसे मिलने हजारी बाग जेल आये तो योगेन्द्र शुक्ल ने इशारे से ही हथियार नहीं होने की बात बतलायी, तो इस पर योगेन्द्र शुक्ल ने इशारे से ही कहा—"हाथ, दांत और नाखून तो है।" बाद में उन्हीं बैकुंठ शुक्ल के एक विश्वस्त साथी चन्द्रमा सिंह ने उनके इशारे पर फणीन्द्र को मौत के घाट उतार दिया। इस अपराध में श्री बैकुंठ शुक्ल को चन्द्रमा सिंह के साथ गया जेल में फाँसी दे दी गयी।

योगेन्द्र शुक्ल जिन्दाबाद (संकलित)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

Phone : (O) 38-0602, (R) 39-8342

MAHESH KUMAR & CO.

SALTS IMPORTERE & EXPORTERS & COMMISSION AGENTS
P-185, STRAND BANK ROAD
CALCUTTA-700 070

192

With best compliments from :

Manaksia Containers Limited

8B, Lal Bazar Street, BIKANER BUILDING
(2nd Floor) Calcutta-700 001
Phones : 20-0336/3159/0443/0310

358

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भूमिहार ब्राह्मण

प्रो०—मधुसूदन प्रसाद सिन्हा

एम० ए० शेरिंग ने अपनी पुस्तक "हिन्दू" के प्रथम भाग में "ब्राह्मण जातियाँ" शीर्षक में लिखा है—"इसमें कोई शक नहीं कि जिस प्रकार ब्राह्मण इस समय एक-दूसरे से भिन्न हैं पहले ऐसा नहीं था। मनु के समय तक वे अविभक्त थे। क्योंकि उनकी स्मृति में उनका भिन्न होना पाया नहीं जाता।"

यह सव विदित है कि भगवान परशुराम ने इक्कीस बार क्षत्रियों का विनाश कर सारी पृथ्वी-कश्यप आदि ब्राह्मणों को दान कर दी थी।

"भूजवल भूमि भूप बिनु कीन्हा।
विपुलवार महि देवन दीन्हा॥"

भूमि से सम्वन्ध रखने के कारण ही आगे चलकर भूसुर, भूदेव, भूमिसुर, महिधर, महिपाल, क्षितिपावन आदि शब्द ब्राह्मणों के लिए प्रयुक्त हुए। आचार्य द्रोण भी द्रुपद से राज्य छिनकर आधे भाग के राजा हुए थे। शास्त्रों की शिक्षा भी देते थे और महाभारत युद्ध में सेनापतित्व भी किया था।

महाभारत काल में आचार्य द्रोण, कृपाचार्य, अश्वथामा आदि ब्राह्मणों ने युद्ध में अपूर्व कौशल दिखलाया था। इस प्रकार प्रतिग्रह में प्रवृत और निवृत के आधार पर ब्राह्मणों के दो भेद हो गये। सिर्फ यजन करने वाले प्रवृत (याचक) और प्रतिग्रह से निवृत्त अयाचक हुए। यद्यपि अयाचक वर्ग के भूमिहार ब्राह्मणों में हजारीवाग के चतरा और इटखोरी थाने के भूमिहार ब्राह्मणों का पेशा पुश्त-दर-पुश्त से पुरोहिती है और यही उनके कागजों में लिखा जाता है। विहार सरीफ और नालन्दा के कुछ भूमिहार ब्राह्मण वैश्यों की पुरोहिती करते आ रहे हैं। प्रयाग राज में त्रिवेणी संगम पर सैकड़ों भूमिहार ब्राह्मण दान लेते आ रहे हैं। इसी प्रकार याचक वर्ग के मैथिल ब्राह्मणों में श्रौत्रिय आदि पुरोहिती नहीं करते और अयाचक हैं।

अयाचक ब्राह्मण मगध में ब्राह्मण था उसका अपभ्रंश "वाभन" तिरहुत में पश्चिमीय ब्राह्मण, काशी के आस-पास भूमिहार ब्राह्मण, उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भाग में त्यागी ब्राह्मण. पंजाब में महिपाल ब्राह्मण, कश्मीर में पंडित, उड़ीसा में सरूआ और मस्ताना ब्राह्मण, महाराष्ट्र में चित्पावन ब्राह्मण, गुजरात में सिपाही और अनाविल ब्राह्मण, राजपुताना में गोला पव, मद्रास में अय्यर तथा लौकिक ब्राह्मण, मैसूर में महोसुर ब्राह्मण कहलाते हैं। इनमें वड़े-वड़े सन्त, महात्मा विद्वान, राजनेता, कवि, साहित्यक, राजा-महाराजा तथा समाज सेवक हो गये हैं जैसे स्वामी रामानन्द, गोस्वामी तुलसीदास, श्रीटोडर, श्री नन्द दास, चाणक्य, पुण्य मित्र, श्री वाणभट्ट, श्री कृष्ण चन्दर भट्ट, शेरशाह के प्रधान सेनापति), श्री मनसाराम मिश्र (वर्तमान काशी राज्य के संस्थापक) राजा सुन्दर सिंह (टिकारी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

राज्य के संस्थापक) श्री वालकृष्ण गोखले, श्री वीर दामोदर सावरकर,भाई परमानन्द (प्रसिद्ध क्रान्तिकारी) जहानावाद और नदौल स्टेशनों के बीच चणकिया नामक ब्राह्मणों की एक वस्ती है तथा उसके आस पास चणकिया मूल और काटल्य गोत्र के ब्राह्मण आज भी वर्तमान है जो वाभन या भूमिहार ब्राह्मण कहलाते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि वे चाणक्य की वंश परम्परा में हैं।

भूमिहार ब्राह्मण, ब्राह्मणों की एकता की कड़ी है। भूमिहार ब्राह्मणों के कुछ मूल और गोत्र मैथिल ब्राह्मणों के समान तथा कुछ मूल और गोत्र कान्य कुब्ज या कान्य कुब्ज सरयू पारीण आदि ब्राह्मणों के सदृश हैं। किन्तु मैथिल ब्राह्मणों के समान एक भी मूल न कान्य कुब्ज ब्राह्मणों के हैं और न सरयूपारीण ब्राह्मणों की तरह एक भी मूल मैथिल ब्राह्मणों के हैं।

कान्य कुब्ज आदि ब्राह्मणों की तरह शुक्ल, पाण्डेय, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी आदि उपाधियां मैथिल ब्राह्मणों में नहीं है। इसके विपरीत मैथिल, कान्य कुब्ज, सरयू पारीण, जिझौतिया आदि ब्राह्मणों की तरह उपाधियां भी भूमिहार ब्राह्मणों में समान है। देहाती क्षेत्रों में सभी ब्राह्मणों के लिये बाभन शब्द का प्रयोग भी एकता सूचक है। ब्राह्मणों में दल भेद मिटाने और स्वावलंवन की दृष्टि से भूमिहार ब्राह्मण भी थोड़ी संख्या में अपने ही ब्राह्मण समाज की पुरोहिती करने लगे। यद्यपि सैकड़ों वर्षों से हजारी बाग जिले के चतरा और इटाखोरी थाने के कुछ भूमिहार ब्राह्मण वंश परम्परा से राजपूतों, कायस्थों और माहुरी वैश्यों की पुरोहिती करते आ रहे है और अनेक वाधाओं के वावजूद अपने खानदानी पेशे को न छोड़ सके।

तपस्या भंग होने एवं पुण्य क्षय होने के भय से जिन ब्राह्मणों ने दान त्याग दिया वे दान-त्यागी या केवल त्यागी (तग्गा) कहलायें, जिन्होंने भूमि अधिकार कर अपने जीवकोपार्जन का साधन बनाये। भूम्याधिकारी (बंगाल के कुलीन एवं अधिकारी ब्राह्मण कहा गया, भले ही वे कन्नौज प्रदेश के रहने वाले क्यों न हों। चितपावनों को महाराष्ट्र / गुजरात में जो शासक एवं कृषक ब्राह्मणों की श्रेणी थे, वाभन कहा जाता है। विहार में गंगा के दक्षिणी क्षेत्र एवं बेगू-सराय, भागलपुर, सहरसा, पूर्णिया, पटना, गया आदि जनपदों में बसे भूमिहार ब्राह्मणों को अभी भी बाभन कहा जाता है। कन्नौजिया (सारण में) मालवीय (नवादा में) त्यागी (दुमका में) चितपावन (मुंगेर एवं नवादा में) अनाविल (गिरीडीह में) मूल के भूमिहार ब्राह्मण हैं। चूँकि ब्राह्मण जाति का यह वर्ग कृषक सामंत, शासक एवं राजा हुआ करते थे अतएव इन्हें कहीं-कहीं पालिवाल (प्रजा का पालन करने वाला) भी कहा जाता है। वाजपेय यज्ञ कराने वाले याजी भूमिहार ब्राह्मण वख्तियारपुर एवं सारण जिला में पाये जाते हैं। १६१० ई० तक के निवन्धन कागजातों में जाति ब्राह्मण और पेशा भूमिहार का ही उल्लेख है। स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने ही इन ब्राह्मणों के लिये प्रतिष्ठा सूचक शब्द भूमिहार ब्राह्मण को लोक प्रिय बनाया क्यों कि यही शास्त्र सम्मत है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

भूमि अग्रहार ब्राह्मण - भूमिहार

साप्ताहिक हिन्दुस्तान के १९९२ के २० सितम्बर और तीन अक्टूबर के अंक में 'अथ भूमिहारा गाथा' शीर्षक के एक लेख से एक तथा कथित साहित्यकार ने भूमिहार-ब्राह्मण वंश परम्परा के तथ्यों को तोड़ मरोड़ कर इस समुदाय के लोगों को अनुसूचित जाति अथवा जन जाति से जोड़ने का एक गलत प्रयास किया था। परन्तु, डा० कामेश्वर ओझा ने उक्त लेख को गलत ठहराते हुए साप्ताहिक हिन्दुस्तान के १५ नवम्बर के अंक में 'भूमि अग्रहार ब्राह्मण-भूमिहार' शीर्षक से एक जबरदस्त प्रतितर्क प्रस्तुत कर इस कुत्सित प्रयास का उचित जवाब दिया।

संकलनकर्ता : तारकेश्वर मिश्र

—डा० कामेश्वर ओझा

साप्ताहिक हिन्दुस्तान (दिनांक २७ सितम्बर-३ अक्टूबर अंक) में 'अथ भूमिहार पुराण' शीर्षक लेख ने बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के पाठकों की मानसिकता को ध्यान में रखकर तथाकथित पौराणिक काल से अब तक प्रचलित किंवदन्तियों को भाषाबद्ध कर एक रोचक लेख तो प्रस्तुत किया है पर उसका ऐतिहासिक, भाषा शास्त्रीय एवं वैज्ञानिक विश्लेषण से कोई सम्बन्ध नहीं है। लेखक ने वर्तमान राजनीतिक पृष्ठभूमि में आधुनिक बिहार के जन्मदाता डा० सच्चिदानन्द सिंह, स्वतन्त्रता आन्दोलन के दो प्रमुख जननायक डा० श्री कृष्णा सिंह, डा० अनुग्रह नारायण सिंह, बिहार में साम्यवादी आन्दोलन के नेता स्व० श्री चन्द्रशेखर सिंह एवं श्री इन्द्रदीप सिंह, जमींदारी प्रथा के उग्र विरोधी और किसान आन्दोलन के अगुआ स्वामी सहजानन्द सरस्वती, भारतीय जनता पार्टी के कर्णधारों में एक श्री कैलाशपति मिश्र, राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर, इतिहासकार डा० रामशरण शर्मासीस हस्तियों की पहचान का मापदण्ड जाति ही रखा है। सर गणेशदत्त सिंह जैसे शिक्षा प्रेमी एवं स्वच्छ प्रशासक, जिन्होंने अपने जीवन की कमाई से पटना विश्वविद्यालय में गरीब एवं मेधावी छात्रों की पढ़ाई के लिए कोष तैयार किया, जिससे भूमिहार छात्रों के अतिरिक्त पद्मश्री स्व० डा० दुखनराम, नेत्र विशेषज्ञ, जैसे अनेक अन्य जाति के लोगों ने लाभ उठाया, उन्हें भी केवल भूमिहार नेता करार देने का क्या औचित्य है ? यह सत्य है कि पत्रकारिता की पहचान लोकप्रियता से होती है, परन्तु लोकप्रियता के लिए जातिय राजनीति को प्रोत्साहित करना देश के लिए घातक हो सकता है। और, वह दिन सचमुच अभिशाप का होगा जब सस्ती पत्रकारिता के कारण राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, पंडित जवाहरलाल नेहरू, सरदार बल्लभ भाई पटेल एवं श्री बी० आर० अम्बेडकर जैसे राष्ट्रीय नेता वर्तमान एवं आनेवाली पीढ़ी के लिए जातीय नेता बनकर रह जायेंगे। जातियों के सम्बन्ध में विचार करना समाजशास्त्र एवं इतिहास का काम है न कि पत्रकार का।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

जबसे इतिहास पत्रकारिता की परिधि में आया है, इतिहासकारों एवं समाजशास्त्रियों को विकट समस्या का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि पाठकों के लिए इतिहास विषयक बातें पत्रकारिता के सहज माध्यम से प्राप्त जानकारी के आलोक में सत्य मालूम पड़ने लगती हैं। यही नहीं समाजशास्त्र एवं इतिहास के लेखक भी कभी-कभी इन द्वेषमूलक एवं भ्रामक विचारों के शिकार हो जाते हैं।

लेकिन इस धारा को बहाने में न तो तथाकथित इतिहासकारों का दोष है और न ही पत्रकारों का। यह पूछना स्वाभाविक है कि तब इसके लिए दोषी कौन है? इसका उत्तर सिर्फ एक है—'द्विज जातियों की कबीलाई महासभा।' वर्तमान सदी के पूर्वार्द्ध में इस प्रकार की सभाएँ आयोजित हुआ करती थीं। यह सभा संस्कृति और सभ्यता के व्यापक मूल्यों पर आधारित न होकर संकीर्ण विचारों पर केन्द्रित थी। प्रत्येक प्रकार के ब्राह्मण अपनी निजी सभाओं का गठन कर अपनी श्रेष्ठता स्थापित करने के निमित्त दूसरे ब्राह्मणों पर मनगढ़ंत श्लोकों से प्रहार करते थे। संभव है इसी तरह की धारा पुनः प्रवाहित करने अथवा विहार में भूमिहार ब्राह्मण जाति को आरक्षण की सीमा में लाने का असफल प्रयास किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि सन् ५० ई० के पूर्व इस सदी में अन्य जातियों की भाँति ब्राह्मण वर्ग की उपजातियों की सभा हुआ करती थी—यथा—कान्यकुब्ज ब्राह्मण महासभा, भूमिहार ब्राह्मण महासभा, मैथिल ब्राह्मण महासभा, सनाढ्य ब्राह्मण महासभा, सरयूपारी ब्राह्मण महासभा, तगा ब्राह्मण महासभा आदि-आदि। सभी सभाओं में 'महा' उपसर्ग जुड़ा हुआ था लेकिन महान कार्य न कर उन्होंने अपने उपसर्ग को संकीर्ण बना दिया।'

वैदिक एवं प्राचीन इतिहास के सुधी पाठक इस तथ्य से भलीभाँति अवगत हैं कि हिन्दू शासन-काल में और खासकर विक्रमादित्य के समय (ई० पू० ३०० वर्ष), राजस्व उगाही के लिए अग्रहारी पद्धति चलाई गई थी। चन्द्रगुप्त ने ३२० ई० में इस प्रशासनिक ढांचे को और अधिक मजबूत किया। अग्रहार पद पर प्रायः ब्राह्मणों को, उनकी तत्कालीन सामाजिक, सांस्कृतिक एवं प्रशासनिक श्रेष्ठता को देखते हुए, प्रतिनियुक्त किया जाता था। परिणाम यह हुआ कि यह (अग्रहार) दल आर्थिक रूप से सुखी-सम्पन्न हो गया। देखा-देखी कालान्तर में कर्मकाण्डी ब्राह्मण दक्षिणा में अन्न का अगउ' (अग्रहार) न लेकर अपने जीवन निर्वाह के लिए भूमि ही अग्रहार के रूप में स्वीकार करने लगे—खासकर आभीर सामंतों के समय यह प्रथा प्रकाष्ठा पर पहुँच गई। अस्तु, इन्हें ब्राह्मण की उपजातियों में 'भूमि अग्रहार भोजी ब्राह्मण' की संज्ञा दे दी गई। हालांकि प्रशासनिक रूप में इन्हें ब्राह्मण ही लिखा जाता था। बाबरनामा, जहांगीरनामा और आइने-अकबरी में भी इस श्रेणी के ब्राह्मणों को यथावत् 'ब्राह्मण' के रूप में रखा गया है। अपने साहस, शौर्य एवं वीरता के बल पर समयानुसार शासन की बागडोर भी इन्होंने अपने हाथों में ली। फलस्वरूप संस्कृत के अध्ययन-अध्यापन से सम्पर्क टूट गया। आर्थिक रूप से सम्पन्न होने के साथ-साथ यज्ञादि कराने से निवृत हो गये। सनद रहे कि हिन्दू शासनकाल में सत्ता का मूल केन्द्र पाटलीपुत्र, मगध एवं वैशाली रहा है, जिसके कारण इस क्षेत्र में इस आस्पद के ब्राह्मण बहुसंख्यक हैं। अतएव इस परिप्रेक्ष्य में मेरा सुझाव होगा कि 'भूमिहार पुराण' के लेखक रामायण,

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

महाभारत, स्कन्दपुराण, अत्रिसंहिता, राजतरंगिणी, शतपथ ब्राह्मण, मनुस्मृति, वैदिक इतिहास, प्राचीन भारत के इतिहास तथा समाज शास्त्र के मानक पुस्तकों का अध्ययन करें।

भाषा-शास्त्र के कुछ नियम भी होते हैं जो शब्दों की मात्रा में तय होते हैं, अतएव 'भूमिहार' शब्द का भी भाषा शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत करना ही संतुलित मस्तिष्क के लेखक का परिचायक है। भूमि अग्रहार ब्राह्मण (भूमिहार ब्राह्मण) का जीवश्म भूमिहार है—यह पेशा का वाचक है। कालांतर में देशांतर होने से ध्वनि परिवर्तन होता है जिसमें शब्दों का रूपांतरण हुआ करता है। इन नियमों का अपवाद भी हो सकता है, किन्तु नियमों की व्यापकता को देखते हुए उन्हें सिद्धांत के रूप में स्वीकार तो करना ही पड़ेगा। 'शब्द लाघव' एवं 'उच्चारण लाघव' के सिद्धान्त पर भी।

'भूमि-अग्रहार-भोजी' से 'भूमिहार' शब्द का होना प्रमाणिक तथ्य है। इस रूपांतरण के क्रम में इस शब्द का पर्याय पहले पेशा से और बाद में जाति से हो गया। वर्तमान में अन्य जातियों की भांति यह शब्द पेशामूलक न हो कर जातिसूचक हो गया।

प्रत्यय विशेषार्थ बोधक और सम्बन्ध सूचक होता है जैसे—लोहार (लोहावाला, वैश्य), कुम्हार (कुंभ निर्माण करने वाला, वैश्य), पंजियार (पंजी रखने वाला, ब्राह्मण), पनिहा (सांप), धनहा (खेत), भूतहा (पेड़), तलहा (गांव), खेतहा (लोग), छुतिहा (आदमी), लठिहा (जवान), भतहा (भाई) आदि। इस प्रकार के विशेषण संज्ञा के रूप में भी प्रयुक्त होने लगते हैं। यही स्थिति 'भूमिहार' शब्द की है जो कभी पेशा सूचक था और बाद में जाति सूचक संज्ञा हो गया। इसी प्रकार कान्य कुब्ज, संगावर प्रांतीय, सनाढ्य, चितपावन, अनाविल, पालिवाल, महिवाल (भूमिहार का दूसरा समानार्थक शब्द) मैथिल आदि शब्द कभी स्थान वाचक एवं विशेषण थे, जो कालान्तर में संज्ञा के रूप में व्यवहृत होने लगे। अस्तु भाषा विज्ञान-सम्मत व्युत्पत्ति को छोड़ कर व्यर्थ अनुमान लगाने और दूर की कौड़ी लाने की क्या आवश्यकता ?

मनुस्मृति कथित वर्ण गुणवाचक है जो आध्यात्मिक उत्थान के लिए बनाया गया था। विष्णुपुराण में उल्लेख है कि शुद्र भी तपस्या कर ब्राह्मण को कोटी में पहुँच जाता है और ब्राह्मण भी अपने कुकृत्यों से चण्डाल घोषित कर दिया जाता है, क्षत्रिय से ब्राह्मण, वैश्य से क्षत्रिय बनने का भी वर्णन इस पुराण में आया है। अतएव मनु द्वारा कथित आस्पद वर्णों के गुणवाचक हैं न कि जाति का, जैसे—शर्मा (कल्याण करने वाला), वर्मा (रक्षा करने वाला). गुप्त (धन संग्रह करने वाला) तथा दास (सेवा करने वाला)। परन्तु इन अस्पदों का शायद कभी भी ठीक-ठीक पालन नहीं हुआ जैसे सुशर्मा (क्षत्रिय), कोंकणि वर्मन (ब्राह्मण), विष्णुप्त चाणक्य (ब्राह्मण), उपगुप्त (अशोक का गुरु, ब्राह्मण)। उड़ीसा के ब्राह्मण 'दास' आस्पद वाले हैं, जैसे—विश्वनाथ दास। पहले भी इस प्रकार के नाम थे, जैसे—रामदास, अनंत दास, शिवदास आदि। चूंकि इन चारों वर्णों का गुण कुछ अंश

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

में सभी व्यक्ति में मौजूद रहता है अतएव आध्यात्मिक/धार्मिक दृष्टि से भी प्रतिभूतियों का परिवर्तन होता रहा। मनु के आदेश का पालन अब केवल कर्मकलाप और धार्मिक अनुष्ठान के संकल्पों में ही रह गया है, जैसे—शर्माहम् (सभी प्रकार के ब्राह्मणों के लिए), वर्माह्म (सभी प्रकार के क्षत्रियों के लिए), गुप्तोहम् (सभी प्रकार के वैश्यों के लिए) तथा दासोहम् (सभी प्रकार के शूद्रों के लिए)। अतएव मूल वर्ण की पहचान वर्तमान सामाजिक परिवेश में अब केवल कर्मकलाप में ही रह गया है।

यों तो सम्पूर्ण विश्व ही एक मूल से उत्पन्न है किन्तु गोत्रों का विकास ऋषियों से हुआ है। मुख्य गोत्र १० हैं, किन्तु उनके सैकड़ों गण-गोत्र हुए। गोत्र ऋषि वाचक तथा मूल / डीह स्थान वाचक होते हैं। गोत्र से ऋषि परम्परा एवं मूल से उद्भव स्थान का परिचय प्राप्त होता है। केवल मूल एवं गोत्र के आधार पर वर्तमान जाति व्यवस्था में सामंजस्य ढूंढ़ना वैज्ञानिक दृष्टिकोण नहीं हो सकता क्योंकि एक ऋषि के शिष्य भिन्न-भिन्न जगहों के होते थे तथा एक स्थान पर वर्तमान की कई जातियां एक साथ रहती थीं जिसके कारण उनका मूल भी कभी-कभी एक हो जाता है। उदाहरण के लिए अगोणरिया अवधिया प. चम्पारण के लौरिया एवं चनपटिया के आसपास बसे हुए हैं जबकि अगौथर सारण जिला में पड़ता है तथा वहां अन्य कई जातियां वास करती हैं इसी प्रकार 'टेंटिहा' मूल 'तटिहा' शब्द का, डोमकटार 'द्रुमटेकार' का, जेथरिया (न कि जेठरिया जैसा कि लेखक ने अपने पुराण में लिखा है) 'जयस्थल' का अप्रभ्रंश हैं। सरयू नदी के तट पर वास करने वाले सभी जाति के लोग तटिहा या टेंटिहा कहलाते हैं। बेतिया महाराज जैथरिया ब्राह्मण थे जिनके पूर्वजों ने सन् १३३४ ई० में जेथर (वर्तमान में पूर्वोत्तर रेलवे के मशरक स्टेशन से १ किलोमीटर दक्षिण सारण जिला के अंतर्गत) में शर्की सुल्तानों को पराजित किया था। अतएव यह स्थान 'जयस्थल' से अभिभूत किया गया था जो कालांतर में 'जेथर' हो गया और वहां के निवासियों के लिए 'जैथरिया' शब्द प्रयुक्त होने लगा। वस्तुतः टेकारी महाराज के सखासूत्र जहां भी गये अपने को उच्चारण दोष के कारण डोम-कटार ब्राह्मण कहने लगे जबकि द्रुमटेकार शब्द प्रयुक्त हुआ होगा। द्रोणवार शब्द देशान्तर के लिए प्रयुक्त होता है। देशान्तर रेखा के समीप रहने या द्रोणाचार्य के शिष्य होने के कारण यह मूल अन्य जातियों में भी पाया जाता है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि काशी नरेश महा-महोपाध्याय श्री कृष्ण मिश्र के संतान हैं, यह बात दूसरी है कि उनके वंश में राजा चैत सिंह या जगत सिंह की मां क्षत्रिय मूल की थीं जिसके कारण ब्रिटिश शासकों ने उन्हें वैधानिक उत्तराधिकारी नहीं माना और महाराज की वास्तविक ब्राह्मणी पत्नी से उत्पन्न पुत्र को राज्यारोहण कराया। रीवा नरेश (मध्य प्रदेश, क्षत्रिय जाति के) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गौतम चन्द्रिका' में काशी नरेश को द्विजों में राजा बताया है—'गौतम गोत्र विप्र प्रधाना'।

ब्राह्मणों की उपजातियां उनके कर्मों के आधार पर निर्धारित की गयीं। मनुस्मृति में मुख्य रूप से प्रवृत (याचक) एवं निवृत (अयाचक) दो ही प्रकार के वर्ग विभाजन हैं। याचक (षडकर्मा) तथा अयाचक (त्रिकर्मा) कहे गये हैं। महाभारत के 'शांतिपर्व' में उल्लेख है कि किस प्रकार एक त्रिकर्मा ब्राह्मण तपस्या भंग होने के कारण धर्मराज का दान लेने से इंकार करता है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

स्कन्दपुराण एवं अत्रिसंहिता में नाना प्रकार के ब्राह्मणों का उल्लेख है, जैसे—राजा ब्राह्मण, क्षत्रिय ब्राह्मण, कृषक ब्राह्मण, वैश्य ब्राह्मण, चण्डाल ब्राह्मण आदि। इससे स्पष्ट अनुमान लगाया जा सकता है कि हिन्दू जाति में सभी ब्राह्मण थे जो कालान्तर में कर्म प्रधान विशेषण को धारण कर अलग-अलग उपजातियों में विभाजित हो गये। मनु ने यह प्रयास किया कि इन्हें चार ही वर्णों में व्यवस्थित रखा जाय। मनुस्मृति में यह भी कहा गया है कि ब्राह्मण का नाम पृथ्वी एवं उसके पर्यायवाची शब्दों में होना चाहिये यथा—महिवाल, भूमिहार, चितपावन आदि। मनु ने यह भी स्पष्ट कर दिया है कि ज्ञान विहीन ब्राह्मण शुद्र हैं—

यथा काष्ठामयोहस्तीं यथा चर्ममयों मृगः। यश्च विप्रोऽनधीयान स्त्रयस्ते नाम विभृति ॥ (मनु. २-१५७)

योऽनधीस्य द्विजो वेदमन्यत्र कुरुते श्रमम्। स जीवन्नेव शुद्रत्वमाशु गच्छति सान्वयः ॥ (मनु. २-१६८)

शुद्रो ब्राह्मणतामेति ब्राह्मणश्चैति शुद्रंताम्। क्षत्रियाज्जातमेवं तु विद्याद्वैश्यात्तथैव च ॥ (मनु. १०-६५)

तपस्या भंग होने एवं पुण्य क्षय होने के भय से जिन ब्राह्मणों ने दानत्याग दिया वे दानत्यागी या केवल त्यागी (तगा) कहलाये, जिन्होंने भूमि पर अधिकार कर अपने जीविकोपार्जन का साधन बनाया भूम्याधिकारी (बंगाल के कुलीन एवं अधिकारी ब्राह्मण) कहा गया, भले ही वे कन्नौज प्रदेश के रहने वाले क्यों न हों। चितपावनों को महाराष्ट्र/गुजरात में, जो शासक एवं कृषक ब्राह्मणों की श्रेणी में थे, बाभन कहा जाता है। बिहार में गंगा के दक्षिण क्षेत्र एवं बेगूसराय, भागलपुर, सहरसा, पूर्णिया, पटना, गया आदि जनपदों में बसे भूमिहार ब्राह्मणों को अभी भी बाभन कहा जाता है। कन्नौजिया (सारण में), मालवीय (नवादा में), त्यागी (दुमका में), चितपावन (मुंगेर एवं नवादा में), अनाविल (गिरीडीह में), मूल के भूमिहार ब्राह्मण हैं। चूंकी ब्राह्मण जाति का यह वर्ग कृषक, सामंत, शासक एवं राजा हुआ करते थे अतएव इन्हें कहीं-कहीं पालिवाल (प्रजा का पालन करने वाला) भी कहा जाता है। वाजपेय यज्ञ कराने वाले याजी भूमिहार ब्राह्मण बख्तियारपुर एवं सारण जिला में पाये जाते हैं। १९१० ई० तक के निबंधन कागजातों में जाति ब्राह्मण और पेशा भूमिहार का ही उल्लेख है। संभवतः स्वामी सहजानंद सरस्वती ने ही इन ब्राह्मणों के लिए प्रतिष्ठा सूचक शब्द 'भूमिहार' को लोकप्रिय बनाया क्योंकि यही शास्त्र सम्मत है। समाजशास्त्र एवं भाषाशास्त्र के निष्कर्ष 'जीवाश्मक' सिद्धांत पर भी होते आ रहे हैं, शास्त्रीय अध्ययन में इनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ब्राह्मण वर्णों का नाम उनके यज्ञादिकर्म (पेशा), शिक्षा-दीक्षा और मूल स्थान की भी सूचना देते हैं। मिथिलांचल में इन ब्राह्मणों को 'पश्चिमा-बाभन' ही कहा जाता है। दोगमिया शब्द वस्तुतः 'द्विग्रामी' का अपभ्रंश है—जिन ब्राह्मणों को दो ग्रामों का अग्रहार दिया गया था वे द्विग्रामी कहे जाते थे जो बाद में उच्चारण दोष के कारण दोगमिया हो गया। कालांतर में मैथिलों एवं पश्चिमा बाभनों में शादी संबंध का पर्याय बन गया। लगभग यही स्थिति उत्तर प्रदेश में भी है। 'सिंह' शब्द अंग्रेजी में 'सिन्हा' लिखा जाता है। अस्तु भूमिहार ब्राह्मण पश्चिम से आये ब्राह्मणों एवं मिथिला में बास करने वाले ब्राह्मणों के बीच महत्वपूर्ण सेतु हैं।

जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि आस्पद प्रभृति पेशा एवं गुण के भी द्योतक हैं। ब्रिटिश

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

कालीन उपाधियां इसका प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इस शासनकाल में 'राय बहादुर' की टाइटिल किसी एक कुल, मूल एवं जाति के लोगों को नहीं दी जाती थी। सिंह, ठाकुर, राय, राउत आदि जैसे आस्पद मुसलमानी शासनकाल की देन हैं। ये प्रभृतिमूलक शब्द अधिकार, शासन एवं वीरता आदि के परिचायक हैं। सूफी संतों के समय में 'ठक्कर' गांव विशेष के प्रधान/मुखिया आदि के लिए प्रयुक्त होता था जो बाद में 'ठाकुर' हो गया। ये आस्पद कान्यकुब्ज, सनाढ्य भूमिहार एवं मैथिल ब्राह्मणों के अतिरिक्त अन्य जातियों में भी पाये जाते हैं। आज अपने देश में पद्मश्री या पद्मविभूषण आदि जैसे सम्मानसूचक आस्पद किसी एक जाति, कुल गोत्र के व्यक्ति को नहीं दिया जाता। ब्राह्मण वर्ग के सभी उपजातियों में ओझा और मिश्र आस्पद प्रयुक्त किये जाते हैं जो अन्य जातियों में नहीं हैं। 'उपाध्याय' आस्पद मनुकाल में अध्यापक के लिए प्रयुक्त होता था। कालान्तर में 'उपाध्याय' शिक्षा शुल्क लेने अथवा तन्त्र-मन्त्र विधि (ओझाई) का प्रयोग करने के कारण हीन वृत्ति समझे जाने लगे और इसी कारण 'ओझा' शब्द तांत्रिक या भूत झाड़ने वालों का वाचक बन गया चाहे वे किसी जाति के हों। मिश्र आस्पद पुरोहित वर्ग की उपाधि है—पूजा पाठ कराने तथा दान लेने के कारण उन्हें पुरोहित (याचक) के रूप में स्वीकार किया गया।

इस संदर्भ में यह उल्लेख करना बिल्कुल प्रासंगिक होगा कि पंडित ज्वाला प्रसाद मिश्र विद्यावारिधि अवश्य होंगे लेकिन जिस श्लोक की रचना उनके द्वारा की गई वह बिल्कुल ही शास्त्र सम्मत नहीं है। मनुस्मृति में दशम अध्याय में अनुलोम-प्रतिलोम विवाह से उत्पन्न संतान की वर्ण-व्यवस्था निर्धारित की गई है। अगर क्षत्रिय किसी ब्राह्मण कन्या से शादी करता है तो उससे उत्पन्न संतान 'सूत' कहलायेगा, कन्या की कोई जाति नहीं मानी गई है। सूत का कार्य अश्वपालन करना तथा सारथी होना बताया गया है :—

क्षत्रिययाद्विप्रकन्यायां सूतों भवति जातितः वैश्यानमागधवैदेहो राजविप्रांगना सुतौर (मनु. १०-११)

अगर भूमिहार पुराण के लेखक की यह बात थोड़ी देर के लिए मान भी ली जाये तो परशुराम के साथ घटित घटना केरल/ आंध्र में हुई थी तब तो भूमिहारों का मूल निवास वहीं होना चाहिए था।

पाली ग्रन्थों में वर्णित बौद्ध संघ में रहने वाले सभी सदस्य 'भिक्षु' कहे जाते थे। ऐसा निष्कर्ष निकाला जाता है कि भिक्षाटन वृत्ति का उदय बौद्ध कालीन युग की देन है। श्रुति है कि जगत गुरु शंकराचार्य ने जब पूर्वोत्तर भारत (वर्तमान बिहार, बंगाल तथा उत्तर प्रदेश आदि) में बौद्धों के चुंगल से सनातनधर्मी ब्राह्मणों को मुक्ति दिलाई तो उनकी चल-अचल सम्पत्ति तथा मठों पर इन्हीं अयाचक ब्राह्मणों का अधिपत्य स्थापित हुआ। शंकराचार्य द्वारा स्थापित चार पीठों के पुजारी अयाचक ब्राह्मणों को ही रखा जाता है, यानि दक्षिण के।

अयाचक-यथा —नंबूदरी-उत्तर अवस्थित पीठका (जैसे काठमांडू में पशुपतिनाथ) तथा दक्षिण में स्थापित पीठ यथा—जगन्नाथपुरी का पुजारी उत्तर भारत का अयाचक ब्राह्मण होता है। यह परिपाटी अभी भी चली आ रही है।

अंततः ब्रह्म को जाने वही ब्राह्मण है, मात्र ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होना ब्राह्मण कहलाने का अधिकार नहीं देता। आज जब यह राष्ट्र जाति विहीन समाज एवं धर्मनिरपेक्ष परिकल्पना जैसे महान संकल्पों के साथ २१वीं सदी में प्रवेश करने जा रहा है वैसे समय में जाति विशेष पर चर्चा करना न तो सामयिक है और नहीं राष्ट्र की समस्या है।

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

पश्चिम बंगाल ब्रह्मर्षि परिषद

१६३, बलराम दे स्ट्रीट, कलकत्ता-७०० ००६

आजीवन सदस्य

۞ श्री कल्पनाथ राय
उम्र ३६ गोत्र कृष्णार्थ
पिता स्व० महात्म राय
वर्तमान पता :
१०/४, बागदी पाढ़ा लेन, शिवपुर हावड़ा-२
फोन : ६०-१६४५
स्थायी पता :
मो० निखतिखूद, पो० निखतिकलाँ
जिला सिवान (बिहार)

۞ श्री दिलीप कुमार सिंह
उम्र ३३ गोत्र भारद्वाज
पिता श्री भोला सिंह
वर्तमान पता :
४४, भरपाढ़ा रोड, शालीमार पो० बी० गार्डेन
फोन : ६०-५०२८
स्थायी पता :
पो०+ग्राम सुबई जिला बैशाली

۞ श्री चन्द्रेश्वर प्रसाद सिंह
उम्र ४५ गोत्र साणडिल्य
पिता स्व० राम सिगार सिंह
वर्तमान पता :
२३, देवेन्द्र गांगुली रोड, बी० गार्डेन हावड़ा-२
फोन : ६०-२७५६
स्थायी पता :
ग्राम अंजनी पो० सराय जिला बैशाली

۞ श्री रामेश्वर सिंह
उम्र ५० गोत्र सावर्ण
पिता श्री कान्ता सिंह
वर्तमान पता :
२४३, आन्दुल रोड
फोन : ६०-५२८६
स्थायी पता :
ग्राम+पो० सुमई जिला बैशाली

۞ श्री बेदा नन्द सिंह
उम्र ४१ गोत्र भारद्वाज
पिता श्री अनील सिंह
वर्तमान पता :
२३/१, जगत बनर्जी घाट रोड, शिवपुर हावड़ा-२
फोन : ६०-४०६१
स्थायी पता :
पो०+ग्राम सुमई जिला बैशाली (बिहार)

۞ श्री रबीन्द्र प्रसाद शाही
उम्र ४२ गोत्र परासर
पिता श्री मधुसूदन प्रसाद शाही
वर्तमान पता :
२/२, आर० के० राय चौधरी लेन,
बी० गार्डेन हावड़ा-३
फोन : ६०-१३३१
स्थायी पता :
पो०+ग्राम आषढ़ जिला सिवान (बिहार)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ श्री राजेन्द्र प्रसाद शाही

उम्र ४५ गोत्र परासर

पिता श्री मधुसूदन प्रसाद शाही

वर्तमान पता :

४७, भारपाड़ा रोड, शिवपुर हावड़ा-३

फोन : ६०-१३३६

स्थायी पता :

ग्राम+पो० आपड़ जिला सिवान (बिहार)

❁ श्री शैलनाथ राय

उम्र ६० गोत्र सांकृत

पिता स्व० राजाराम राय

वर्तमान पता :

कृष्ण कुंज, पो० सरकारपूल

फोन : ७१-४७३२

स्थायी पता :

बजबज ट्रंक रोड,

जिला २४ परगना (दक्षिण) प० बं०

❁ श्री प्रेम शंकर राय

उम्र ३५ गोत्र सांकृत

पिता श्री शैलनाथ राय

वर्तमान पता :

कृष्ण कुंज, पो० सरकारपूल

फोन : ७१-४७३२

स्थायी पता :

बजबज ट्रंक रोड,

जिला २४ परगना (दक्षिण) प० बं०

❁ श्री शत्रुघ्न सिंह

उम्र ३० गोत्र कश्यप

पिता श्री त्रिक्षानन्द सिंह

वर्तमान पता :

४६/५/१, सी० जी० आर० रोड, कलकत्ता-२३

फोन : ७१-४७३२

❁ श्री रमाशंकर मिश्रा

उम्र ४५ गोत्र भारद्वाज

पिता स्व० सकलदीप मिश्रा

वर्तमान पता :

C/o. कारगो लाइनर्स

२०, स्ट्रैण्ड रोड, कलकत्ता-१

फोन : २०-६०६८, २०-३६७५

❁ श्री रामव्यास राय

उम्र ३५ गोत्र वशिष्ठ

पिता श्री रामचन्द्र राय

वर्तमान पता :

C/o. कारगो लाइनर्स

२०, स्ट्रैण्ड रोड, कलकत्ता-१

फोन : २०-६०६८, २०-३६७५

स्थायी पता :

❁ श्री सुवंश राय

उम्र ५५ गोत्र सांकृत

पिता स्व० सामरथि राय

वतमान पता :

कृष्ण कुंज, पो० सरकारपूल

फोन : ७१-४७३२

स्थायी पता :

बजबज ट्रंक रोड,

जिला २४ परगना (दक्षिण) प० बं०

❁ श्री सुनील कुमार पाण्डे

उम्र ३० गोत्र वत्स

पिता श्री किशोरी प्रसाद पाण्डे

वर्तमान पता :

४६/५/२३०/एच०, सी० जी० आर० रोड,

कलकत्ता-२३

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

۞ श्री कन्हैया प्रसाद सिंह
उम्र ६१ गोत्र भारद्वाज
पिता स्व० सहदेव सिंह
वर्तमान पता :
१२५ बज-बज रोड,
पो० सरकार पुर, २४ परगना (दक्षिण)
ऑफिस :
जरसन ट्यूब्रो लिमिटेड
गोपाल पुर, २४ परगना (दक्षिण)

۞ श्री बृज गोपाल राय शर्मा
उम्र ३४ गोत्र भारद्वाज
पिता श्री राम मूरत राय शर्मा
वर्तमान पता :
६, शालीमार, कोल डिपो हावड़ा
स्थायी पता :
ग्राम बसीरहा पो० गंभीरपुर, जि० आजमगढ़

۞ श्री पारसनाथ ठाकुर
उम्र ५२ गोत्र भारद्वाज
पिता स्व० शिव स्वरूप ठाकुर
वर्तमान पता :
सी/ओ० श्री द्वारिका नाथ ठाकुर
स्थायी पता :
बाग मोड़, पो० कचरापाड़ा
जिला २४ परगना (उत्तर)

۞ श्री द्वारिका नाथ ठाकुर
उम्र ६० गोत्र भारद्वाज
पिता स्व० शिव स्वरूप ठाकुर
वर्तमान पता :
बाग मोड़, पो० कचरापाड़ा
जिला २४ परगना (उत्तर)

۞ श्री गया शंकर राय
उम्र ५७ गोत्र वत्स
पिता स्व० आर० डी० राय
स्थायी पता :
ग्राम वैरमपुर, थाना जमनीया,
पो० देवरीया जिला गाजीपुर (यू० पी०)

۞ श्री राजमंगल सिंह
उम्र ५१ गोत्र भारद्वाज
पिता स्व० किशुन सिंह
वर्तमान पता :
१६, कोल वर्थ, कलकत्ता-४२
फोन : ४६-११६५

۞ श्री ओम प्रकाश राय
उम्र ५५ गोत्र सावर्ण
पिता स्व० आर० डी० राय
वर्तमान पता :
टनटी गरीया मिदनापुर
फोन : ३१५२-०२६५४

۞ श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह
उम्र ४४ गोत्र कश्यप
पिता स्व० विरेश्वर सिंह
वर्तमान पता :
२६४, राम कमल स्ट्रीट
फोन : ४६-४०७६ घर/३३-२०८१
स्थायी पता :
ग्राम खनपुर, पो० खटौरा, वाराणसी

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री कामेश्वर प्रसाद शर्मा
उम्र ३६ गोत्र काश्यप
पिता श्री गया प्रसाद शर्मा
वर्तमान पता :
४८ए, सी० जी० आर० रोड, कलकत्ता-२३
फोन : ४६-५६७२
स्थायी पता :
ग्राम फूलाढ़, पो० मन्सूरपुर, वैशाली

श्री राजदेव शर्मा
उम्र ६४ गोत्र कौशिडल्य
पिता श्री प्रकाश शर्मा
वर्तमान पता :
७, जवाहरलाल नेहरु रोड, कलकत्ता-१३
फोन : २८-३४५६/२८-३०१६
स्थायी पता :
ग्राम देवघरा, जहानावाद (बिहार)

श्री प्रह्लाद राय
उम्र ५५ गोत्र वत्स
पिता स्व० कमला राय
वर्तमान पता :
६६, मनोहर दास स्ट्रीट, कलकत्ता-६
फोन : ३८-२०६४
स्थायी पता :
मलसा, गाजीपुर

श्री किरण शंकर राय
उम्र २५ गोत्र वत्स
पिता श्री राजनेत राय
वर्तमान पता :
१७, वोन विहारी वसु रोड, हावड़ा-७११२०१
फोन : २०-८३४६
स्थायी पता :
ग्राम ढ़ढ़नी पूरापर, पो० ढ़ढ़नी
जिला गाजीपुर, उत्तर प्रदेश-२३२३३६

श्री मारूति शर्मा
उम्र २० गोत्र सावर्ण
पिता स्व० देवेन्द्र शर्मा
वर्तमान पता :
५७/४ए, कालेज स्ट्रीट, कलकत्ता-४३
फोन : ३२-४०१४
स्थायी पता :
ग्राम बिह्टा, जिला पटना

श्री कृष्ण गोपाल सिन्हा
उम्र ४७ गोत्र परासर
पिता स्व० जोगेन्द्र सिंह
वर्तमान पता :
१६३, बलराम दे स्ट्रीट, कलकत्ता-६
फोन : ३०६२६३
स्थायी पता :
ग्राम+पो० खव्सी, जिला सारन, बिहार

श्री अनय गोपाल सिन्हा
उम्र ४४ गोत्र परासर
पिता स्व० जोगेन्द्र सिंह
वर्तमान पता :
१६३, बलराम दे स्ट्रीट, कलकत्ता-६
फोन : ३०-६२६३/३३-१६५१
स्थायी पता :
ग्राम+पो० खव्सी, जिला सारन, बिहार

श्री वृन्दावन राय
उम्र ४३ गोत्र सांकृत
पिता श्री हर्षदेव राय
वर्तमान पता :
२४२, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-६
स्थायी पता :
ग्राम+पो० रेवतीपुर, जिला गाजीपुर, उ०प्र०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ श्री शिवानन्द राय
उम्र ३६ गोत्र काश्यप
पिता स्व० राम गोविन्द राय
वर्तमान पता :
१८, डबसन रोड, हावड़ा
फोन : ६०-५२१४
स्थायी पता :
ग्राम सातोसेमरी, जिला बक्सर, बिहार

❁ श्री राजेन्द्र तिवारी
उम्र २८ गोत्र सांडिल्य
पिता श्री देवनाथ तिवारी
वर्तमान पता :
१८, डबसन रोड, हावड़ा
फोन : ६०-५२१४
स्थायी पता :
ग्राम बरिसवन, जिला भोजपुर, बिहार

❁ श्री जगदीश पाण्डेय
उम्र ५४ गोत्र काश्यप
पिता स्व० हरिवंश पाण्डेय
वर्तमान पता :
४७, भैरव दत्त लेन, हावड़ा
स्थायी पता :
ग्राम+पो० सातोसेमरी, जिला बक्सर, बिहार

❁ श्री रंजन कुमार शर्मा
उम्र गोत्र सांडिल्य
पिता श्री उमेश प्रसाद शर्मा
वर्तमान पता :
३५, डा० अवनी दत्त रोड
स्थायी पता :
ग्राम बावन बिघा, पो० रमना
जिला मुजफ्फरपुर

❁ श्री रामप्रसाद पाण्डेय
उम्र ५० गोत्र काश्यप
पिता श्री श्रीराम पाण्डेय
वर्तमान पता :
४१, भैरव दत्त लेन, हावड़ा
फोन : ६५-६७८४
स्थायी पता :
ग्राम+पो० सातोसेमरी, जिला बक्सर, बिहार

❁ श्री अभिमन्यू कुमार राय
उम्र ४५ गोत्र भरद्वाज
वर्तमान पता :
५५२, जी० टी० रोड, हावड़ा

❁ श्री विजय कुमार सिंह
उम्र ४० गोत्र वत्स
पिता श्री शत्रुघ्न प्रसाद सिंह
वर्तमान पता :
३/४, चिन्तामणि दे रोड
फोन : ६८-८३७६
स्थायी पता :
ग्राम पबरा, पो० मन्फौल
जिला बेगूसराय, बिहार

❁ श्री सुरेश पाण्डेय
उम्र ५५ गोत्र परासर
पिता स्व० आदित्य पाण्डेय
वर्तमान पता :
५५२, जी० टी० रोड, हावड़ा
फोन : ६०-५५२८/६०-१४६३
स्थायी पता :
ग्राम+पो० नैनीजोर, जिला बक्सर

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री जगरनाथ राय
उम्र ४५ गोत्र काश्यप
पिता श्री चन्द्र राय
वर्तमान पता :
२४, रोजमेरी लेन, हावड़ा
फोन : ६०-१६७२
स्थायी पता :
ग्राम+पो० बहोरनपुर, जिला भोजपुर, बिहार

श्री राजनारायण राय
उम्र गोत्र काश्यप
पिता स्व० सिद्धनाथ राय
वर्तमान पता :
२४, रोजमेरी लेन, हावड़ा
स्थायी पता :
ग्राम+पो० बहोरनपुर,
जिला भोजपुर, बिहार

श्री रमाशंकर राय
उम्र ४४ गोत्र काश्यप
पिता श्री चन्द्रदेव राय
वर्तमान पता :
२४, रोजमेरी लेन, हावड़ा
स्थायी पता :
ग्राम गड़ेरिया, पो० लालगंज, बलिया

श्री अनिल कुमार तिवारी
उम्र २७ गोत्र सांडिल्य
पिता श्री मदन प्रसाद तिवारी
वर्तमान पता :
५, जी० टी० रोड, नार्थ
स्थायी पता :
ग्राम+पो० सूर्यमानपुर
जिला बलिया, उ० प्र०

श्री महेश कुमार शर्मा
उम्र ४० गोत्र गौतम
पिता श्री सियाशरण शर्मा
वर्तमान पता :
३, जानकीदास लेन
फोन : ३६-८३४२
स्थायी पता :
ग्राम देवघरा, पो० धनगांवा
जिला जहानाबाद

श्री काशी प्रसाद राय
उम्र ४२ गोत्र भारद्वाज
पिता श्री यदुवंश राय
वर्तमान पता :
१२, नूरमल लोहिया लेन, कलकत्ता
फोन : ३८-६५१२/६०-०८१६
स्थायी पता :
ग्राम बरसरुआ, पो० बहादुरपुर
जिला आजमगढ़, यू० पी०

श्री अनिल कुमार तिवारी
उम्र ३२ गोत्र सेण्डल
पिता श्री मदन प्रसाद तिवारी
वर्तमान पता :
३६, जी० टी० रोड, हावड़ा
फोन : ६८-२०१५
स्थायी पता :
ग्राम+पो० सूर्यमानपुर, बलिया, यू० पी०

श्री विन्देश्वरी तिवारी
उम्र ४३ गोत्र गौतम
पिता श्री जगरनाथ तिवारी
वर्तमान पता :
४१ए, गिरीशपार्क, कलकत्ता
स्थायी पता :
ग्राम सलखूयां, पो० अपहर, जिला छपरा

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ श्री कमल प्रसाद राय
उम्र ५३ गोत्र सांकृत
पिता स्व० सहदेव राय
वर्तमान पता :
२५६ए, रवीन्द्र सरणी, कलकत्ता-६
फोन : ३६-७१२२
स्थायी पता :
ग्राम+पो० रेवतीपुर, जिला गाजीपुर, उ०प्र०

❁ श्री रामबिलास राय
उम्र ५३ गोत्र सांकृत
वर्तमान पता :
४८, डबसन रोड, हावड़ा
स्थायी पता :
ग्राम+पो० रेवतीपुर, जिला गाजीपुर, उ०प्र०

❁ श्री शिवजन्म राय
उम्र ५१ गोत्र वत्स
पिता स्व० लालता प्रसाद राय
वर्तमान पता :
४५बी, वाराणसी घोष स्ट्रीट, कलकत्ता-७
फोन : ३६-३१६७
स्थायी पता :
ग्राम+पो० जीवपुर, जिला गाजीपुर, उ०प्र०

❁ श्री ब्रजराज राय
उम्र ४८ गोत्र वत्स
पिता श्री सूरज राय
वर्तमान पता :
१०, राय लेन
स्थायी पता :
ग्राम मतसा, पो० जीवपुर
जिला गाजीपुर, उ० प्र०

❁ श्री रामकृपाल मिश्रा
उम्र ७२ गोत्र कौसिक
पिता स्व० देवधारी मिश्र
वर्तमान पता :
४१, शैल कुमार मुखर्जी रोड, हावड़ा
फोन ६०-३१६५
स्थायी पता :
ग्राम सरौचा, पो० वौसी, जिला वाकां

❁ श्री ब्रजभूषण सिन्हा
उम्र २८ गोत्र सावर्ण
पिता श्री सुदामा प्रसाद सिन्हा
वर्तमान पता :
२६३, रविन्द्र सरणी, कलकत्ता-६
फोन : ३६-६५७०
स्थायी पता :
ग्राम मझवलिया, पो० हरिहरपुर, छपरा

❁ श्री रामअवतार राय
उम्र ५० गोत्र सांकृत
पिता स्व० विश्वनाथ राय
वर्तमान पता :
१२७, बलराम दे स्ट्रीट, कलकत्ता-६
स्थायी पता :
ग्राम+पो० डेढ़गांवा, जिला गाजीपुर, उ०प्र०

❁ श्री शिवजी पाण्डेय
उम्र ४० गोत्र भरद्वाज
पिता श्री केदारनाथ पाण्डेय
वर्तमान पता :
८/२, जगमोहन मल्लिक लेन
फोन : ३८१६०५
स्थायी पता :
ग्राम+पो० भोजापुर, पो० बैरिया
जिला बलिया

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ श्री जगदीश राय

उम्र ५० गोत्र काश्यप

पिता श्री दीनानाथ राय

वर्तमान पता :

२१/१, रामलाल मुखर्जी लेन

फोन : ऑफिस : ३०-४२४३, घर : ६५-३५६८

स्थायी पता :

ग्राम+पो० नरायनपुर, जिला बलिया, उ०प्र०

❁ श्री अमृतेश कुमार राय

उम्र ३६ गोत्र काश्यप

पिता श्री ब्रजविहारी राय

वर्तमान पता :

ब्रह्मदेव ग्रंथागार

३५२, जी० टी० रोड, नार्थ

सलकिया, हावड़ा

स्थायी पता :

ग्राम+पो० गोड़डर, जिला गाजीपुर, उ०प्र०

❁ श्री नन्दकिशोर राय

उम्र ३६ गोत्र परासर

पिता श्री परमा राय

वर्तमान पता :

४८, डवसन रोड, हावड़ा

फ़ोन : ६०-०१५०

ग्राम+पो० लौंवा, जिला छपरा, बिहार

❁ डा० अरुण कुमार राय

उम्र ३५ गोत्र सांकृत

पिता श्री संकठा प्रसाद राय

वर्तमान पता :

४६/१, डवसन रोड, हावड़ा

फोन : ६००१३७

स्थायी पता :

ग्राम+पो० डेढ़गांवा, गाजीपुर, उ० प्र०

❁ श्री सुबासचन्द्र राय

उम्र ४८ गोत्र वत्स

पिता श्री मारकण्डेय राय

वर्तमान पता :

४१८/३, जी० टी० रोड, हावड़ा

स्थायी पता :

ग्राम+पो० सैदाबाद, जिला गाजीपुर, उ०प्र०

❁ श्री दीनानाथ पाण्डेय

उम्र ४८ गोत्र काश्यप

पिता स्व० भगवान पाण्डेय

वर्तमान पता :

६, वाटकिन्स लेन, हावड़ा

फोन : ६०-४३०१, ६०-१७३३ पी.पी.

स्थायी पता :

ग्राम+पो० सातोसेमरी, जिला बक्सर

❁ श्री अनिल पाण्डेय

उम्र ३० गोत्र काश्यप

पिता श्री दीनानाथ पाण्डेय

वर्तमान पता :

६, वाटकिन्स लेन, हावड़ा

फोन : ६०-४३०१

स्थायी पता :

ग्राम+पो० सातोसेमरी, जिला बक्सर

❁ श्री अशोक कुमार पाण्डेय

उम्र ३५ गोत्र भारद्वाज

पिता स्व० रमाशंकर पाण्डेय

वर्तमान पता :

एच० पी० लेन, प्लोट नं० १ (ऑनर)

फोन : ६५-०६५३

स्थायी पता :

ग्राम+पो० भुवालछपरा, पो० वैरिया

जिला बलिया

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री नन्दलाल राय
उम्र ३० गोत्र गौतम
पिता श्री बालेश्वर राय
वर्तमान पता :
ट्रैक्टर इण्डिया मर्नर
धनबाद, कोयला नगर
स्थायी पता :
ग्राम कठउत, पो० गौसपुर
जिला गाजीपुर, उ० प्र०

डा० के० के० राय
उम्र ५२ गोत्र किन्नवार
पिता धनपत राय
वर्तमान पता :
मेलधू_वा (रांची)
दूरभाष : ४०-८२६१
स्थायी पता :
सरेजा बाजार, जिला बक्सर, बिहार

श्री कृष्णकान्त राय
उम्र ४२ गोत्र भारद्वाज
पिता स्व० दूधनाथ राय
वर्तमान पता :
मेसर्स बेंगाल पेपर मील लि०
रानीगंज, वर्दवान
स्थायी पता :
ग्राम+पो० पटकनियाँ,
जिला गाजीपुर, उ० प्र०

श्री रामचीज राय जी
उम्र ६० गोत्र सकरवार
पिता श्री रामधारी राय
वर्तमान पता :
ग्राम+पो० जलहरा, जिला बक्सर, बिहार
स्थायी पता : उपरोक्त

श्री रमेशचन्द्र राय
उम्र ५३ गोत्र सकरवार
पिता श्री शिवपूजन राय
वर्तमान पता :
Near Rajabazar, Opp. Union Park
Rally Road, Patna-4
दूरभाष : ७३-०५१४
स्थायी पता :
पो० सगरा, जिला बक्सर, बिहार

श्री बिजय नारायण राय
उम्र ५२ गोत्र गौतम
पिता स्व० दलगंजन राय
वर्तमान पता :
Sec-IX, Flate No. 6328
Vasant Kunj, New Delhi-110037
स्थायी पता :
ग्राम+पो० पुरैना, जिला गाजीपुर, उ० प्र०

श्री केशव प्रसाद राय
उम्र ५५ गोत्र किलवार
पिता हृदय नारायण राय
वर्तमान पता :
ग्राम+पो० पचोखर, जिला गाजीपुर, उ० प्र०
स्थायी पता : उपरोक्त

श्री उदयनारायण राय
उम्र—४२ गोत्र भारद्वाज
पिता—स्व० परमानन्द राय
वर्त० पत्ता : रीलायंस रीसर्च लैब
८०/८२ ईसा जी स्ट्रीट, बम्बई-४००००३
स्थायी पता : ग्राम+पो०—पटकनियाँ
जि० : गाजीपुर (उ० प्र०)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ श्री तारकनाथ पाण्डेय

उम्र ४०   गोत्र भारद्वाज

पिता श्री मोहन पाण्डेय

वर्तमान पता :

१३सी, सिकदरपाड़ा लेन, कलकत्ता

स्थायी पता :

भोजपुर, जिला बलिया

❁ श्री विश्वनाथ सिन्हा

उम्र ५१   गोत्र काश्यप

पिता श्री शिव नाथ सिंह

वर्तमान पता :

१८, इजरा स्ट्रीट,

१/१, सत्येन दत्ता लेन, कलकत्ता-२६

दूरभाष : कार्यालय : २६१४२१, २६६१७७

" : आवास : ७६२०१६, ७६२३६५

स्थायी पता :

ग्राम : चिन्तामनीपुरी, वैशाली

❁ श्री हरि शंकर सिंह

उम्र ६०   गोत्र भारद्वाज

पिता स्व० युगलधारी सिंह

वर्तमान पता :

४३२, जी० टी० रोड,

दूरभाष : ६०३६४६

स्थायी पता :

ग्राम : सुगई, जिला : वैशाली

❁ श्री नागेन्द्र राय

उम्र ३२   गोत्र पराशर

पिता स्व० राम वृक्ष राय

वर्तमान पता :

४, टोटी लेन, दूरभाष : २३०२५२

स्थायी पता : ४, टोटी लेन

❁ श्री राम नारायण ठाकुर

उम्र ५६   गोत्र सावर्ण

पिता स्व० साधु ठाकुर

वर्तमान पता :

५१०, जोधपुर पार्क, कलकत्ता-६८

दूरभाष : ७३०१२६

स्थायी पता :

ग्राम : द्रोणपुर, पो० : झपहाँ

जिला : मुजफ्फरपुर

❁ श्री नाथ सिंह C/o एस० डी० इलेक्ट्रीक क०

उम्र ४०   गोत्र साण्डिल्य

पिता शिव दयाल सिंह

वर्तमान पता :

४०, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता-१

दूरभाष : २६१०४३

स्थायी पता :

१०१, तालतल्ला लेन, कलकत्ता-१४

❁ श्री अखिलेश सिंह

उम्र ४८   गोत्र शाण्डिल्य

पिता श्री राम दयाल सिंह

वर्तमान पता :

५, महेन्द्र सरकार स्ट्रीट, कलकत्ता-१२

दूरभाष : २६४७७३

स्थायी पता :

३४, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता-१

❁ श्री महेश भट्ट

उम्र ५७   गोत्र कौशिक

पिता श्री वासुदेव भट्ट

वर्तमान पता :

४८, इण्डियन मिरर स्ट्रीट

स्थायी पता :

४८, इण्डियन मिरर स्ट्रीट

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री शिव शंकर शाही
उम्र ४२ गोत्र शाण्डिल्य
पिता स्व० अमर नाथ शाही
वर्तमान पता :
शाही इलेक्ट्रीक क०
३४, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता-१
दूरभाष : २७०१६५
स्थायी पता :
३४, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता-१

श्री नन्द कुमार राय
उम्र ४५ गोत्र सावर्ण
पिता स्व० मुसाफिर राय
वर्तमान पता :
२१, खेत्र मित्रा लेन, सलकिया हावड़ा-६,
दूरभाष : २६-२९२०
स्थायी पता :
ग्राम+पो० नरही, जिला बलिया, (उ० प्र०)

श्री नर्बदेश्वर राय
उम्र ५३ गोत्र भारद्वाज
पिता स्व० दूध नाथ राय
वर्तमान पता :
स्थायी पता :
ग्राम+पो० पटकनियाँ,
जिला गाजीपुर (उत्तर प्रदेश)

श्री मोती लाल राय
उम्र ४८ गोत्र भारद्वाज
पिता स्व० राम प्रतीत राय
वर्तमान पता :
९९, यू० पी०, बी० एन० एन०
सी० सी० आजमगढ़
स्थायी पता :
ग्राम+पो० पटकनियाँ, जिला गाजीपुर (उ० प्र०)

श्री तारकेश्वर प्रसाद सिंह
पिता शिव दयाल सिंह
५५, तारक इलेक्ट्रीक हाउस
उम्र ३२ गोत्र शाण्डिल्य
वर्तमान पता :
३४, इजरा स्ट्रीट, कलकत्ता-१
दूरभाष : २६४७३४
स्थायी पता :
६५/सी०, बेलतल्ला रोड,
पो० : भवानीपुर, कलकत्ता-२६

श्री रामप्रीत राय
उम्र ५६ गोत्र सांकृत (सकरवार)
पिता स्व० विश्वनाथ राय
वर्तमान पता :
स्थायी पता :
ग्राम राजापुर, पो० गोसाईपुर, जिला बक्सर

श्री कृपा शंकर राय
उम्र ४२ गोत्र किन्नवार
पिता स्व० गिरजा शंकर राय
वर्तमान पता :
पीपरपाती रोड, बक्सर
स्थायी पता :
ग्राम+पो० सुखडेहरा, जिला गाजीपुर (उ० प्र०)

श्री धर्मदेव राय
उम्र ६० गोत्र किन्नवार
पिता श्री राम दरश राय
वर्तमान पता :
स्थायी पता :
ग्राम उत्तम पुर, पो० हेठुआ राजपुर
जिला बक्सर (बिहार)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

श्री विजय कान्त राय
उम्र ५६ गोत्र किन्नवार
पिता स्व० इन्द्रासन राय
वर्तमान पता :
स्थायी पता :
ग्राम+पो० अर्जून पुर, जिला बक्सर (बिहार)

श्री नन्द किशोर राय
उम्र ३० गोत्र शाण्डिल्य
पिता श्री महात्तम राय
वर्तमान पता :
डी०/६१/४३८ सीध क्वार्टर
दूरभाष : ५३२३३
स्थायी पता :
उपरोक्त वाराणसी (उ० प्र०)

श्री राम चन्द्र राय
उम्र ६० गोत्र सकरवार
पिता स्व० जगरदेव राय
वर्तमान पता :
स्थायी पता :
ग्राम+पो० शेरपुर कला
(पश्चिम पट्टी) गाजीपुर (उ० प्र०)

श्री गुप्तेश्वर राय
उम्र ४५ गोत्र सकरवार
पिता स्व० महंगू राय
स्थायी पता :
ग्राम राजापुर, पो० गोसाईपुर,
जिला बक्सर (बिहार)

श्री विश्वनाथ राय (पश्चिम टोला)
उम्र ६५ गोत्र सकरवार
पिता श्री राधा किशुन राय
स्थायी पता :
ग्राम+पो० रेवतीपुर, जिला गाजीपुर, (उ०प्र०)

श्री शुभ्रमनियम नाम्वीयर
उम्र ६० गोत्र जमदागनी
पिता स्व० शंकरन नाम्वीयर (नाम्वीयर शाखा)
वर्तमान पता :
C/o श्री नन्दी दे
स्थायी पता :
ओल्ड मादस रोड, विरगोनगर
बंगलोर-५६००४९

श्री विक्रम शर्मा चुकवाला
उम्र १९ गोत्र भारद्वाज
पिता श्री महेन्द्र शर्मा चुकवाला
वर्तमान पता :
लाल कमल बिल्डिंग, न्यू अलीपुर
स्थायी पता :
Panki Industrial Area, Kanpur

श्री बच्चन राय
उम्र ५५ गोत्र सकरवार
पिता स्व० चन्द्रदेव राय
स्थायी पता :
ग्राम+पो० सुहवल, जिला गाजीपुर, बिहार

श्री बालेश्वर राय
उम्र ५८ गोत्र गौतम
पिता स्व० भागीरथी राय
वर्तमान पता :
मेसर्स तीरुपती जूट मील
दूरभाष : ६०-१४४६
स्थायी पता :
ग्राम कठउत, पो० गौसपुर
जिला गाजीपुर, उ० प्र०

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ श्री अशोक कुमार पाण्डेय

उम्र ३५ गोत्र भारद्वाज

पिता स्व० रमाशंकर पाण्डेय

वर्तमान-पता :

एच० पी० लाईन प्लाट न० १, हवड़ा

दूरभाष : ६५०६५३

स्थायी पता :

ग्राम : भुवाल छपरा

पो० बैरीया. जिला बलिया

❁ श्री शिवानन्द राय

उम्र ३६ गोत्र काश्यप

वर्तमान पता :

१८, डबसन रोड, हवड़ा

दूरभाष : ६०५२१४

स्थायी पता :

ग्राम+पो० सातो सेमरी

जिला बक्सर, बिहार

❁ श्री राजेन्द्र तिवारी

उम्र २८ गोत्र शाण्डिल्य

वर्तमान पता :

१८, डकसन रोड, हवड़ा दूरभाष : ६०५२१४

पिता देवनाथ तिवारी

स्थायी पता :

ग्राम+पो० : वीरसबन, जिला भोजपुर, बिहार

❁ श्री जगदीश पाण्डेय

उम्र ५४ गोत्र काश्यप

पिता स्व० हरिवंश पाण्डेय

वर्तमान पता :

४७, भैरव दत्त लेन, हवड़ा

स्थायी पता :

ग्राम पो० : सातो सेमरी

जिला बक्सर, बिहार

❁ श्री रंजन कुमार शर्मा

उम्र गोत्र शाण्डिल्य

पिता श्री उमेश प्रसाद शर्मा

वर्तमान पता :

३५, डाक्टर अवनी दत्त रोड

स्थायी पता :

ग्राम : बावन बीघा

पो० : रमना, जिला मुजफ्फरपुर (बिहार)

❁ श्री राम प्रसाद पाण्डेय

उम्र ५० गोत्र काश्यप

पिता श्री श्रीराम पाण्डेय

वर्तमान पता :

४१, भैरव दत्त लेन, हवड़ा

दूरभाष : ६५६७८४

स्थायी पता :

ग्राम+पो० सातो सेमरी जि० बक्सर, बिहार

❁ श्री बिजय कुमार सिंह

उम्र ४० गोत्र वत्स

पिता श्री शत्रुघन प्रसाद सिंह

वर्तमान पता : ३/४, चिन्तामनी दे रोड

दूरभाष : ६८-८३७६

स्थायी पता :

ग्राम : पाबरा, पो० मंझौल, जिला बेगुसराय

❁ श्री सुरेश पाण्डे

उम्र ५५ गोत्र पराशर

पिता स्व० आदित्य पाण्डे

वर्तमान पता :

५३२, जी० टी० रोड, हवड़ा

दूरभाष : ६०५५२८

स्थायी पता :

ग्राम+पो० नैनीजोड़, जिला बक्सर (बिहार)

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ श्री अभिमन्यु कुमार राय
उम्र ४५ गोत्र भारद्वाज
वर्तमान पता :
५५२, जी० टी० रोड, हवड़ा

❁ श्री जगन्नाथ राय
उम्र ४५ गोत्र काश्यप
पिता श्रीश चन्द्र राय
वर्तमान पता :
२४, रोजमेरी लेन, हवड़ा
दूरभाष : ६०१४७२
स्थायी पता :
ग्राम+पो० बहोरनपुर, जि० भोजपुर (बिहार)

❁ श्री सूर्यनारायण राय
उम्र : ६० गोत्र : सावर्ण
पिता—स्व० रामजी राय
वर्तमान पत्ता : पो० : जलालगढ़
जि० : पूर्णिया (बिहार)
स्थायी पत्ता : उपरोक्त

❁ श्री रामाकान्त राय शर्मा
उम्र : ४८ गोत्र : भारद्वाज
पिता—स्व० श्री जगदीश नारायण शर्मा
वर्तमान पता : रीलायंस डाई एण्ड केमिकल
क०, दूरभाष : ३८१२५४
स्थायी पत्ता : ग्रा+पो० : पटकनियाँ
जि० : गाजीपुर (उ० प्र०)

❁ श्री जगदीश राय
उम्र : ५० गोत्र : काश्यप
पिता—दीनानाथ राय
वर्तमान पत्ता : २१/१, रामलाल मुखर्जी लेन
दूरभाष : ३०४२४३, ६५३५६८
स्थायी पत्ता : ग्रा+पो० : नारायणपुर
जि० : बलिया (उ० प्र०)

❁ श्री अमृतेश कुमार राम
उम्र : ३६ गोत्र : काश्यप
पिता—व्रज बिहारी राय
वर्तमान पत्ता : ब्रह्मदेव ग्रंथागार
३५२, जी० टी० रोड, नार्थ सलकिया, हवड़ा
स्थायी पत्ता : ग्रा+पो० : गोडडर
जि० : गाजीपुर (उ० प्र०)

❁ श्री नन्दकिशोर राय
उम्र : ३६ गोत्र : पराशर
पिता—श्री परमा राय
वर्तमान पत्ता : ४८, डबसन रोड, हवड़ा
दूरभाष : ६००१४०
स्थायी पत्ता : ग्रा+पो० : लौंवा
जि० : छपरा (बिहार)

❁ डा० अरुण कुमार राय
उम्र : ३५ गोत्र : सांकृत
पिता—श्री संकठा प्र० राय
वर्तमान पत्ता : ४९/१, डबसन रोड, हवड़ा
दूरभाष : ६००१३७
स्थायी पत्ता : ग्रा+पो० : डेढ़गावाँ
जि० : गाजीपुर (उ० प्र०)

❁ श्री अनील पाण्डेय
उम्र ३० गोत्र काश्यप
पिता श्री दीनानाथ पाण्डेय
वर्तमान पता :
६, वाट किंग्स लेन, हवड़ा
दूरभाष : ६०४३०१
स्थायी पत्ता :
ग्राम+पो० : सातो सेमरी,
जिला बक्सर, बिहार

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

❁ श्री सुभाषचन्द्र राय

उम्र : ४८ गोत्र : वत्स

पिता—श्री मारकण्डेय राय

वर्तमान पत्ता : ४१८/३, जी० टी० रोड, हवड़ा

स्थायी पत्ता : ग्रा०+पो० : सैदावाद,

जि० : गाजीपुर (उ० प्र०)

❁ श्री दीनानाथ पाण्डेय

उम्र : ४८ गोत्र : काश्यप

पिता स्व० भगवान पाण्डेय

वर्तमान पता :

६, वाट किंग्स लेन, हवड़ा

दूरभाष : ६८४३०१, ६०१७३३

स्थायी पता :

ग्राम+पो० : सातो सेमरी जिला बक्सर

❁ श्री राज नारायण राय

उम्र गोत्र काश्यप

पिता स्व० सिद्ध नाथ राय

वर्तमान पता :

२४, रोजमेरी लेन, हवड़ा

स्थायी पता :

ग्राम+पो० बहरोनपुर, जिला भोजपुर (बिहार)

❁ श्री रमा शंकर राय

उम्र ४४ गोत्र काश्यप

पिता श्री चन्द्र देव राय

वर्तमान पता :

२४, रोजमेरी लेन, हवड़ा

स्थायी पता : ग्राम गड़ेरिया

पो० लालगंज, जिला बलिया (उ० प्र०)

❁ श्री अनील कुमार तिवारी

उम्र २६ गोत्र शाण्डिल्य

पिता श्री मदन प्रसाद तिवारी

वर्तमान पता :

जी० टी० रोड, हवड़ा

स्थायी पता :

ग्राम+पो० सूर्यभानपुर, जि० बलिया (उ० प्र०)

❁ श्री महेश कुमार शर्मा

उम्र ४० गोत्र

पिता सियाराम शर्मा

वर्तमान पता :

३, जानकी दास लेन दूरभाष : ३६८३४२

स्थायी पता : ग्राम देवथरा

पो० धनजोवा, जिला जहानाबाद, बिहार

❁ श्री काशी प्रसाद राय

उम्र ४२ गोत्र भारद्वाज

पिता यदुवंश राय

वर्तमान पता :

नूरमल लोहिया लेन, कलकत्ता

दूरभाष : ३८६५१२/६०६८१६

स्थायी पता :

ग्राम बरसरूआ, पो० बहादुरपुर,

जिला आजमगढ़ (उ० प्र०)

आजीवन सदस्य १९९१ से

❁ कपीन्द्र चौधरी

१३/पी, रामा नाथ पाल रोड, कलकत्ता-२३

❁ गगनदेव सिंह

शिव शक्ति टिम्बर, १७, ओरफन गंज रोड

कलकत्ता-२३

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

With best compliments from :

ORISSA CEMENT LIMITED

RAJGANGPUR-770017

- OCL' - a name cemented to Quality

Leading manufacturers of wide spectrum of highly sophisticated world-class REFRACTORIES

&

Top quality for years OCL's

KONARK BRAND DALMIA CEMENT

(IS : 269, 455 & IRST 40)

For quality and satisfactory performance insist on OCL Products,

With best compliments from :

Gopal Travels

20, BRITISH INDIA STREET, CALCUTTA-700 001

DIAL : 28-1270

Contral for cas hire A. C. & Non A. C.

With best compliments from :

Phone : 39-

Sasta Pustak Bhawan

(EDUCATIONAL PUBLISHER)

261, RABINDRA SARANI,
CALCUTTA-700 007

Space donated by :

A
WELL
WISHER

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi

Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS

CC0. In Public Domain. Sri Sri Anandamayee Ashram Collection, Varanasi